राष्ट्रीय मासिक
मूल्य: 40/-

रफ्तार मीडिया

वर्ष : 04 | अंक 30
मार्च, 2026

युद्ध का बढ़ता संकट...
भारतीय कृषि की परीक्षा की घड़ी

भारतीय मखाना
तालाबों में उगता सुपरफूड

टोक्यो के बाद असली परीक्षा
निवेश की कसौटी पर उत्तर प्रदेश

बढ़ता पारा, घटती उम्मीदें
रबी फसलों पर मौसम का दबाव

JHAHIN01072

4 साल
बेमिसाल
उत्तराखण्ड
में
सशक्त भू-कानून
हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जनपद को छोड़कर उत्तराखण्ड के अन्य 11 पर्वतीय जिलों में दूसरे राज्यों के लोगों को कृषि भूमि खरीदने की अनुमति नहीं
पर्वतीय जिलों में कृषि और उद्यान भूमि की अनियंत्रित बिक्री पर लगी रोक
डेमोग्राफी चेंज की कोशिशों पर लगाम, साथ ही देवभूमि की सनातन संस्कृति और पारंपरिक सामाजिक पहचान भी होगी मजबूत
उत्तराखण्ड
भू-कानून
सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड
@DIPR_UK
UttarakhandDIPR
www.uttarainformation.gov.in

PAGE 04

रफ्तार मीडिया कवर स्टोरी

प्रबंध संपादक | गौरव कुमार

डिप्टी एडिटर | अरविंद कुमार

संपादकीय कार्यालय
उत्तम निवास, हरमू हाउसिंग कॉलोनी,नियर अरगोड़ा थाना,हरमू,रांची. पिन-834002
ईमेल articleraftaar@gmail.com
विज्ञापन: 9709289751

पिछला अंक

मुद्रक : प्रकाशक एवम स्वतत्वाधिकारी गौरव कुमार के पक्ष में शिवसाई पब्लिकेशन प्रा.लिमिटेड, काठीटांड़,नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप,पोस्ट एवं थाना रातू। रांची 835222 झारखंड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

आयात की आंच

खाड़ी में बारूद की गूँज: क्या फिर 'महंगी' होगी भारत की थाली?

युद्ध किसी भी देश के बीच हो, हार हमेशा आम आदमी की ही होती है। खाड़ी की आग अगर बढ़ती है, तो भारत के लिए यह दोहरा संकट होगा। एक तरफ बढ़ती महंगाई का बोझ और दूसरी तरफ किसान की गिरती आय। वक्त की मांग है कि हम अपनी आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित करें और वैकल्पिक बाजारों की तलाश करें।

जब मीलों दूर खाड़ी देशों के आसमान में मिसाइलें गरजती हैं और युद्ध के नगाड़े बजते हैं, तो उसकी गूँज केवल कूटनीतिक गलियारों तक सीमित नहीं रहती। वह गूँज भारत के आम आदमी की रसोई के बजट और खेत की पगडंडियों पर खड़े किसानों के चेहरे की लकीरों तक भी पहुँचती है। पश्चिम एशिया में गहराता युद्ध का संकट भारत के लिए केवल एक विदेशी खबर नहीं है; यह हमारे एलपीजी, कच्चे तेल व खाद्य तेल के आयात और चावल के निर्यात की रीढ़ पर सीधा हमला है। भारत अपनी खाद्य तेल की जरूरतों का लगभग 60% से 65% हिस्सा दूसरे देशों से मंगाता है। इसमें पाम तेल, सोयाबीन और सूरजमुखी तेल की बड़ी खेप शामिल है। युद्ध की स्थिति में सबसे पहली चोट सप्लाई चेन पर पड़ती है। खाड़ी क्षेत्र के समुद्री रास्ते, जैसे 'स्ट्रेट ऑफ होर्मुज' या 'लाल सागर', वैश्विक व्यापार के मुख्य द्वार हैं। जैसे ही युद्ध की आहट होती है, इन रास्तों से गुजरने वाले मालवाहक जहाजों का 'इंश्योरेंस' (बीमा) महंगा हो जाता है। जहाज कंपनियां जोखिम बढ़ने के कारण अपना 'फ्रेट' (मालभाड़ा) बढ़ा देती हैं। इसका सीधा असर यह होता है कि पोर्ट पर पहुँचने वाला कच्चा तेल और खाद्य तेल पहले से 20% से 30% महंगा हो जाता है। आम नागरिक के लिए इसका मतलब है कि उसकी थाली से स्वाद और सेहत, दोनों महंगी होने वाली हैं। जब सरसों या रिफाइंड तेल का डिब्बा 150 रुपये से चढ़कर 200 रुपये की ओर बढ़ता है, तो वह आम आदमी की बचत और पोषण पर सीधा प्रहार होता है।

अरविंद कुमार
डिप्टी एडिटर

भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल निर्यातक है। हमारे देश का बासमती चावल, जिसे 'सफेद सोना' कहा जाता है, उसका 80% से ज्यादा निर्यात सऊदी अरब, ईरान, इराक और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों को होता है। ये देश न केवल हमारे बड़े खरीदार हैं, बल्कि भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण स्तंभ भी हैं। युद्ध शुरू होते ही इन देशों की प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। वे विलासिता वाले बासमती चावल के बजाय युद्ध की तैयारी, हथियार और बुनियादी दवाओं पर खर्च बढ़ाने लगते हैं। जब निर्यात रुकता है, तो बासमती का स्टॉक स्थानीय मंडियों में जमा होने लगता है। आपूर्ति बढ़ने और मांग घटने से बासमती के दाम धड़ाम से गिरते हैं, जिसका सीधा नुकसान उस किसान को होता है जिसने कड़ी धूप में पसीना बहाकर फसल तैयार की थी। खाड़ी युद्ध का मतलब है कच्चे तेल (Crude Oil) की कीमतों में उछाल। केंद्र सरकार के तमाम प्रयासों के बावजूद देश में एलपीजी संकट स्पष्ट दिख रहा है। पेट्रोल डीजल के दाम स्थिर तो हैं, पर कब तक? ये सवाल आम लोगों के मानस पटल पर कौंध रहा है। युद्ध संकट के कारण देश को कई संकटों का सामना करना पड़ रहा है।

यह संकट हमें एक बड़ा सबक सिखाता है-खाद्य आत्मनिर्भरता की। भारत ने गेहूं और धान में तो आत्मनिर्भरता हासिल कर ली है, लेकिन खाद्य तेलों के मामले में हम आज भी विदेशों के मोहताज हैं। सरकार को 'नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल्स' जैसी योजनाओं को और तेज करते हुए राइस ब्रान आयल का उत्पादन बढ़ाना होगा और लोगों को अधिक से अधिक इसके इस्तेमाल को लेकर जागरूक करना होगा ताकि भविष्य में किसी विदेशी युद्ध की आंच हमारी रसोई तक न पहुँच सके।

कॉर्पोरेट एवं व्यावसायिक कार्यालय : अजीत कुमार,8/18 सेकेंड फ्लोर,नेहरु नगर, नई दिल्ली 110065 ईमेल raftaarhr@gmail.com CONTACT NO. 6203592707

मुंबई कार्यालय : चंद्रभान विश्वनाथ मौर्य,रुम नंबर A56/3/5 संत रोहिदास मार्ग खंबादेव नगर धारावी मुंबई- 400017

राजकुमार,एस.सी.एफ. 254, प्रथम मंज़िल, सेक्टर 16, पंचकूला (हरियाणा) | स्वरूप भट्टाचार्जी,रफ्तार मीडिया CG-MP H-14 , ढेबर पिंक सिटी, गायत्री नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़ | शाहिद सिद्दीकी, 21, बीसी गोमती रीजेंसी, साड़ी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ |रवि नंदन सिंह (स्टेट हेड), 200/1D,डीजी मिश्रा पथ,न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी पटना (बिहार) 800013 |

"समुद्री रास्तों पर संकट का असर केवल ऊर्जा बाजार तक सीमित नहीं रहता—यह अंतत: किसानों की लागत और खाद्य कीमतों तक पहुंचता है।"

कवर स्टोरी

युद्ध की आंच में वैश्विक कृषि व्यापार
होरमुज से स्वेज तक संकट

क्या खाड़ी युद्ध से भारत के किसान, खाद्य तेल और चावल निर्यात पर पड़ेगा बड़ा असर?

रफ्तार || संवाददता

महज 33 किलोमीटर चौड़ा एक समुद्री रास्ता - लेकिन उस पर टिकी है दुनिया की ऊर्जा और खाद्य आपूर्ति की बड़ी कहानी। अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते सैन्य टकराव ने होरमुज जलडमरूमध्य को वैश्विक चिंता का केंद्र बना दिया है। इसी मार्ग से दुनिया के करीब 20 प्रतिशत तेल के साथ-साथ अनाज, खाद्य तेल और उर्वरकों का बड़ा हिस्सा गुजरता है। युद्ध का खतरा बढ़ते ही जहाजों के मार्ग बदल रहे हैं, बीमा महंगा हो रहा है और समुद्री व्यापार की लागत बढ़ने लगी है। इसका असर अब वैश्विक कृषि बाजार तक पहुंचने लगा है - और भारत, जिसकी खाद्य तेल जरूरतें आयात पर और बासमती निर्यात खाड़ी बाजारों पर निर्भर हैं, इस भू-राजनीतिक झटके से अछूता नहीं रह सकता।

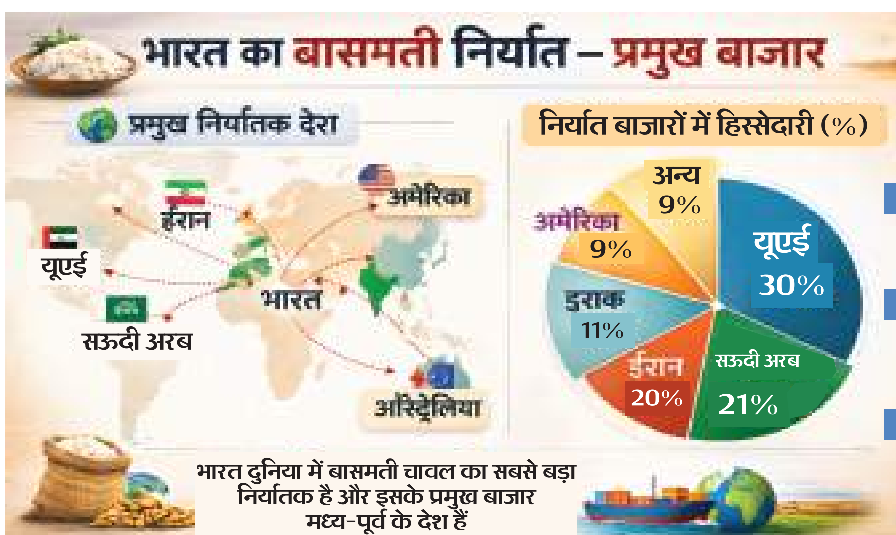

कुल बासमती निर्यात (2024-25) : लगभग 60.65 लाख टन
कुल मूल्य : लगभग 5.9 अरब डॉलर, मध्य-पूर्व की हिस्सेदारी : करीब 65–70%

होरमुज जलडमरूमध्य क्यों महत्वपूर्ण

- दुनिया के लगभग 20-25% कच्चे तेल का व्यापार
- **वैश्विक एलएनजी व्यापार का बड़ा हिस्सा**
- खाड़ी देशों से निकलने वाले उर्वरकों और पेट्रोकेमिकल उत्पादों का प्रमुख मार्ग
- **एशिया की ऊर्जा आपूर्ति की जीवनरेखा**

समुद्र में तनाव, खेतों में असर

भू-राजनीतिक संघर्षों का असर अक्सर युद्ध के मैदानों से बहुत दूर तक जाता है। पिछले दशक में यह बात कई बार साबित हुई है। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान काला सागर क्षेत्र में बंदरगाह बंद होने से वैश्विक गेहूं और मक्का बाजार बुरी तरह प्रभावित हुआ था। अब खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते सैन्य तनाव ने एक बार फिर यह दिखा दिया है कि समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा वैश्विक खाद्य व्यवस्था के लिए कितनी महत्वपूर्ण है। दुनिया के लगभग 90 प्रतिशत कृषि जिंसों का अंतरराष्ट्रीय व्यापार समुद्री मार्गों के जरिए होता है। इसलिए जब भी समुद्र में तनाव बढ़ता है, उसका असर अंतत: खेत, मंडी और उपभोक्ता की थाली तक पहुंचता है। इस बार भी यही होता दिखाई दे रहा है। होरमुज जलडमरूमध्य में बढ़ते जोखिम के कारण शिपिंग कंपनियां जहाजों के मार्ग बदल रही हैं। बीमा कंपनियां युद्ध-जोखिम कवर सीमित कर रही हैं। और समुद्री माल ढुलाई की लागत तेजी से बढ़ने लगी है। इसका असर वैश्विक कृषि व्यापार पर पड़ना लगभग तय है।

कवर स्टोरी

होरमुज: दुनिया की ऊर्जा और व्यापार की जीवनरेखा

ईरान और ओमान के बीच स्थित होरमुज जलडमरूमध्य भले ही सबसे संकरी जगह पर केवल लगभग 33 किलोमीटर चौड़ा हो, लेकिन वैश्विक ऊर्जा और व्यापार के लिहाज से इसकी रणनीतिक अहमियत अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। होरमुज जलडमरूमध्य दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा गलियारों में से एक है। 2024 में इस मार्ग से प्रतिदिन लगभग 20-21 मिलियन बैरल तेल गुजरा, जो वैश्विक पेट्रोलियम उपभोग का करीब 20 प्रतिशत है और समुद्री तेल व्यापार का एक-चौथाई से अधिक हिस्सा इसी रास्ते से गुजरता है। इस तेल का अधिकांश भाग एशियाई देशों - भारत, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया - तक पहुंचता है। ऊर्जा के अलावा यह मार्ग कई अन्य वस्तुओं के व्यापार के लिए भी महत्वपूर्ण है। खाड़ी क्षेत्र से निकलने वाले पेट्रोकेमिकल उत्पाद, उर्वरक, प्लास्टिक कच्चा माल और कई औद्योगिक रसायन इसी रास्ते से वैश्विक बाजारों तक पहुंचते हैं। इसीलिए जब इस क्षेत्र में सैन्य तनाव बढ़ता है तो वैश्विक बाजारों में अस्थिरता पैदा होना लगभग तय होता है।

बंदरगाहों पर अटका चावल

भारत लगातार दुनिया का सबसे बड़ा चावल निर्यातक बना हुआ है। 2024-25 में देश ने लगभग 20 मिलियन टन चावल निर्यात किया, जिसका कुल मूल्य लगभग 13 अरब डॉलर रहा। निर्यात उद्योग से जुड़े सूत्रों के अनुसार भारत के विभिन्न बंदरगाहों पर लगभग डेढ़ से दो लाख टन बासमती चावल निर्यात के इंतजार में अटका हुआ है। लगभग इतनी ही मात्रा समुद्री मार्ग में ट्रांजिट में बताई जा रही है। यह समय भी निर्यात के लिहाज से महत्वपूर्ण है क्योंकि रमजान के दौरान खाड़ी देशों में चावल की मांग बढ़ जाती है। यदि निर्यात में देरी होती है तो भारतीय निर्यातकों को नुकसान उठाना पड़ सकता है और घरेलू बाजार में कीमतों पर दबाव आ सकता है।

समुद्री मार्गों पर संकट और कृषि व्यापार

कृषि उत्पादन जमीन पर होता है लेकिन उसका व्यापार समुद्र के रास्ते होता है। दुनिया के अधिकांश कृषि उत्पाद - अनाज, तिलहन, चीनी, पशु आहार - समुद्री मार्गों से अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचते हैं। इस व्यवस्था में दो समुद्री मार्ग अत्यंत महत्वपूर्ण हैं - स्वेज नहर और होरमुज जलडमरूमध्य। स्वेज नहर एशिया और यूरोप के बीच सबसे छोटा समुद्री मार्ग है। वैश्विक समुद्री अनाज और तिलहन व्यापार का लगभग 13 से 15 प्रतिशत हिस्सा इसी रास्ते से गुजरता है। समुद्री उर्वरक निर्यात का भी लगभग पांचवां हिस्सा इसी मार्ग पर निर्भर है। दूसरी ओर होरमुज जलडमरूमध्य खाड़ी क्षेत्र से निकलने वाले उर्वरकों और कृषि पोषक तत्वों के परिवहन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इस मार्ग में व्यवधान आता है तो वैश्विक कृषि इनपुट आपूर्ति पर असर पड़ सकता है।

उर्वरक बाजार पर मंडराता खतरा

कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि खाड़ी संकट का सबसे बड़ा असर उर्वरक बाजार पर पड़ सकता है। खाड़ी क्षेत्र प्राकृतिक गैस आधारित उर्वरक उद्योग का एक बड़ा केंद्र है। सऊदी अरब, कतर और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश बड़ी मात्रा में यूरिया और अमोनिया का उत्पादन करते हैं। वैश्विक यूरिया व्यापार का एक बड़ा हिस्सा और सल्फर की बड़ी मात्रा इसी क्षेत्र से निकलती है। सल्फर फॉस्फेट उर्वरकों का महत्वपूर्ण घटक है। इसलिए यदि इस क्षेत्र से आपूर्ति बाधित होती है तो वैश्विक बाजार में उर्वरक कीमतें तेजी से बढ़ सकती हैं। भारत के लिए यह स्थिति चिंता का विषय है क्योंकि भारत अपनी उर्वरक जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा आयात करता है। यदि वैश्विक कीमतें बढ़ती हैं तो सरकार पर सब्सिडी का बोझ बढ़ सकता है या किसानों को अधिक कीमत चुकानी पड़ सकती है।

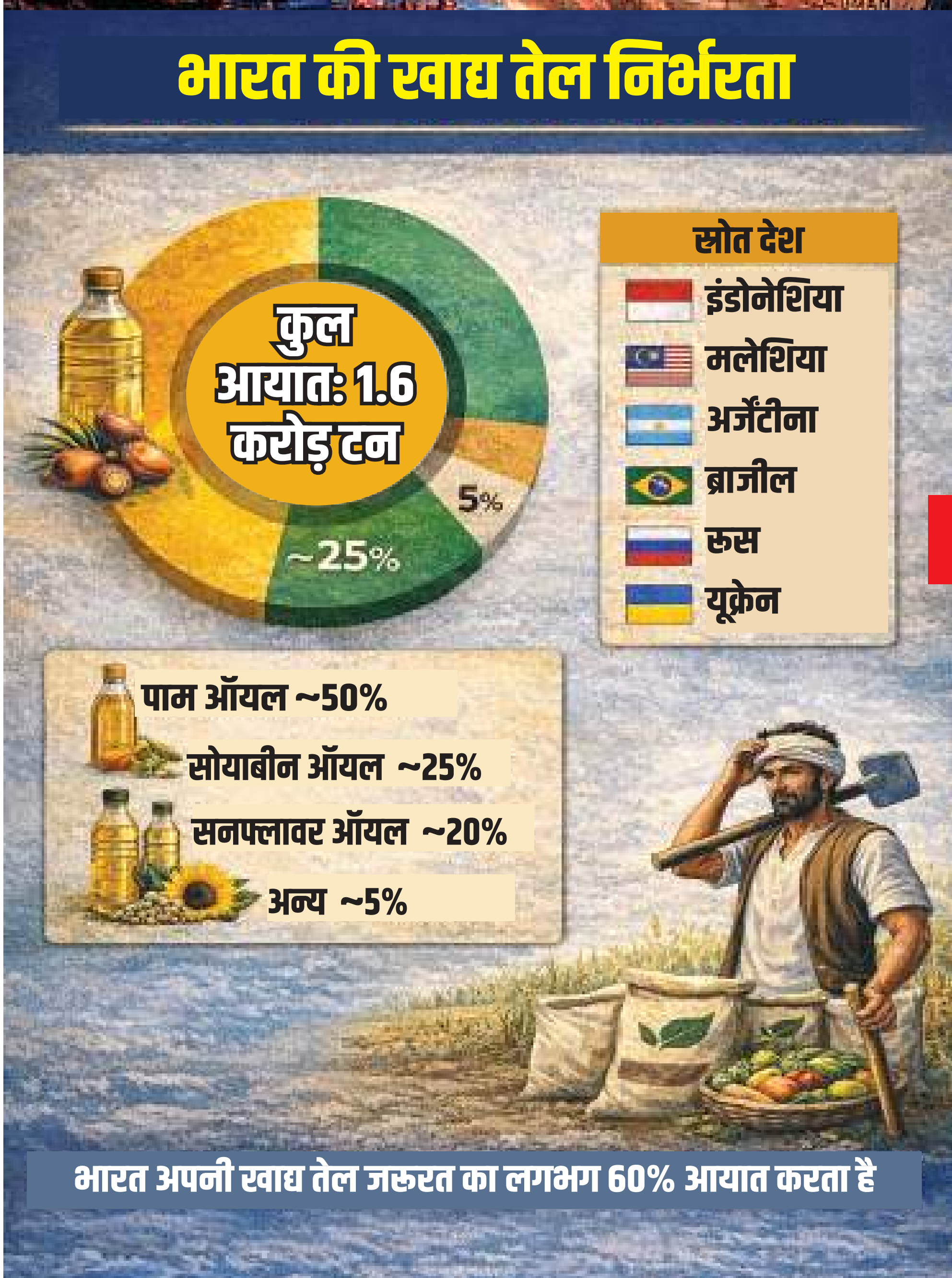

भारत का खाद्य तेल आयात

कुल आयात	आयात निर्भरता	प्रमुख स्रोत
लगभग 1.6 करोड़ टन प्रति वर्ष	लगभग 60 फीसदी	इंडोनेशिया, मलेशिया, अर्जेंटीना, ब्राजील, रूस और यूक्रेन

शिपिंग और बीमा संकट

सैन्य तनाव बढ़ने का पहला असर समुद्री बीमा बाजार पर दिखाई देता है। जहाजों के लिए युद्ध जोखिम बीमा अलग से खरीदा जाता है और उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में इसका प्रीमियम तेजी से बढ़ जाता है। हालिया संकट में खाड़ी क्षेत्र में जाने वाले जहाजों के लिए बीमा प्रीमियम में तेज वृद्धि देखी जा रही है। कई बीमा कंपनियों ने इस क्षेत्र में जोखिम कवर सीमित कर दिया है। इसके कारण जहाज मालिकों को अधिक प्रीमियम देना पड़ रहा है। साथ ही कई शिपिंग कंपनियों ने खाड़ी क्षेत्र के लिए अतिरिक्त शुल्क लागू कर दिया है। कुछ मामलों में यह शुल्क 2000 से 4000 डॉलर प्रति कंटेनर तक बताया जा रहा है। इससे कृषि जिंसों की ढुलाई लागत बढ़ने लगी है। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो वैश्विक अनाज और खाद्य तेल बाजार में अस्थिरता बढ़ सकती है।

भारत के लिए क्या मायने?

फिलहाल सबसे बड़ा सवाल यही है कि यह संकट कितने समय तक चलता है। यदि स्थिति जल्दी सामान्य हो जाती है तो वैश्विक व्यापार भी धीरे-धीरे पटरी पर लौट सकता है। लेकिन यदि समुद्री मार्ग लंबे समय तक बाधित रहते हैं तो उर्वरक कीमतों में वृद्धि, खाद्य तेल की महंगाई और कृषि जिंसों के बाजार में अस्थिरता बढ़ सकती है। भारत के लिए यह स्थिति एक चेतावनी भी है और एक अवसर भी। चेतावनी इसलिए कि ग्लोबल सप्लाई चेन पर अधिक निर्भरता जोखिम पैदा करती है। अवसर इसलिए कि घरेलू उत्पादन बढ़ाने और तेल बीज मिशन को मजबूत करने की दिशा में नए कदम उठाए जा सकते हैं। दुनिया की राजनीति भले युद्ध के मैदानों में तय हो रही हो, लेकिन उसकी असली कीमत अक्सर खेतों में चुकानी पड़ती है। होरमुज में उठी हलचल आने वाले महीनों में यह तय कर सकती है कि वैश्विक खाद्य बाजार किस दिशा में जाएंगे - और भारतीय किसान को इससे कितना लाभ या नुकसान होगा।

कवर स्टोरी

वैश्विक अनाज बाजार में अनिश्चितता

मध्य-पूर्व दुनिया का सबसे बड़ा खाद्यान्न आयातक क्षेत्र है। सीमित कृषि भूमि और शुष्क जलवायु के कारण इस क्षेत्र के कई देश अपनी खाद्य जरूरतों के लिए आयात पर निर्भर हैं। हर साल करोड़ों टन गेहूं, चावल और मक्का इस क्षेत्र में आयात किया जाता है। यदि समुद्री मार्ग बाधित होते हैं तो इन देशों में आपूर्ति संकट पैदा हो सकता है। इससे वैश्विक बाजार में कीमतों में तेजी और अस्थिरता दोनों बढ़ सकती हैं। मक्का बाजार की नजर फिलहाल ब्राजील के निर्यात कार्यक्रम पर है क्योंकि ईरान ब्राजील के मक्का का एक प्रमुख खरीदार रहा है। यदि व्यापार में व्यवधान आता है तो वैश्विक बाजार में संतुलन बिगड़ सकता है।

भारत का बासमती निर्यात (2024-25)

कुल निर्यात	कुल मूल्य: लगभग	मध्य-पूर्व की हिस्सेदारी
60.65 लाख टन	5.9 अरब डॉलर	70% लगभग

ईरान को निर्यात: लगभग 6–7 लाख टन

युद्ध का कृषि पर संभावित प्रभाव

युद्ध - शिपिंग संकट - कृषि बाजार

भू-राजनीतिक तनाव का असर सीधे कृषि लागत पर।

खाद्य तेल बाजार: भारत की सबसे बड़ी चिंता

भारत अपनी खाद्य तेल जरूरतों का बड़ा हिस्सा - कुल जरूरत का लगभग 60 प्रतिशत - आयात से पूरा करता है। 2024-25 में देश ने लगभग 1.6 करोड़ टन खाद्य तेल आयात किया, जिसकी कुल कीमत करीब ₹1.6 लाख करोड़ रही। इसमें पाम ऑयल, सोयाबीन ऑयल और सूरजमुखी तेल प्रमुख हैं। यदि समुद्री मार्ग बाधित होते हैं और जहाजों को लंबा रास्ता लेना पड़ता है तो आयात लागत बढ़ सकती है। उद्योग के अनुमान के अनुसार वैकल्पिक मार्ग अपनाने पर सोया और सूरजमुखी तेल की कीमतों में लगभग 50 डॉलर प्रति टन तक की वृद्धि हो सकती है।

सरसों किसानों के लिए अवसर

हालांकि संकट हमेशा केवल नुकसान नहीं लाता। यदि आयातित खाद्य तेल महंगे होते हैं तो घरेलू तेल बीजों की मांग बढ़ सकती है। विशेष रूप से सरसों के किसानों को इसका फायदा मिल सकता है। भारत में इस समय सरसों की नई फसल बाजार में आने वाली है। यदि वैश्विक कीमतों में तेजी आती है तो घरेलू बाजार में सरसों की कीमतों को समर्थन मिल सकता है। इससे किसानों को बेहतर दाम मिलने की संभावना है।

ग्लोबल ट्रेड का समुद्री चोक-पॉइंट

होरमुज: दुनिया का सबसे संवेदनशील समुद्री रास्ता

छोटा समुद्री रास्ता, लेकिन वैश्विक ऊर्जा और कृषि व्यापार की धुरी।

कवर स्टोरी

वैश्विक कृषि व्यापार का नया भू-राजनीतिक दौर

पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक कृषि व्यापार का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। पहले कृषि बाजार मुख्य रूप से मौसम, उत्पादन और मांग-आपूर्ति पर निर्भर होते थे। लेकिन अब भू-राजनीतिक तनाव भी एक महत्वपूर्ण कारक बन चुका है। रूस-यूक्रेन युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया था कि युद्ध का असर वैश्विक खाद्य बाजारों तक पहुंच सकता है। अब खाड़ी संकट ने एक बार फिर यह दिखा दिया है कि समुद्री सुरक्षा और वैश्विक राजनीति कृषि अर्थव्यवस्था से गहराई से जुड़ी हुई है।

ऊर्जा कीमतें और कृषि लागत

होरमुज संकट का एक और बड़ा असर ऊर्जा कीमतों से जुड़ा है। यदि इस मार्ग से तेल की आपूर्ति प्रभावित होती है तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ सकती हैं। तेल महंगा होने का असर कृषि क्षेत्र पर कई स्तरों पर पड़ता है। ट्रांसपोर्ट लागत बढ़ती है, उर्वरक महंगे होते हैं और सिंचाई लागत भी बढ़ जाती है। इसका सीधा असर कृषि उत्पादन लागत पर पड़ता है।

भारत के बासमती निर्यात पर पहला असर

इस युद्ध का सबसे स्पष्ट असर भारत के बासमती चावल निर्यात पर दिखाई देने लगा है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा बासमती निर्यातक है और मध्य-पूर्व इसके प्रमुख बाजारों में शामिल है। वित्त वर्ष 2024-25 में देश ने लगभग 60.65 लाख टन बासमती चावल निर्यात किया, जिसकी कीमत करीब ₹50,000 करोड़ से अधिक रही। इसके प्रमुख बाजार मध्य-पूर्व के देश हैं, जिनमें सऊदी अरब, इराक, ईरान और संयुक्त अरब अमीरात प्रमुख हैं। लेकिन युद्ध के कारण यह व्यापार फिलहाल गंभीर अनिश्चितता में है।

टिकाउ कृषि के लिए नवाचारी प्रौद्योगिकियां

-डॉ.शशि भूषण समदर्शी
राज्य विपणन प्रबंधक, इफको, झारखंड

सतत हरित कृषि के लिए जलवायु लचीली कृषि पर्यावरण प्रोद्योगिकियां अपनाने के साथ-साथ पर्यावरण हितैषी फसल पोषण पद्धति अपनाना अब समय की माँग हो गयी है। गुणवत्तायुक्त पोषक तत्व संवर्धित कार्बनिक खादों (कम्पोस्ट, हरीखाद, फसल अवशेष आदि) के साथ ही जैव उर्वरकों और नवाचारी स्मार्ट उर्वरकों (नैनो यूरिया, नैनो डीएपी, जल विलेय उर्वरक फसल वृद्धि उत्तेजक, मृदा के भौतिक और जैव गुणों को गुणवता को बढ़ाने वाले सागरिका जैसे समुद्री उत्पाद आदि) के संयुक्त और कारगर प्रयोग को बढ़ाना दिया जाए। जैसा कि अब हम अनुभव करने लगे हैं कि आधुनिक कृषि में रसायनों के अनवरत बढ़ते प्रयोग के कारण पर्यावरण प्रदुषण और जलवायु परिवर्तन की वर्ष दर वर्ष बढ़ती समस्या के कारण खेती प्रभावित हो रही है। मौसम की ऐसी अनिश्चिता से फसलों की उपज और किसान की आजिविका कुप्रभावित हो रही है। खेती के बढ़ते खर्च और किसानों को कड़ी मेहनत के बावजूद भी कृषि अनिश्चित लाभ- हानि के दौर से गुजर रही है।

आवश्यकता इस बात की है कि आने वाले वर्षों में यूरिया, डीएपी जैसे पर्यावरण पर दुष्प्रभाव डालने वाले रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग यथासंभव कम से कम हो। हमें समेकित पोषक तत्व प्रबंधन द्वारा रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम करते हुए जलवायु परिवर्तन को कम कर सकते हैं। साथ ही हमारी भोजन, पोषण और पर्यावरण सुरक्षा भी बरकरार रहे। टिकाउ खेती के लिए जलवायु लचीली कृषि प्रोद्योगिकियां अपनाने के साथ-साथ पर्यावरण हितैषी फसल पद्धति अपनाना अब समय की मांग हो गयी है। गुणवत्तायुक्त पोषक तत्व संवर्धित कार्बनिक खादों के साथ- साथ जैव उर्वरकों और नवाचारी स्मार्ट उर्वरकों के संयुक्त और कारगर प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए।

टिकाउ खेती के लिए नवाचारी स्मार्ट खादें और उर्वरकः फसलों के लिए आवश्यक अधिकांश पोषक तत्वों की आपूर्ति रासायनिक उर्वरकों द्वारा की जा रही है। पारंपरिक उर्वरको की पोषक तत्व उपयोग दक्षता बहुत कम है। फसल पोषण हेतु पारंपरिक उर्वरकों जैसे यूरिया - 30-40% फास्फेटिक उर्वरक (डीएपी एवं अन्य) 16-20% तक पौधे अवशोषण करतें है। फसलों का सर्वोत्तम पोषक तत्व प्रबंधन दुनिया भर में एक बड़ी चुनौती के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि यह मुख्य रूप से रासायनिक उर्वरकों पर आधारित है। पारंपरिक उर्वरक (यूरिया एवं डीएपी) न केवल उत्पादक के लिए महगें हैं. बल्कि मनुष्यों एवं पर्यावरण के लिए भी हानिकारक साबित हो रहें हैं। अत: विशेष दक्षता वाले पर्यावरण के अनुकूल नैनो उर्वरकों का प्रयोग आवश्यक एवं महत्वपूर्ण कदम है। हम नवाचार नई प्रौद्योगिकी (नैनो टेक्नोलॉजी) से बनी खादों और स्मार्ट उर्वरकों का उल्लेख कर रहें हैं, जो उर्वरक उपयोग दक्षता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

टिकाउ खेती के लिए नवाचारी स्मार्ट खादें और उर्वरक: फसलों के लिए आवश्यक अधिकांश पोषक तत्वों की आपूर्ति रासायनिक उर्वरकों द्वारा की जा रही है। पारंपरिक उर्वरको की पोषक तत्व उपयोग दक्षता बहुत कम है।

नैनो यूरिया प्लस का पौधों के पत्तियों पर छिड़काव करने पर नाइट्रोजन की हानि भी रूक जाता है। नैनो यूरिया प्लस 4-5 एमएल प्रतिलिटर पानी के साथ घोल बनाकर पौधे के क्रांतिक अवस्था (कल्ले/शाखा बनने) या 10-12 पत्ते आने पर प्रथम छिड़काव तथा फूल आने के एक सप्ताह पहले छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

नैनों उर्वरक : विश्व की सबसे बड़ी सहकारी संस्था इफको द्वारा कलोल, गुजरात में अत्याधुनिक नैनो बायो टेक्नोलाजी रिसर्च सेंटर (एन.वी.आर. सी.) द्वारा नैनो प्रेद्योगिकी आधारित उत्पादों जैसे- नैनो यूरिया प्लस, नैनो डीएपी, नैनो जिंक एवं नैनों कॉपर को पूर्णतया स्वदेशी तकनीकी से विकसित किया गया है। नैनो तकनीक परंपरागत रासायनिक उर्वरकों का आशाजनक विकल्प के रूप में उभर रही है। खाद्य फसलों में पोषक तत्वों की कमी मानव स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही है और इस चुनैती को कम करने के लिए नैनो तकनीक सबसे प्रभावी तकनीक बन सकती है। नैनो उर्वरक वह उत्पाद है जो नैनो कणों से बना होता है। पांरपरिक उर्वरकों की तुलना में नैनो उर्वरकों की दक्षता 80-90% फसलों में है। इसके प्रयोग से पोषक तत्वों की स्मार्ट डिलीवरी होने के कारण ये पारम्परिक उर्वरकों की मात्रा को कम करने और पोषक तत्व उपयोग को बढ़ाने और फसल के जीवन काल के दौरान गैस रूप में पोषक तत्व की हानि, लीचिंग, अपवाह और खपत उर्जा से होने वाले नुकसान को कम करने में मदद मिलती है। नैनो उर्वरकों एवं पारम्परिक उर्वरक के तुलनात्मक फायदे एवं नुकसान इस प्रकार है जो टेबल में दिखाये गये हैं

नैनो यूरिया प्लस के लाभः फसलों में नाइट्रोलज की पूर्ति के लिए यूरिया सर्वाधिक प्रचलित उर्वरक है। परन्तु यूरिया द्वारा दिये गये नाइट्रोज बहुत मुश्किल से 30-45 भाग ही फसलें उपयोग कर पाती है, शेष बची मात्रा मिट्टी जल एवं वायु को प्रदूषित करती है। फसल उत्पादन को बढ़ाने के लिए नैनो उर्वरक वरदान साबित हो रहे हैं। नैनों कण (30-100 nm) आकार में छोटे होने के कारण पत्तियों एवं पौधे के अन्य भाग द्वारा आसानी से अवशोषित कर लिए जाते है। और मिट्टी की गुणवता वृद्धि और फसल पोषण में मदद करते हैं।

नैनो यूरिया प्लस का पौधों के पत्तियों पर छिड़काव करने पर नाइट्रोजन की हानि भी रूक जाता है। नैनो यूरिया प्लस 4-5 एमएल प्रतिलिटर पानी के साथ घोल बनाकर पौधे के क्रांतिक अवस्था (कल्ले/शाखा बनने) या 10-12 पत्ते आने पर प्रथम छिड़काव तथा फूल आने के एक सप्ताह पहले छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। 500 ml नैनो यूरिया प्लस की बोतल एक एकड़ जमीन में छिड़काव किया जा सकता है। यदि ड्रोन से छिड़काव कर रहें हैं तब 10-20 लिटर पानी में एक बोतल (500m) नैनो यूरिया का छिड़काव करें। इसके साथ कीटनाशक, फंकुंदनाशक एवं घास मारने की दवा मिलाकर भी छिड़काव किया जाता है।

नैनो डीएपी तरल (8% N एवम 16% P) : नैनो यूरिया की तरह हीं नैनो-डीएपी भी FCO-1885 में सम्मिलित कर लिया गया है पारम्परिक डीएपी की तुलना में तरल नैनो डीएपी के प्रयोग से पौधों की जड़ों, की संख्या, बालियों की संख्या, दानों का वजन तथा फसल की उपज में सार्थक वृद्धि पात्री गयी है। नैनो डीएपी (तरल) के उत्साहजनक परिणामों मे से इस तथ्य की पुष्टि हो रही है कि यह तरल नैनो उर्वरक पारम्परिक डीएपी की तुलना में विशेष सक्षम और कारगर साबित हो रहे है। इन लाभों को देखते हुए केंद्र सरकार का मत है कि नैनो उर्वरकों का उपयोग करने के बाद करोड़ो रुपए अनुदान की बचत होगी... साथ-साथ किसानों को डीएपी की तुलना में आधे से कम कीमत पर उपल्ब्ध होने से किसानों के लिए लाभप्रद साबित हो रहा है.

उर्वरकों के असंतुलित प्रयोग के कारण प्रमुख पोषक तत्वों के अलावा द्वितीयक एवं सुक्ष्म पोषक तत्वों की भारी कमी पायी जाने लगी है। तथा उर्वरकों के उपयोग दक्षता (Fertiliter use efficiency) में भारी गिरावट होती गई जिसेसे पर्यावरण प्रदुषण की समस्या उत्पन्न हुई। उर्वरकों का संतुलित प्रयोग न करके सामान्यता यूरिया, डीएपी आधारित खेती करके किसानो ने इस सब्सिडी का दुरूपयोग किया, यह कहना गलत नहीं होगा। साथ ही कार्बनिक खादों जैव उर्वरकों का गंभीर अभाव इन बहुत सारी समस्याओं का कारण बना। नैनो उर्वरकों के प्रयोग से पोषक तत्वों की स्मार्ट डिलेवरी होने के कारण ये पारम्परिक उर्वरकों की मात्रा को कम करने और पोषक तत्व उपयोग क्षमता बढाने में मदद मिलती है। इस प्रकार नैनो उर्वरक फसल की मांग के अनुसार फसल को सही समय पर पोषक तत्व प्रदान करने में मददगार साबित होते हैं। नैनो टेक्नोलॉजी की लगातार विकास होने की वजह से युवाओं के लिए इस क्षेत्र में रोजगार की असीम संभावनाएं उत्पन्न होगी।

नैनो उर्वरक	पारंपरिक उर्वरक
1 पोषक तत्व की उपयोग क्षमता 80-90% होता है	1. मोषक तत्व की जद्योग क्षमता 20-30%, होता है।
2. मिट्टी को नुकसान नहीं होता है	2. मिट्टी की ज्यादा नुकसान होता है।
3. भूमिगत जल प्रदुषित नहीं होता है।	3. भूमिगत जल प्रदुषित होता है। (NO_3)
4. ग्रीन हाउस गैस नहीं होने के कारण हवा प्रदुषित नहीं होती है	4. ग्रीन हाउस गैस निकलने के कारण हवा प्रदुषित होती है
5. उत्पादन में कम ऊर्जा की खपत होती है।	5. उत्पादन में अधिक ऊर्जा की खपत होती है।
6. सरकार द्वारा कोई अनुदान नहीं हैं। जिससे सरकार जिससे सरकार को पैसे की बचत होती है।	6. पारंपरिक उर्वरकों में रु.700-2500 प्रति बोरे सरकार को अनुदान देना पड़ता है
7. फसल उत्पाद में गुणवता की वृद्धि होती है।	7. इसमें गुणवता का ह्रास होता है।

नयी राह (कहानी)

आँसू पोंछे नई दृढ़ता के साथ उठ खड़ी हुई

दिन ढल चुका था। संध्या की लालिमा आकाश के कोनों में धीमे-धीमे घुल रही थी। महुए के विशाल वृक्ष के नीचे बैठी रधिया डूबते सूरज को एकटक निहार रही थी। उसकी आँखों के सामने अतीत के धुँधले चित्र एक-एक कर उभरते और विलीन होते जा रहे थे। छत्तीसगढ़ का वह छोटा-सा गाँव माँ-बाप का स्नेहिल आँचल सखियों के संग चुकिया-पोरा, घरघुंदिया और पुतरा-पुतरी के ब्याह के खेल-सब कुछ जैसे जीवंत हो उठा था। वे खेल ही तो थे, जो अनजाने में जीवन के बड़े सत्य सिखा जाते थे। परंतु विवाह के बाद वास्तविक जीवन में जो साथ उसे मिला, वह उन कल्पनाओं से भिन्न था। रतन-बीस वर्ष का सुदृढ़ युवक-दिल का भला अवश्य था, परंतु उसकी जिह्वा नशे में डूबते ही विष उगलने लगती। शराब उसके भीतर के राक्षस को जगा देती थी, जो गाली-गलौज और मारपीट के रूप में बाहर आता।

-डॉ.ममता बनर्जी "मंजरी"

पिछली रात की स्मृति से रधिया का चेहरा तमतमा उठा- "जल्दी पैसे निकाल नहीं तो ऐसी मार पड़ेगी कि उठ न पाएगी!" उसने आँखें भींच लीं। दर्द केवल शरीर का नहीं था, आत्मा का भी था। किंतु उसी क्षण उसके भीतर एक संकल्प जागा-अब बहुत हुआ। वह रतन को इस दलदल से निकालकर ही रहेगी। अचानक पत्तों की सरसराहट से उसका ध्यान टूटा। पीछे मुड़ी तो रतन खड़ा था। "इस हालत में अकेली क्यों आई है?" उसने झुंझलाकर कहा। रधिया का आक्रोश फूट पड़ा- "तुझसे बड़ा दुष्ट कौन है, जो मुझे सताए?" कुछ देर के संवाद, तकरार और फिर पश्चाताप रतन ने वादा किया-वह दारू नहीं पिएगा, हाथ नहीं उठाएगा। उस रात घर में एक क्षणिक शांति उतर आई। परंतु रात गहराने के साथ रतन के भीतर की लत जाग उठी। उसने चोरी-छिपे बोतल उठाई-पर वह खाली थी। कुछ पल के लिए उसका विवेक जागा, पर अगले ही क्षण अहंकार हावी हो गया- "मैं क्यों छोड़ूँ?" और वह अँधेरे में निकल गया।

सुबह रधिया की आँखें आशा से भरी थीं। परंतु जैसे ही रतन नशे में डगमगाता हुआ लौटा, उसकी आशाएँ चूर-चूर हो गईं। उसकी आँखों की लालिमा और शब्दों की क्रूरता ने सब स्पष्ट कर दिया। इस बार रधिया चुप नहीं रही। उसने आँसू पोंछे और भीतर एक नई दृढ़ता के साथ उठ खड़ी हुई। उसी दिन उसने गाँव की स्त्रियों को एकत्र किया। आँगन में सबके सामने उसने स्पष्ट स्वर में कहा- "अब यह सब नहीं चलेगा। या तो यह घर सुधरेगा, या मैं रास्ता बदल लूँगी।" सोमरी काकी और अन्य स्त्रियों ने उसका साथ दिया। पहली बार रतन को एहसास हुआ कि रधिया अब अकेली नहीं है। रात का सन्नाटा भारी था। रतन चुप बैठा रहा। अंततः धीमे स्वर में बोला- "मैं कोशिश करूँगा" "कोशिश नहीं, बदलाव चाहिए," रधिया ने शांत किंतु कठोर स्वर में कहा।

अगले ही दिनों में रधिया ने एक नया कदम उठाया। उसने महुआ बेचने के पारंपरिक ढर्रे को छोड़कर उससे उपयोगी वस्तुएँ बनाना सीखा—लड्डू, सूखे फूल। धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाने लगी। घर की दशा बदलने लगी। रतन यह सब देखता रहा। इस बीच वह दारूभट्ठे की ओर कदम भी बढ़ाया, मगर कुछ सोचकर वापस घर लौट आया। उसने पहली बार रधिया के काम में हाथ बँटाया। "मुझे भी सिखा दे" उसने संकोच से कहा।

रधिया ने उसकी ओर देखा—इस बार उसके भीतर विश्वास का एक नया अंकुर फूट रहा था। समय बीतता गया। संघर्ष आसान नहीं था, परंतु हर दिन एक छोटी जीत लेकर आता। रतन की आदतें धीरे-धीरे ढलने लगीं। कुछ महीनों बाद वही महुए का वृक्ष, वही संध्या—पर दृश्य बदल चुका था। रधिया के चेहरे पर अब शांति थी। पास ही रतन बैठा था, हाथ में महुए के सूखे फूल की टोकरी लिए। डूबता सूरज इस बार अंत का नहीं, नवप्रारंभ का प्रतीक था। रधिया ने आकाश की ओर देखते हुए कहा- "सच राह बदलने से जीवन भी बदल जाता है।" रतन ने उसकी ओर देखा-"और साथ हो तो राह आसान भी हो जाती है।" महुए का एक फूल धीरे से गिरा—मानो प्रकृति स्वयं इस नई राह का आशीर्वाद दे रही हो।

रधिया का चेहरा तमतमा उठा- "जल्दी पैसे निकाल... नहीं तो ऐसी मार पड़ेगी कि उठ न पाएगी!" उसने आँखें भींच लीं। दर्द केवल शरीर का नहीं था, आत्मा का भी था। किंतु उसी क्षण उसके भीतर एक संकल्प जागा-अब बहुत हुआ। वह रतन को इस दलदल से निकालकर ही रहेगी। अचानक पत्तों की सरसराहट से उसका ध्यान टूटा। पीछे मुड़ी तो रतन खड़ा था।

ONGOING PROJECT
MODE OF PAYMENT
Terms and Conditions
LOCATION MAP
RING ROAD
PROJECT BY
NANDAN HEIGHTS LLP
NANDAN HEIGHTS LLP
Saraswati Nandan Enclave
CNT FREE
RMC APPROVED
Well Planed 2 B.H.K Apartments
at
Tupudana(Ranchi)
BOOKING CONTACT NO
6203592707 ,9334457379 , 7970599666

NANDAN VILLA
BLOCK- A
BLOCK- B
SITE ADDRESS : BELLAHI , OPPOSITE GAYA AIRPORT
GAYA (BIHAR)
raftaarhr@gmail.com
6203592707,8709733241,6203764769
7970599666

विधायक कल्पना सोरेन 'ब्रिक्स सीसीआई वीई एनुअल वुमेन समिट 2026' में ट्रेलब्लेज़र अवार्ड से सम्मानित

अरविंद कुमार

नई दिल्ली। हयात रीजेंसी में आयोजित 'ब्रिक्स सीसीआई वीई एनुअल वुमेन समिट एंड फेलिसिटेशन 2026' के दौरान गांडेय विधायक कल्पना सोरेन को प्रतिष्ठित 'वुमेन एम्पायरमेंट ट्रेलब्लेजर्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया। ब्रिक्स चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की महिला सशक्तिकरण वर्टिकल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उन्हें यह सम्मान महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए दिया गया।

यह सम्मान हर मंईयाँ का जो देश के लिए समर्पित है : इस मौके पर कल्पना सोरेन ने कहा कि यह पुरस्कार केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह झारखण्ड की हर मंईयाँ और देश-दुनिया की उन अनगिनत महिलाओं का है जो अपने परिवार, समुदाय और अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रहीं हैं। आज महिलाएं व्यापार, खेल, अंतरिक्ष, विज्ञान, नवाचार और शासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में बाधाओं को पार कर मुकाम हासिल कर रहीं हैं। वे केवल राज्य और देश के विकास का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वे इसे गति दे रहीं हैं।

हाशिए पर रहने वाली महिलाओं की आवाज सुनने की जरूरत : कल्पना सोरेन ने कहा कि विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों की महिलाओं की आवाज को सुनने और उन्हें अवसरों तक पहुँचाने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखण्ड में महिलाओं को केवल लाभार्थी के रूप में नहीं, बल्कि उद्यमी और बदलाव की नायिका के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय उद्यमों के माध्यम से महिलाओं द्वारा बनाई जा रही आर्थिक स्थिरता और आत्मविश्वास की सराहना की।

कल्पना सोरेन ने पुरस्कार को महिलाओं के साहस, कड़ी मेहनत और सपनों को समर्पित किया

सशक्तिकरण में निष्पक्षता सुनिश्चित की जानी चाहिए : कल्पना सोरेन ने अपनी हालिया लंदन यात्रा के अनुभव साझा करते हुए बताया कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय जैसे वैश्विक संस्थानों में पढ़ रही झारखण्ड की छात्राओं के जुनून और बाधाओं से जूझने के उनके दृढ़ संकल्प ने उन्हें भविष्य के प्रति अत्यधिक विश्वास और आशा से भर दिया है। सशक्तिकरण केवल समावेश तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें निष्पक्षता सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि हर महिला को बढ़ने और नेतृत्व करने का समान अवसर मिले। इस अवसर पर मीनाक्षी लेखी पूर्व विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार और ग्लोबल चेयर, मिशन शक्तिसैट, रक्षा खडसे, माननीय राज्य मंत्री, युवा मामले और खेल, भारत सरकार अभिषेक सिंह महानिदेशक एनआईसी और अतिरिक्त सचिव, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय संजय भट्टाचार्य पूर्व बीआरआईसीएस शेरपा और भारत सरकार के सचिव, डॉ. रूपिंदर बरार संयुक्त सचिव, कोयला मंत्रालय, भारत सरकार, अभिनेत्री शबाना आज़मी, उद्यमी और यूएन एडवोकेट भूमि पेडनेकर, सुश्री लेबोगैंग जुलु राष्ट्रीय अध्यक्ष, ब्रिक्स महिला बिजनेस अलायंस - दक्षिण अफ्रीका, डॉ. अमिता चौहान शिक्षाविद्, और एमिटी इंटरनेशनल स्कूलों की अध्यक्ष, सुश्री मार्गरेट कोएल्हो निदेशक, सेन्ना नेशनेल, श्री समीर शास्त्री उपाध्यक्ष, ब्रिक्स सीसीआई, एवं अध्यक्ष, ब्रिक्स सीसीआई यंग लीडर्स, अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिगण एवं बीआरआईसीएस सीसीआई के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

झारखंड का सबसे पिछड़ा प्रखंड लिट्टीपाड़ा की दास्तान: यहां हैं आशा ही जीवन, आदिवासी यहां आज भी जी रहा श्रापित जिंदगी!

धनंजय साहा
रफ्तार मीडिया

पाकुड़ः जिलें का लिट्टीपाड़ा झारखंड का सबसे पिछड़ा प्रखंड कहलाते आया हैं क्योंकि झारखंड का सबसे कम साक्षरता इसी प्रखंड के पास है और भारत की आजादी के 80 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं लेकिन आज के आधुनिक युग में भी यहां के आदिवासीयों को पेयजल जैसी संकटों का सामना करना पड़ रहा है यह यहां की कितनी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है वह सभी के सामने है। यह तस्वीर लिट्टीपाड़ा प्रखंड मुख्यालय से महज 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित केरोदली गांव की है, यहां के लोगों को पेयजल के लिए 1 किलोमीटर दूर दूषित झड़ने की पानी से अपनी प्यास बुझानी पड़ती है क्योंकि इस गांव के पास पीने को शुद्ध पानी नहीं है। केरोदली जैसे इस प्रखंड के सैकड़ो आदिवासी गांव के पास अपना पीने को शुद्ध पानी नहीं है। इसी जल संकट को देखते हुए रघुवर दास सरकार के समय काल 2017 में लिट्टीपाड़ा प्रखंड को 217 करोड़ की लागत वाली बहुग्रामीण जलापूर्ति योजना मिली जिसे पूर्ण करने की तिथि 20-03-2020 थी लेकिन इसके अतिरिक्त 6 वर्ष बीत जाने के बाद भी इस प्रखंड के लोगों को एक बूंद पानी नहीं मिली ! वर्तमान समय में योजना एक बहुत बड़ी जांच और कार्रवाई की विषय है।

यह तस्वीर लिट्टीपाड़ा प्रखंड मुख्यालय से महज 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित केरोदली गांव की है, यहां के लोगों को पेयजल के लिए 1 किलोमीटर दूर दूषित झड़ने की पानी से अपनी प्यास बुझानी पड़ती है क्योंकि इस गांव के पास पीने को शुद्ध पानी नहीं है।

19 मार्च 2020 तक 23835 घरों तक पहुंचनी थी पानी लेकिन 2026 तक एक बूंद पानी नसीब नहीं हुई?

217 करोड़ की योजना बनी सिर्फ शोभा की वस्तु, यहां कैसे साकार होगा जल ही जीवन हैं।

शिवचरण मालतो, समाजसेवी और आदिवासीयों के अगुवा: बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति हमारे लिट्टीपाड़ा की हैं क्योंकि आजादी के 80 साल पूरे होने जा रहे हैं लेकिन अभी तक लिट्टीपाड़ा क्षेत्र के आदिवासी को शुद्ध पेयजल के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है तो यह बर्दाश्त नहीं किया जा सकता, 144 करोड़ 30 लाख पेयजल के लिए संवेदक को भुगतान होने के बावजूद यहीं के लोगों को एक बूंद पानी नहीं दे पाई तो ये यहां के लोगों के साथ एक धोखा के शिवाय कुछ नहीं हैं, हम अब तक यहां जमीनी प्रदर्शन कर रहे थे अब अपने न्याय के लिए उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाएंगे।

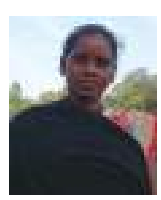

जितनी पहाड़ीन, केरोदली। हम लोग दूर से पानी लाते हैं तो बहुत कष्ट होता है साहब, कभी किसी दिन रात को पानी खत्म हो जाता है तो प्यासे सोना पड़ता हैं, हमारी मांग यही है कि हम लोगों को शुद्ध पानी मिल जाएं।

रफ्तार मीडिया के लाइव कॉन्क्लेव में लगा दिग्गजों का जमावड़ा

रांची: सेटेलाइट राष्ट्रीय न्यूज चैनल रफ्तार मीडिया ने रांची के द कार्निवल हॉल में लाइव कॉन्क्लेव का आयोजन किया। झारखंड के गौरवशाली 25 वर्ष पूरे होने पर आयोजित इस लाइव कॉन्क्लेव में राज्य के कई दिग्गजों ने शिरकत की। इस दौरान महिला शक्ति को नमन करते हुए अपने-अपने क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाली महिलाओं को तेजस्विनी अवार्ड देकर सम्मानित भी किया गया। इस कार्यक्रम में झारखंड विधानसभा अध्यक्ष रविंद्र नाथ महतो, वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर, पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू, पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी, पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय, विधायक सरयू राय, विधायक सीपी सिंह, विधायक सुरेश बैठा, विधायक मंजू कुमारी, विधायक पूर्णिमा साहू, विधायक उज्ज्वल दास समेत कई प्रख्यात चिकित्सक व समाजसेवी शामिल रहे। सभी अतिथियों ने रफ्तार मीडिया के इस प्रयास की जमकर सराहना की। इन अतिथियों का भव्य स्वागत व सम्मान रफ्तार मीडिया परिवार की ओर से किया गया। मौके पर रफ्तार मीडिया टीम के सीएमडी हरेंद्र सिंह, एमडी गौरव सिंह, नेशनल कॉर्डिनेटर अरविंद कुमार, मार्केटिंग हेड शैलेश झा, स्थानीय संपादक तरुण नायक समेत टीम के कई सदस्य मौजूद थे।

RAFTAAR
MEDIA
सच के साथ
Satellite News Channel
24X7
Also Available on All Leading
MSO & OTT Platform
dailyhunt
DPTV LIVE
24/7
DISPLAY TV
Prime max TV
Joytv
airtel
658
Jio TV
276
TATA sky
coming soon
Also Available on cable network
netvision
271
MCN
231
NXT DIGITAL
132
ALISHA DIGITAL
295
DEN
894
GTPL
Digital Cable TV | Broadband
280
RANCHI DIGITAL TV
28
ABPL
324
ADN
15
Jio Fiber
JioNews
airtel Xstream
PLAYBOXTV
One Stop Entertainment
GET IT ON
Google Play
Download on the
App Store
coming soon
@raftaarmedia
@raftaarmedia
@raftaarmedia
@raftaarmedia47
www.raftaarmedia.com

रांची में यहां बना सोलर मॉडर्न तबेला, स्विच दबाते ही नहा लेंगी गाय-भैंस, गर्मी में ठंडक तो ठंड में रहेगा गर्म

रांची: झारखंड की राजधानी रांची के बिरसा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी में खासतौर पर एक सोलर मॉडर्न तबेला का मॉडल तैयार किया गया है. यह खासतौर पर मौसम की मार जो पशु झेलते हैं. जैसे कि हीट स्ट्रेस और ठंड में काफी अधिक ठंड लगने की समस्या, इनको देखते हुए खासतौर पर स्मार्ट तबेला तैयार किया गया है. कृषि वैज्ञानिक अमित ने बताया कि किस तरीके से यह तबेला काम करता है. आइये जानते हैं इसके बारे में. दरअसल, इस तबेले के ऊपर 3 लेयर का छत है. पहले लेयर में सोलर पैनल है, बीच में ग्लास कूलिंग है (एक तरह का पत्थर होता है. जो 4 से 5 डिग्री तक टेंपरेचर बाहर का ऑ जर्व कर लेता है). उसके नीचे फिर एक लेयर होता है. यह तीनों लेयर को सैंडविच लेयर भी कहा जाता है. इस सैंडविच लेयर की वजह से 4 से 5 डिग्री आराम से ऑ जर्व हो जाता है और अधिक हीट और लू पशुओं को परेशान नहीं कर पाता है. इसके अलावा यहां पर ग्रीन कलर के परदे लगे होते हैं और साथ में स्प्रिंकल और फागिंग के लिए भी छोटे-छोटे झरने लगे होते हैं, जिससे पशुओं को गर्मी एकदम नहीं लगती हैं. कृषि वैज्ञानिक अमित बताते हैं कि ग्रीन कलर के चारों तरफ से तबेला को ढकने के लिए पर्दे हैं. अगर मान लीजिए गर्म हवा या लू चल रही है तो आप सारे पर्दों को ढक दीजिए. ये गर्म हवा को आसानी से ऑ जर्व कर लेता है. इसके अलावा मान लीजिए, गर्मी बहुत ज्यादा है तो तबेले के चारों ओर छोटे-छोटे स्प्रिंकल लगे हुए हैं और फोगिंग के लिए मशीन लगी हुई है. ऐसे में आपको कुछ करना नहीं है. बस आपको एक स्विच दबाना है और आपके तबेले में जितनी भी गाय और भैंस हैं. वह ऑटोमेटिक ही बढ़िया से नहा लेंगे या फिर एकदम हल्का सा पानी छिड़कना है. ठंडा होने के लिए तो एकदम थोड़े-थोड़े बूंद पानी का भी छिड़काव हो जाएगा.

इसमें लगे हैं लाइट और मोटर भी

दरअसल, इस मॉडल में लाइट और मोटर लगे होते हैं. सबसे खास बात यह है कि यह जो मोटर होता है, जिसमें स्प्रिंकल और फोगिंग भी चलता है. यह पूरी तरह सोलर पैनल से चार्ज होता है, जो रूफ के सबसे फर्स्ट लेयर में लगा हुआ होता है. इसीलिए आपको बिजली का भी टेंशन नहीं लेना है. यह आपके पशुधन को पूरी तरह सुरक्षित रखेगा.

4 साल बेमिसाल

उत्तराखण्ड में सशक्त भू-कानून

- हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जनपद को छोड़कर उत्तराखण्ड के अन्य 11 पर्वतीय जिलों में दूसरे राज्यों के लोगों को कृषि भूमि खरीदने की अनुमति नहीं
- पर्वतीय जिलों में कृषि और उद्यान भूमि की अनियंत्रित बिक्री पर लगी रोक
- डेमोग्राफी चेंज की कोशिशों पर लगाम, साथ ही देवभूमि की सनातन संस्कृति और पारंपरिक सामाजिक पहचान भी होगी मजबूत

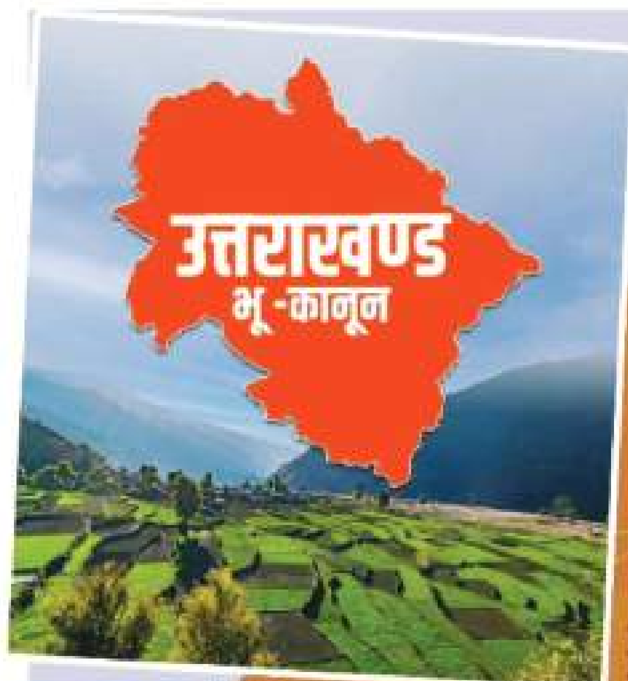

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड | @DIPR_UK | UttarakhandDIPR | www.uttarainformation.gov.in

भागलपुर से झारखंड जाना होगा आसान, 18 KM लंबा यह 2 लेन सड़क बनेगा 4 लेन, 100 करोड़ की आएगी लागत

बिहार में सड़क कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करने और यातायात को सुगम बनाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं. इसी कड़ी में भागलपुर जिले की एक महत्वपूर्ण सड़क परियोजना को जल्द ही रफ्तार मिलने वाली है. भागलपुर अगरपुर-कोतवाली मार्ग को अब दो लेन से चार लेन (फोरलेन) में तब्दील करने की तैयारी अंतिम चरण में है. इस परियोजना के पूरा होने से न केवल स्थानीय लोगों को जाम से मुक्ति मिलेगी, बल्कि पड़ोसी राज्य झारखंड के साथ कनेक्टिविटी भी काफी बेहतर हो जाएगी. वर्तमान में यह महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट वन विभाग की मंजूरी (फॉरेस्ट क्लीयरेंस) के कारण रुका हुआ है. पथ निर्माण विभाग (RCD) ने इस बाधा को दूर करने के लिए वन विभाग के आधिकारिक पोर्टल पर आवेदन कर दिया है. विभाग के अधिकारियों के अनुसार, करीब 18 किलोमीटर लंबी इस सड़क का लगभग 1.5 किलोमीटर का हिस्सा वन प्रक्षेत्र के अंतर्गत आता है. जैसे ही विभाग को अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) प्राप्त होगा, परियोजना के लिए राशि जमा कर दी जाएगी और निर्माण कार्य के लिए निविदा (टेंडर) की प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया जाएगा. इस पूरी परियोजना पर करीब 100 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है. 18 किलोमीटर लंबी इस सड़क के चौड़ीकरण से भागलपुर अगरपुर-कोतवाली होते हुए सनहोला मार्ग के जरिए झारखंड जाना बेहद आसान हो जाएगा. यह मार्ग सीधे महगामा को जोड़ेगा, जहां से हंसडीहा और आगे के गंतव्यों तक पहुंचना सरल होगा. वर्तमान में दो लेन होने और सड़क की स्थिति के कारण इस मार्ग पर अक्सर जाम की स्थिति बनी रहती है. फोरलेन बनने के बाद भारी वाहनों और यात्री बसों का परिचालन सुगम होगा, जिससे समय की बचत होगी और क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा. विभाग ने निविदा प्रक्रिया के लिए प्रारंभिक तैयारी शुरू कर दी है, ताकि एनओसी मिलते ही धरातल पर काम शुरू किया जा सके.

पथ निर्माण विभाग (RCD) ने इस बाधा को दूर करने के लिए वन विभाग के आधिकारिक पोर्टल पर आवेदन कर दिया है. विभाग के अधिकारियों के अनुसार, करीब 18 किलोमीटर लंबी इस सड़क का लगभग 1.5 किलोमीटर का हिस्सा वन प्रक्षेत्र के अंतर्गत आता है.

अनुराग ठाकुर ने किया सम्मानित

कौन हैं मोतिहारी की आराध्या सिंह? 234 भाषाओं में लिख दी हनुमान चालीसा, अब सांसद ने किया सम्मानित

मोतिहारी: पूर्वी चंपारण के मोतिहारी की रहने वाली छात्रा आराध्या सिंह (14) इन दिनों अपनी अनोखी उपलब्धि को लेकर चर्चा में हैं. 9वीं कक्षा में पढ़ने वाली आराध्या ने महज छह महीने की मेहनत से हनुमान चालीसा का 234 भाषाओं में अनुवाद कर एक अनूठा रिकॉर्ड बना दिया. उनकी इस उपलब्धि ने न केवल बिहार, बल्कि पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींचा है. पूर्व केंद्रीय मंत्री और सांसद अनुराग ठाकुर ने उन्हें सम्मानित किया. आराध्या ने इस काम के लिए आधुनिक तकनीक और ऑनलाइन अनुवाद उपकरणों की मदद ली. उन्होंने हर भाषा में अनुवाद के बाद उसके अर्थ और भाव को भी जांचा, ताकि मूल पाठ की भावना बनी रहे. इस अनुवाद में हिंदी, संस्कृत, मैथिली, भोजपुरी के साथ-साथ कोरियाई, जापानी और कई अन्य विदेशी भाषाएं भी शामिल हैं. आराध्या का मकसद केवल रिकॉर्ड बनाना नहीं, बल्कि युवाओं को सनातन संस्कृति और आध्यात्मिकता से जोड़ना है. आराध्या चाहती हैं कि देश-विदेश में रहने वाले लोग भी अपनी भाषा में हनुमान चालीसा को पढ़ और समझ सकें. इस पहल के पीछे उनका यह विश्वास है कि तकनीक का सही उपयोग करके भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहुंचाया जा सकता है. आराध्या के परिवार ने भी इस काम में उनका पूरा साथ दिया. उनके पिता मनोज सिंह और मां रानी देवी ने बेटी की रुचि को समझते हुए उसे प्रोत्साहित किया, जिसके कारण वह इतनी कम उम्र में इतना बड़ा काम कर सकीं. आराध्या की इस उपलब्धि की सराहना देशभर में हो रही है. पूर्व केंद्रीय मंत्री और सांसद अनुराग ठाकुर ने सोशल मीडिया पर उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा कि आराध्या ने आधुनिक तकनीक का उपयोग कर युवाओं को नवाचार की दिशा में प्रेरित किया है और भारतीय संस्कृति को नई पहचान दिलाने का काम किया है. मोतिहारी की बेटी आराध्या इन दिनों अपने अनोखे कारनामे को लेकर चर्चा में हैं. उन्होंने 234 भाषाओं में हनुमान चालीसा को ट्रांसलेट कर दिया. हैरानी की बात है कि उनकी उम्र महज 14 साल है. वह 9 वीं कक्षा की छात्रा हैं. इस उपलब्धि पर पूर्व केंद्रीय मंत्री और सांसद अनुराग ठाकुर ने उन्हें सम्मानित किया.

25 साल बाद भी नहीं मिली स्थायी राजधानी! आंदोलनकारी बुजुर्गों का अनशन, बोले- क्या हमारी कुर्बानियां बेकार गईं?

देहरादून की सड़कों पर पिछले 19 दिनों से सफेद दाढ़ी और झुर्रियों वाले चेहरे धरने पर बैठे हैं. ये कोई साधारण बुजुर्ग नहीं, बल्कि वो आंदोलनकारी हैं जिन्होंने लाठियां खाईं, तिहाड़ जेल की सलाखें गिनीं और अपना खून बहाकर इस राज्य को बनाया. आज रिटायरमेंट की उम्र में भी ये बुजुर्ग 'गैरसैंण' को स्थायी राजधानी बनाने की मांग को लेकर क्रमिक अनशन कर रहे हैं. जानिए इन योद्धाओं का दर्द और क्यों 25 साल बाद भी उत्तराखंड अपनी पहचान के लिए लड़ रहा है.

देहरादून: उत्तराखंड राज्य के गठन के लिए न जाने कितनी शहादतें दी गईं और आंदोलनकारियों ने पुलिस की बर्बरता सहते हुए जेल की सलाखें काटीं. राज्य तो बन गया, लेकिन जिस मकसद के लिए इसे बनाया गया था, वह आज भी अधूरा है. देहरादून के सहस्त्रधारा रोड स्थित धरना स्थल पर पिछले 19 दिनों से पहाड़ के बुजुर्ग आंदोलनकारी धरने पर बैठे हैं. इनकी मांग सिर्फ एक है 'गैरसैंण' को राज्य की स्थायी राजधानी बनाया जाए. रोज दो बुजुर्ग क्रमिक अनशन पर बैठते हैं, यह उम्मीद लिए कि शायद अब सरकार उनकी बरसों पुरानी पीड़ा को समझेगी. आंदोलन में शामिल रहे और 12 साल तक सेवाएं देने वाले पूर्व अधिकारी विनोद रतूड़ी का कहना है कि उन्होंने पहाड़ की गरीबी और माताओं-बहनों के संघर्ष को बहुत करीब से देखा है. उनका मानना है कि पहाड़ के बच्चों को आज भी रोजगार के लिए शहरों का रुख करना पड़ता है, जिससे गांव खाली हो रहे हैं और राज्य पलायन का दंश झेल रहा है. रतूड़ी कहते हैं कि आंदोलन के बाद राज्य तो मिला, लेकिन अपनी स्थायी राजधानी न मिल पाना बहुत बड़ी विडंबना और पीड़ादायक है. डीजीसीए के पूर्व निदेशक राजेंद्र प्रसाद भी इस उम्र में अनशन पर डटे हुए हैं. चोटिल होने के बावजूद वे अपनी मातृभूमि के लिए संघर्ष कर रहे हैं. उनका कहना है कि उत्तराखंड देश का इकलौता ऐसा राज्य है जिसे 25 साल बाद भी अपनी स्थायी राजधानी नहीं मिल सकी है. उन्होंने कहा कि सरकारों ने भले ही उनकी सेवाएं ली हों, लेकिन उनकी असली आस तब पूरी होगी जब उत्तराखंड को उसकी पहचान (स्थायी राजधानी) मिलेगी. वे अपनी मातृभूमि को गुमनामी की जिंदगी से बाहर निकालना चाहते हैं. आंदोलनकारी बलवीर सिंह धर्मवान, जो राज्य गठन के समय तिहाड़ जेल में भी कैद रहे, व्यवस्था से काफी आहत नजर हैं. उनका कहना है कि उत्तराखंड के साथ गठित हुए अन्य दो राज्यों (छत्तीसगढ़ और झारखंड) को अपनी राजधानी और विकास दोनों मिले, लेकिन उत्तराखंड पिछड़ गया. वहीं गोपाल दत्त, जिन्होंने आंदोलन के दौरान लाठियां खाई थीं, बताते हैं कि आज भी सारे मुख्य विभाग शहरों में ही सिमट कर रह गए हैं. इससे दुर्गम क्षेत्रों के लोगों की पहुंच शासन-प्रशासन से दूर हो गई है. धरने प बैठे इन बुजुर्गों का संकल्प है कि जब तक गैरसैंण स्थायी राजधानी नहीं बनती, वे मरते दम तक आंदोलन जारी रखेंगे.

ऊधम सिंह नगर के किच्छा में सड़कों पर उमड़ी लोगों की भीड़

धुरंधर धामी का बुलडोजर से हुआ स्वागत

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सोमवार को सड़क मार्ग से काशीपुर से खटीमा पहुंचे। इस दौरान यात्रा मार्ग में विभिन्न स्थानों पर स्थानीय लोगों द्वारा उनका भव्य एवं अभूतपूर्व स्वागत किया गया। कई स्थानों पर बुलडोजर के माध्यम से भी स्वागत कर जनता ने अपना उत्साह और समर्थन प्रदर्शित किया। यात्रा के दौरान काशीपुर, बाजपुर, गदरपुर, रुद्रपुर, दिनेशपुर, किच्छा, सितारगंज सहित कई स्थानों पर भारी संख्या में लोग अपने लोकप्रिय नेता के इंतजार में सड़कों के किनारे खड़े रहे। युवाओं, माताओं-बहनों एवं बुजुर्गों ने फूल-मालाओं और पुष्पवर्षा के साथ मुख्यमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया। हर जगह जनसैलाब उमड़ा और लोगों ने मुख्यमंत्री से मिलने के लिए उत्साहपूर्वक भागीदारी दिखाई। जगह-जगह आयोजित स्वागत कार्यक्रमों ने यह स्पष्ट किया कि प्रदेश की जनता राज्य सरकार की विकास नीतियों और जनहितकारी निर्णयों के साथ मजबूती से खड़ी है और इस विकास यात्रा की सक्रिय सहभागी बन रही है।

इस दौरान मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जनता का यह अपार स्नेह, विश्वास और आशीर्वाद उन्हें प्रदेश के विकास, सुशासन और जनसेवा के लिए और अधिक ऊर्जा प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार समग्र और संतुलित विकास के लिए संकल्पबद्ध है, ताकि विकास का लाभ अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सुनिश्चित किया जा सके।

युवाओं में तेजी से क्यों बढ़ रहा हार्ट... अटैक का खतरा, क्या है इसके पीछे की वजह

हाल के दिनों में आगरा के युवा हार्ट अटैक जैसी गंभीर समस्याओं का शिकार हो रहे हैं. चिकित्सक आशीष मित्तल ने बताया कि देर रात मोबाइल इस्तेमाल, पर्याप्त नींद न लेना और शारीरिक मेहनत न करना हृदय पर बुरा असर डालता है. शादी-पार्टी में लंबे समय तक तेज आवाज में डांस करने से ब्लॉकेज और बीपी बढ़ने का खतरा रहता है. उन्होंने सलाह दी कि प्रतिदिन सुबह वॉक, रनिंग या योगा जैसी एक्सरसाइज करें ताकि हार्ट मजबूत रहे और अचानक गतिविधियों से हृदय प्रभावित न हो. उत्तर प्रदेश के आगरा में कई ऐसे युवा है जिन्हे सीने में दर्द की शिकायत देखने को मिली है. कम उम्र में कई लोगों को हार्ट अटैक तक पड़ रहे है. आगरा के चिकित्सक ने बताया कि जहाँ पहले 60 साल से अधिक उम्र के लोगों को दिल का दौरा आदि की शिकायत मिलती थी, लेकिन वर्तमान में कम उम्र के युवाओं ने भी हार्ट अटैक जैसी गंभीर समस्या देखने को मिल रही है. उन्होंने बताया कि बदलते समय और जीवन शैली के कारण शरीर खराब हो रहा है. आज युवा देर रात तक मोबाइल आदि इस्तेमाल करते है और सुबह देर तक सोते है. उन्होंने बताया कि वर्तमान में शारीरिक मेहनत हो नहीं रही है, जिस कारण अचानक लगातार तेज़ आवाज पर डांस करने से युवाओं के हृदय पर असर पड़ने लगता है. चिकित्सक ने बताया कि प्रतिदिन एक्सरसाइज करने से शरीर या हार्ट पर अचानक से असर नहीं पड़ता है. डॉ. ने बताया कि ज़ब हार्ट तेज़ी से कार्य करता है तो ब्लॉकेज होने की संभावना बढ़ जाती है जिससे बीपी बढ़ जाता है और हार्ट अटैक आने की संभावना बढ़ जाती है. आगरा के वरिष्ठ चिकित्सक आशीष मित्तल ने बताया कि रोज शारीरिक एक्सरसाइज ना करने वाले व्यक्तियों को लगातार डांस नहीं करना चाहिए. उन्होंने बताया कि जब शादी पार्टी आदि में तेज़ साउंड में डांस किया जाता है तो व्यक्ति इतना मगन हो जाता है कि वह लगातार डांस करता इस दौरान धूल मिट्टी आदि भी उसके अंदर जाती है. डॉ. ने बताया कि अचानक प्यास लगती है तो पानी पी लिया कभी नहीं पीया जिससे हार्ट बीत तेज़ हो जाती है. चिकित्सक ने बताया कि जब हार्ट की गतिविधियां बदलती है तो व्यक्ति को घबराहट, पसीना आना आदि समस्या हो सकती है. उन्होंने बताया कि ऐसे स्थिति में कई बार हार्ट अटैक तक पड़ने की संभावना बढ़ जाती है.... आगरा के वरिष्ठ चिकित्सक आशीष मित्तल ने बताया कि प्रतिदिन एक्सरसाइज करना चाहिए. उन्होंने कहा कि यदि रोज सुबह के वक़्त एक्सरसाइज की जाये तो व्यक्ति मजबूत बनता है. उन्होंने बताया कि सुबह के समय वोकिंग, रनिंग, योगा आदि जरूर करना चाहिए जिससे हार्ट मजबूत बने.

रनिंग या योगा जैसी एक्सरसाइज करें ताकि हार्ट मजबूत रहे और अचानक गतिविधियों से हृदय प्रभावित न हो. उत्तर प्रदेश के आगरा में कई ऐसे युवा है जिन्हे सीने में दर्द की शिकायत देखने को मिली है. कम उम्र में कई लोगों को हार्ट अटैक तक पड़ रहे है. आगरा के चिकित्सक ने बताया कि जहाँ पहले 60 साल से अधिक उम्र के लोगों को दिल का दौरा आदि की शिकायत मिलती थी, लेकिन वर्तमान में कम उम्र के युवाओं ने भी हार्ट अटैक जैसी गंभीर समस्या देखने को मिल रही है.

चिकित्सक आशीष मित्तल ने बताया कि जब प्रतिदिन एक्सरसाइज की जाती है तो बॉडी उसी हिसाब से अपने आप को मैनेज़ करती है और जब कभी डांस किया जाता है तो इतना प्रभाव नहीं पड़ता है, लेकिन एक्सरसाइज ना करने वाले जब अचानक डांस करते है तो उन्हें हार्ट समंधी समस्याएँ हो सकती है...

दादरी की रैली फेल या पास? 140 सीटों को साधने की थी कोशिश, BJP ने सपा को लिया आड़े हाथ

लखनऊ: उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव को होने में भले ही अभी करीब एक साल बाकी हैं. लेकिन सियासी बिसात बिछनी शुरू हो गई है. जिस नोएडा को राजनीतिक गलियारे में शापित माना जाता था, आज उसी नोएडा में बैक टू बैक रैलियां हो रही हैं. पहले भारतीय जनता पार्टी की तरफ से जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट के उद्घाटन कार्यक्रम में विशाल जनसभा को संबोधित किया गया, जहां पीएम मोदी से लेकर सीएम योगी ने अखिलेश यादव के नोएडा ना आने पर जमकर निशाना साधा था. वहीं 29 मार्च को सपा मुखिया अखिलेश यादव ने दादरी में समानता भाईचारा रैली को संबोधित किया. अब सपा के इस कार्यक्रम को योगी सरकार के मंत्रियों ने फ्लाप बताया है. वहीं इस रैली से सपा ने कई संदेश देने की कोशिश की है. समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और रैली संयोजक राजकुमार भाटी ने चुनाव नहीं लड़ने का ऐलान किया. उन्होंने कहा कि वह तीन संदेश देना चाहते हैं. पहला तो यह कि जब 2011 में पश्चिमी यूपी से ही उन्होंने प्रचार की शुरुआत की थी, तो हमारी सरकार बनी थी 2012 में. वेस्ट यूपी में हमें कमजोर माना जाता है. जन विरोधी नीतियों से जनता परेशान है और जल्दी से जल्दी छुटकारा चाहती है. PDA के नारे से जनता जुड़ रही है. वर्तमान व्यवस्था में जितने कानून व्यवस्था खराब है, इतनी कभी खराब नहीं हुई. इसके अलावा राजकुमार भाटी ने कहा कि एनसीआरबी के आंकड़े आप उठा कर देख लीजिए. डेढ़ गुना ज्यादा क्राइम है. बुलडोजर सिर्फ विध्वंस करता है. हमने जानबूझकर प्रतिमा लगाई है. उन लोगों को संदेश देना चाहते हैं, जिन्होंने मिहिर भोज की प्रतिमा पर कालिख पोती थी. मैं 2022 में भी चुनाव लड़ा था. 2017 में भी चुनाव लड़ा था और इस बार मैंने तय किया है इस बार चुनाव नहीं लड़ूंगा और 140 सीटों पर प्रचार करने जाऊंगा.

ऐसा माना जा रहा है कि 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए सपा ने दादरी से चुनावी शंखनाद किया है. दादरी के मिहिर भोज कॉलेज में सपा की "समाजवादी समानता भाईचारा"नाम से बड़ी रैली आयोजित हुई. मंच के केंद्र पर सम्राट मिहिर भोज की प्रतिमा लगी हुई थी, जिसपर अखिलेश यादव ने माल्यार्पण किया. दरअसल, सपा की नज़र पश्चिमी यूपी के 32 जिलों की 140 विधानसभा सीटों पर है. गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद जैसे शहरी इलाके बीजेपी के मजबूत गढ़ माने जाते हैं, इसलिए यहां से रैली सपा के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है. इस रैली को कामयाब बनाने के लिए पिछले 8 महीने से सपा पदाधिकारी तैयारी कर रहे थे. अखिलेश यादव ने मंच से जनता को संबोधित करते हुए कहा, 'राजकुमार भाटी जी ने कौन सा वैज्ञानिक अप्रोच अपनाया है कि जो रोशनी अंदर आ रही है वो लाल लाल दिखाई दे रही है. इस रैली की चर्चा ने ना जाने कितने लोगों के होश उड़ा दिए थे. ना केवल होश उड़ाएं बल्कि उन्हें मजबूर कर दिया. हमारी रैली से पहले वो रैली करेंगे. कल भी रैली हुई थी उसकी पोल हमारे बहुत लोगों न खोल दी है. नया जमाना है, कोई कैमरे से नहीं बच सकता है. उस रैली में लोग आए नहीं थे लोगों को लाया गया था.

दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी कहने वाली पार्टी को सरकारी कर्मचारियों का सहारा लेना पड़ा. बीजेपी की दिल्ली से और उत्तर प्रदेश से छुट्टी होना तय है.' इसके अलावा अखिलेश यादव ने कहा, 'जो लोग हवाई अड्डे का उद्घाटन कर रहे थे. पहले भी उदघाटन हुए हैं. समाजवादियों की देन है उसमें. 7 उदघाटन किए गए थे 6 बंद हो हो गए हैं. कम से कम ये वादा करके जाते कि उद्घाटन के बाद इसे बेचा नहीं जाएगा. लगता तो ऐसा है कि उद्घाटन ही बेचने के लिए लिया गया है.

अनाथ और विधवा...सुक्खू जी, पेट्रोल- डीजल के दाम बढ़ाने ही थे तो इस शर्मनाक बहाने की क्या जरूरत थी?

शिमला. हिमाचल प्रदेश में सुक्खू सरकार ने विधवा और अनाथ बच्चों के नाम पर अपने सपनों को पूरा करने के लिए आम जनता पर बोझ डाल रही है. अनाथ और विधवा के नाम पर चलाई जा रही योजनाओं के लिए सरकार के पास पैसे नहीं है और ऐसे में अब पैसा जुटाने के लिए सरकार ने हिमाचल प्रदेश मूल्य परिवर्धित कर अधिनियम 2005 संशोधन विधेयक बजट सत्र में पारित किया. ऐसे में प्रदेश में पेट्रोल और हाई स्पीड डीजल पांच रुपये तक महंगा हो सकता है. दरअसल, सरकार ने इस संशोधन में तय किया है कि पांच रुपये तक सेस लगाया जा सकता है. हालांकि, कितना सेस लगेगा, यह बाद में तय होगा. लेकिन इस मामले से कई सवाल उठते हैं. सबसे अहम सवाल है कि क्या सुक्खू सरकार के पास छह हजार अनाथ बच्चों की मदद के लिए खजाने में पैसे नहीं है. साथ ही प्रदेश की विधवा महिलाओं के लिए भी बजट नहीं है. सीएम सुक्खू ने भाजपा के विरोध पर विक्टिम कार्ड खेलते हुए कहा कि यह कदम सामाजिक जिम्मेदारी के तहत उठाया गया है और कहा कि पार्टी गरीब विरोधी है. लेकिन क्या पूरे समाज के प्रति कांग्रेस सरकार जवाबदेह नहीं है.बुनियादी सवाल यह है कि आम जनता विधवाओं और अनाथ बच्चों के नाम पर सेस के जरिये पैसा देने को भी तैयार रहेगी. लेकिन गरीबों के नाम पर कब तक इस तरह से पैसा जुटाया जाएगा और जुटाने के बाद भी उनकी जिंदगी में बदल पाएगी, इसकी क्या गारंटी है. क्योंकि कांग्रेस की गारंटियों का क्या है, इससे कोई अनजान नहीं है. अहम बात है कि पहले ही ईरान युद्ध की वजह से आम आदमी की परेशानी बढ़ी हुई है. महंगाई का असर आम जनता पर पड़ रहा है. लेकिन कांग्रेस सरकार इस बोझ को कम करने के बजाए बढ़ा रही है. 21 मार्च को बजट पेश में सुक्खू सरकार ने महिला सुरक्षा और सामाजिक कल्याण के लिए 1544 करोड़ का बजट रखा है, लेकिन पैसा कहां से आएगा, यही बड़ी चुनौती है. गौर रहे कि इस योजना के लिए पहले भी सरकार ने प्रदेश के मंदिरों से पैसा मांगा था, जिस पर काफी हो हल्ला हुआ था. हिमाचल प्रदेश में सुक्खू सरकार ने अनाथ और विधवा योजनाओं के लिए पेट्रोल डीजल पर संभावित पांच रुपये सेस से बोझ बढ़ाया, विपक्ष ने इसे गरीब विरोधी बताया. हिमाचल प्रदेश मूल्य परिवर्धित कर अधिनियम 2005 संशोधन विधेयक बजट सत्र में पारित किया गया है. विपक्ष का कहना है कि इस बढ़ोतरी से डीजल 90 रुपए से ज्यादा और पेट्रोल 100 रुपए पहुंच जाएगा, जो पड़ोसी राज्यों के मुकाबले ज्यादा हो जाएगा. हिमाचल प्रदेश में पहले ही पेट्रोल पर 17 फीसदी और डीजल पर 13.9 फीसदी टैक्स है. पांच रुपए बढ़ाने के बाद लोगों की कमर टूट जाएगी. जो परिस्थितियां विश्व में चल रही हैं, जिसके चलते कच्चे तेल की कीमतें बढ़ सकती हैं, ऐसे में पांच रुपए सेस लगाना उचित नहीं.

विपक्ष का कहना है कि इसका असर न केवल आम आदमी बल्कि किसानों और हर साल हिमाचल प्रदेश के पर्यटन स्थलों पर आने वाले 3 करोड़ से अधिक टूरिस्ट पर भी पड़ेगा. खाद्य वस्तुओं के दाम में इजाफा और पहाड़ों पर घर बनाना महंगा हो जाएगा. एक साथ पांच रुपए प्रति लीटर की कीमत बढ़ने से निर्माण सामग्री, सेब और किसानों की फसलों की ढुलाई के साथ-साथ बस किराए में भी इजाफा हो सकता है. पड़ोसी राज्यों से अब कोई हिमाचल में तेल नहीं खरीदेगा, जिससे हिमाचल को नुकसान होगा.

हिमाचल में बारिश-बर्फबारी से गिरा तापमान, लौटी कड़ाके की ठंड, फिर बिगड़ने वाला है मौसम

हिमाचल प्रदेश में अधिकांश क्षेत्रों में सोमवार को मौसम साफ रहा. इस दौरान दोपहर तक धूप खिली रहने से तापमान में गर्मी दर्ज की गई. हालांकि कुल्लू मनाली में दोपहर बाद मौसम बदलने से बारिश का सिलसिला देखने को मिला. ऐसे में ऊपरी इलाकों में हल्की बर्फबारी भी दर्ज की गई. अटल टनल रोहतांग के साउथ पोर्टल में दोपहर को मौसम बिगड़ने पर पुलिस के द्वारा वाहनों को वापस मनाली की ओर भेजना शुरू किया गया. कुल्लू में भी दोपहर को बारिश के साथ साथ तेज हवाएं और गर्जन रिकॉर्ड की गई. प्रदेश में बदले तापमान के साथ अब फिर से ठंडक बढ़ गई है. वहीं मंडी में मध्यम कोहरा छाया रहा. प्रदेश में सबसे कम न्यूनतम पारा ताबो में माइनस -0.4 डिग्री सेल्सियस रहा, जबकि सबसे अधिक अधिकतम तापमान ऊना में 29.4 डिग्री सेल्सियस रहा. उत्तर पश्चिमी भारत में दो पश्चिमी विक्षोभों के एक के बाद एक आने की संभावना है. ऐसे में 26 और 29 मार्च को दो अलग पश्चिमी विक्षोभ प्रदेश में सक्रिय होने का पूर्वानुमान जताया गया है. मौसम विज्ञान केंद्र शिमला के वैज्ञानिक संदीप शर्मा के अनुसार 24, 25, 27 और 28 मार्च को राज्य के अलग अलग स्थानों पर हल्की बारिश/ बर्फबारी होने की संभावना है. 24 मार्च को चंबा, कांगड़ा और कुल्लू जिले के ऊंचे इलाको में व किन्नौर और लाहौल स्पीति जिलों में एक दो स्थानों पर हल्की बारिश/ बर्फ़बारी होने का येलो अलर्ट रहेगा. राज्य के बाकी हिस्सों में मौसम सामान्य बना रहेगा. जबकि 26 मार्च को प्रदेश के कुछ स्थानों पर हल्की बारिश/ बर्फबारी होने का पूर्वानुमान जताया गया है. वहीं 29 मार्च को प्रदेश के कई हिस्सों पर हल्की से मध्यम बारिश/ बर्फबारी होने की भी आशंका जताई गई है.प्रदेश में अगले 3-4 दिनों के दौरान कई हिस्सों में न्यूनतम तापमान में धीरे धीरे 2-3 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी होने की संभावना है. वहीं अधिकतम तापमान में भी अगले 3-4 दिनों के दौरान राज्य के कई हिस्सों में धीरे धीरे 2-5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होने का पूर्वानुमान जताया गया है. शिमला में अधिकतम पारा 18.5 डिग्री रहा. सुंदरनगर में 25.5 डिग्री, भुंतर में 25.3 डिग्री, कल्पा में 15.7 डिग्री, धर्मशाला में 23.0, ऊना में 29.4 डिग्री, नाहन में 25.1 डिग्री, केलांग में 5.3 डिग्री, सोलन में 23.0 डिग्री, मनाली में 16.5 डिग्री, कांगड़ा में 26.4 डिग्री, मंडी में 25.6 डिग्री, चंबा में 20.5 डिग्री, जुब्बड़हट्टी में 21.2 डिग्री, कुफरी में 13.4 डिग्री, सेऊबाग में 24.2 डिग्री, बरठीं में 25.4 डिग्री, कसौली में 19.0 डिग्री, ताबो में 11.3 डिग्री और नेरी में 27.1 डिग्री सेल्सियस अधिकतम पारा रहा. राजधानी शिमला में न्यूनतम पारा 8.2 डिग्री सेल्सियस रहा. वहीं सुंदरनगर में 11.5 डिग्री, भुंतर में 9.6 डिग्री, कल्पा में 2.6 डिग्री, धर्मशाला में 8.9 डिग्री, ऊना में 12.4 डिग्री, नाहन में 9.5 डिग्री, पालमपुर में 10.0 डिग्री, सोलन में 10.0 डिग्री, मनाली में 6.2 डिग्री, कांगड़ा में 12.9 डिग्री, मंडी में 12.3 डिग्री, बिलासपुर में 10.0 डिग्री, जुब्बड़हट्टी में 9.8 डिग्री, कुफरी में 5.4 डिग्री, कुकुमसेरी में 0.8 डिग्री, सेऊबाग में 4.7 डिग्री, बरठीं में 11.6 डिग्री, कसौली में 10.1 डिग्री, पांवटा साहिब में 15.0 डिग्री, सराहन में 3.7 डिग्री, देहरा गोपीपुर में 14.0 डिग्री, ताबो में माइनस - 0.4 डिग्री, और नेरी में 15.1 डिग्री सेल्सियस न्यूनतम पारा रिकॉर्ड किया गया है.

हिमाचल प्रदेश में सोमवार को अधिकतर जगह मौसम साफ रहा, लेकिन कुल्लू-मनाली में दोपहर बाद बारिश और ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बर्फबारी हुई. अटल टनल रोहतांग पर मौसम बिगड़ने से यातायात प्रभावित रहा. मौसम विभाग ने 26 और 29 मार्च को पश्चिमी विक्षोभ के चलते फिर बारिश-बर्फबारी का अलर्ट जारी किया है. 24, 25, 27 और 28 मार्च को भी कुछ क्षेत्रों में हल्की बारिश की संभावना है. तापमान में धीरे-धीरे बढ़ोतरी के आसार हैं.

जौहर भूमि से योगी आदित्यनाथ का बड़ा संदेश... जातिवाद को बताया देश के लिए खतरा

मेवाड़ के ऐतिहासिक गौरव के प्रतीक चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर आयोजित जौहर श्रद्धांजलि समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का संबोधन आज दोपहर शुरु हुआ. उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत में ही मेवाड़ की इस पावन मिट्टी को शीश नवाते हुए कहा कि हम सब यहाँ केवल इतिहास का स्मरण करने नहीं आए हैं. बल्कि उस महान इतिहास को बनाने वाली और उसे अपने खून से सींचने वाली जाग्रत भूमि से साक्षात्कार कर रहे हैं. योगी आदित्यनाथ ने कहा कि चित्तौड़गढ़ की जौहर भूमि को नमन करना और शक्ति स्वरूपा कालिका माता के दर्शन करना उनके लिए सौभाग्य की बात है. उन्होंने यहाँ की शौर्य गाथाओं को देश की आत्मा बताया. और कहा कि यह धरा युगों-युगों तक राष्ट्र के प्रति समर्पण की प्रेरणा देती रहेगी. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने उद्बोधन में नारी शक्ति के अदम्य साहस और बलिदान पर विशेष बल दिया. उन्होंने जौहर की ज्वाला को याद करते हुए झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के महान बलिदान का भी उल्लेख किया. सीएम योगी ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की सुरक्षा का मुद्दा उठाते हुए कहा कि आज उत्तर प्रदेश महिलाओं के दृष्टिकोण से पूरी तरह सुरक्षित राज्य बन चुका है. उन्होंने स्पष्ट संदेश दिया कि यह आयोजन इस बात का भी गवाह है कि देश की हर नारी और बेटी को सुरक्षा और सम्मान की गारंटी मिलनी चाहिए. योगी आदित्यनाथ ने कहा कि मातृ शक्ति का साहस अतीत में भी अजय था और भविष्य में भी अजय बना रहेगा. चुनौतियों का डटकर मुकाबला करना ही सनातन की मर्यादा है. देश की वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए योगी आदित्यनाथ ने जातिवाद के मुद्दे पर कड़ा प्रहार किया. उन्होंने कहा कि जातिवाद की राजनीति भारत की नींव को अंदर ही अंदर कमजोर कर रही है. उन्होंने राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर की पंक्तियों को याद करते हुए उन लोगों को निशाने पर लिया जो देश को छिन्न-भिन्न करना चाहते हैं. सीएम योगी ने कहा कि जिन्हें देश की प्रगति के लिए कुछ नहीं करना है. वे लोग केवल जातिवाद के आधार पर समाज को बांटने का काम कर रहे हैं. उन्होंने देशवासियों से आह्वान किया कि देश की सुरक्षा और एकता के लिए सभी को इन क्षुद्र मतभेदों से ऊपर उठकर एकजुट होना होगा. क्योंकि एकता में ही भारत की असली शक्ति निहित है. अपने ओजस्वी भाषण के अंत में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चित्तौड़गढ़ के हर उस नायक और नायिका को नमन किया जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी. उन्होंने कहा कि जौहर मेला केवल एक आयोजन नहीं है. बल्कि यह हमारी गौरवशाली विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का एक माध्यम है. वीर-वीरांगनाओं को नमन करने के साथ ही उन्होंने अपना उद्बोधन समाप्त किया. कार्यक्रम के दौरान ईनाणी सिटी सेंटर में हजारों की संख्या में लोग मौजूद रहे. जिन्होंने 'जय जौहर' और 'जय श्री राम' के नारों के साथ सीएम योगी का स्वागत किया. इस समारोह ने एक बार फिर मेवाड़ की धरती पर राष्ट्रीय गौरव की भावना को प्रज्वलित कर दिया है.

संबोधन के दौरान योगी आदित्यनाथ ने सनातन संस्कृति की गौरवशाली परंपराओं को रेखांकित किया. उन्होंने कहा कि सनातन की मर्यादा अमर है और सदैव रहेगी. दुनिया की कोई भी शक्ति इसे मिटा नहीं सकती. उन्होंने वीर और वीरांगनाओं के बलिदान को याद करते हुए कहा कि मेवाड़ का इतिहास हमें यह सिखाता है कि आत्मसम्मान के लिए कैसे बड़ी से बड़ी कुर्बानी दी जाती है. सीएम योगी ने कालिका माता मंदिर में पूजा-अर्चना के बाद कहा कि वे यहाँ आकर अभिभूत हैं और एक नई ऊर्जा का अनुभव कर रहे हैं.

पुलिस ने आरोपी पिता को किया गिरफ्तार

झुंझुनूं में ऑनर किलिंग! प्रेम प्रसंग बना मौत की वजह पिता ने बेटी को मारा, मौसी की सतर्कता से खुला राज

झुंझुनूं में 23 वर्षीय युवती की उसके पिता ने प्रेम प्रसंग से नाराज होकर हत्या कर दी. झुंझुनूं, राजस्थान के झुंझुनूं जिला स्थित पिलानी क्षेत्र के घूमनसर कलां गांव में ऑनर किलिंग की एक सनसनीखेज घटना ने पूरे इलाके को हिला कर रख दिया है. 23 वर्षीय युवती की प्रेम प्रसंग को लेकर उसके पिता ने निर्मम हत्या कर दी. आरोपियों ने इसे हादसे का रूप देने की कोशिश की. शव के अंतिम संस्कार को लेकर भी भी तैयारी कर ली थी. लेकिन युवती की मौसी को इसकी भनक लग गई. मौसी की सतर्कता और पुलिस की त्वरित कार्रवाई से पूरा राज खुल गया. जानकारी के अनुसार, शुक्रवार की रात करीब 1 बजे युवती प्रियंका कमरे से बाहर निकली थी. इसी दौरान उसके पिता सुरेंद्र कुमार नेहरा ने गुस्से में आकर युवती पर हथौड़ी से हमला कर दिया. कनपटी पर किए गए ताबड़तोड़ वारों से युवती गंभीर रूप से घायल हो गई और मौके पर ही उसकी मौत हो गई. इसके बाद पिता घर से फरार हो गया. हालांकि परिवार ने शुरुआत में इसे हादसा बताने की कोशिश की. परिवालों ने अपने रिश्तेदारों को हदसा बताया. हालांकि युवती की मौसी को मामले में कुछ संदेह हुआ. उसने अपने बेटे को इसकी जानकारी दी. बेटे ने तुरंत उन्होंने पुलिस को सूचना दी. पुलिस टीम मौके पर पहुंची और अंतिम संस्कार को रोक दिया. शव को क जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल के मोर्चरी में रखवाया. प्रारंभिक जांच में युवती के शरीर पर चोट के गहरे निशान मिले, जो हथौड़ी जैसे हथियार से किए गए वारों के संकेत दे रहे थे. इससे मामला संदिग्ध हो गया. पुलिस की गहन पूछताछ में सामने आया कि युवती का किसी युवक से प्रेम प्रसंग चल रहा था. वह उससे प्रेम विवाह करना चाहती थी. परिवार, खासकर पिता, इस रिश्ते से बेहद नाराज थे. घर में कई दिनों से इस मुद्दे पर तीखी बहस और कहासुनी चल रही थी. शुक्रवार को विवाद और बढ़ गया, जिसके बाद पिता ने गुस्से में नियंत्रण खो दिया और बेटी पर घातक हमला कर दिया.

पिलानी पुलिस ने तुरंत मामले को गंभीरता से लिया. मृतका के पिता सुरेंद्र कुमार नेहरा के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया है. आरोपी पिता को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है. पुलिस अन्य परिजनों से भी पूछताछ कर रही है कि क्या हत्या में कोई और शामिल था या यह केवल पिता का अकेला कृत्य था.

थानाधिकारी चन्द्रभान सिंह ने बताया कि पूरे मामले की गहन जांच चल रही है. फोरेंसिक रिपोर्ट, गवाहों के बयान और डिजिटल साक्ष्यों को भी शामिल किया जा रहा है. पुलिस का कहना है कि जांच पूरी होने के बाद ही पुरा मामला स्पष्ट हो पाएगा. शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंपा जाएगा, लेकिन कानूनी प्रक्रिया पूरी होने तक अंतिम संस्कार में देरी हो सकती है.

झुंझुनूं के पिलानी क्षेत्र के घूमनसर कलां गांव में ऑनर किलिंग का सनसनीखेज मामला सामने आया है. 23 वर्षीय युवती की उसके पिता ने प्रेम प्रसंग से नाराज होकर हत्या कर दी. आरोपी ने हथौड़ी से वार कर बेटी की जान ले ली और इसे हादसा दिखाने की कोशिश की. परिवार अंतिम संस्कार की तैयारी में था, लेकिन मौसी की सतर्कता से पुलिस को सूचना मिली. पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को क जे में लिया और जांच शुरू की. आरोपी पिता को गिरफ्तार कर लिया गया है.

सहकार से समृद्धि

आत्मनिर्भर भारत, आत्मनिर्भर कृषि

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

इफको नैनो यूरिया प्लस और
इफको नैनो डी.ए.पी.
का वादा

लागत कम और लाभ ज्यादा

FCO अधिसूचित दुनिया का पहला नैनो उर्वरक

500 मिली
बोतल मात्र
₹225/- में

500 मिली
बोतल मात्र
₹600/-में

इफको नैनो यूरिया प्लस (तरल)

इफको नैनो डी.ए.पी. (तरल)

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड, राँची (झारखण्ड)

राज्य विपणन कार्यालय: एम1 (डी/एस) हरमू हाउसिंग कॉलोनी, राँची-834002

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : 1800 103 1967; वेबसाईट : www.nanourea.in / www.nanodap.in

भूजल संकट

भविष्य को गिरवी रखती खेती

खेती चलाने को उत्तरी भारत अपना कल कैसे बेच रहा है

> भूजल की हर अतिरिक्त यूनिट उस विफलता की भरपाई करती है, जिसे संस्थान ऊपर से नहीं संभाल पाते। लागत को टाल दिया जाता है, ज़मीन के नीचे छिपा दिया जाता है और भविष्य पर डाल दिया जाता है। इस तरह भूजल, चुपचाप, नीति विफलताओं का साइलेंट शॉक ए जॉर्बर बन जाता है। भूजल की गिरावट चुपचाप ग्रामीण समाज को फिर से संगठित कर रही है- जहाँ ज़मीन और पानी पर नियंत्रण कुछ ही हाथों में सिमटता जा रहा है।

रफ्तार || संवाददता

पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के खेतों में खेती अब मिट्टी या बीज से नहीं, ट्यूबवेल मोटर के स्विच से शुरू होती है। पानी पंप करने की आवाज़ आज खेती की धड़कन बन चुकी है। यह पानी अब केवल सिंचाई नहीं है-यह सर्वाइवल फाइनेंस है। जब बाज़ार, बीमा और खरीद व्यवस्था साथ छोड़ देती हैं, तब किसान ज़्यादा पानी निकालते हैं। इस तरह भूजल, चुपचाप, एक टूटे हुए कृषि तंत्र का कोलेटरल बन जाता है- और कीमत भविष्य चुकाता है।

यह कोई रूपक नहीं है : यह एक ठोस आर्थिक सच्चाई है, जो दशकों की नीतिगत चूकों से बनी है। जब बाज़ार किसानों को स्थिर और भरोसेमंद कीमतें नहीं दे पाते, जब फसल बीमा समय पर नुकसान की भरपाई नहीं करता, और जब फसल विविधीकरण के वादे मंडियों और खरीद केंद्रों पर दम तोड़ देते हैं, तब किसान खेती बंद नहीं करते। वे ज़्यादा पानी निकालते हैं।

यह संकट कैसे बना

हरित क्रांति ने चावल और गेहूं की पक्की खरीद के ज़रिए उत्तरी भारत को देश का अन्न भंडार बनाया। मुफ्त या लगभग मुफ्त बिजली और सब्सिडी वाले इनपुट्स ने इस मॉडल को मजबूती दी। इसने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा तो दी, लेकिन इसकी कीमत पारिस्थितिकी ने चुकाई। धान, जो स्वभाव से पानी-बहुल फसल है, सेमी-एरिड इलाकों में आर्थिक रूप से व्यवहार्य इसलिए बनी क्योंकि बाज़ार जोखिम राज्य ने उठाया और पर्यावरणीय जोखिम भूजल ने। वह लागत, जो नीति को वहन करनी चाहिए थी, उसे एक्विफर ने चुपचाप झेल लिया।

जब पानी बन जाता है गिरवी

वित्तीय प्रणालियां भी इसी तर्क के अनुसार ढल गई हैं। चालू ट्यूबवेल वाली ज़मीन आसानी से लोन-योग्य बन जाती है। बिना सिंचाई वाली ज़मीनें हाशिये पर चली जाती हैं। अनौपचारिक साहूकार ब्याज दर तय करते समय पानी की उपलब्धता को खुले तौर पर जोड़ते हैं। भूजल तक पहुंच व्यवहार में गिरवी रखी जाने वाली संपत्ति बन चुकी है। किसान जितनी तेज़ी से पानी निकालता है, उसकी अल्पकालिक आर्थिक स्थिति उतनी बेहतर दिखती है, जब तक कि एक्विफर खत्म न हो जाए और वह "संपत्ति" बेकार न हो जाए।

डेटा जो चेतावनी देता है

आधिकारिक आकलन किसी व्याख्या की ज़्यादा गुंजाइश नहीं छोड़ते। केंद्रीय भूजल बोर्ड के अनुसार, पंजाब आज अपने वार्षिक भूजल रिचार्ज का लगभग 156 प्रतिशत निकाल रहा है, जिससे वह भारत का सबसे अधिक दोहन वाला कृषि राज्य बन चुका है। हरियाणा भी पीछे नहीं है - जहाँ बड़े इलाके आधिकारिक तौर पर "ओवर-एक्सप्लॉइटेड" और "क्रिटिकल" श्रेणी में दर्ज हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जिसे कभी अपेक्षाकृत सुरक्षित माना जाता था, अब तेज़ी से गिरावट की ओर बढ़ रहा है। 1970 के दशक से धान-गेहूं बेल्ट में कई ब्लॉकों में जलस्तर 2–5 मीटर से गिरकर 20–30 मीटर से नीचे पहुँच चुका है। कुछ इलाकों में कुएँ 40 मीटर से भी गहरे हो गए हैं। यह सूखे का अस्थायी असर नहीं है। यह संरचनात्मक depletion है।

किसान यह सबसे पहले समझते हैं

यह संकट किसानों की लापरवाही से पैदा नहीं हुआ। किसान इसे नीति-निर्माताओं से कहीं पहले और कहीं बेहतर समझते हैं। बुज़ुर्ग किसान बताते हैं कि कभी एक उथला कुआँ पूरे गांव के लिए काफ़ी होता था। "पहले पानी ढूँढते थे, अब पानी पीछा छुड़ाता है।" आज मोटरें कुछ ही महीनों में जल जाती हैं और ड्रिलिंग का खर्च लाखों रुपये तक पहुँच गया है। जो किसान यह खर्च उठा सकते हैं, वे और गहरे बोरवेल करवाते हैं।

भूजल संकट

भूजल: साझा संसाधन से निजी जीवनरेखा

हर साल किसानों को उतनी ही पैदावार पाने के लिए और ज़्यादा पानी निकालना पड़ा। गिरते जलस्तर ने प्राकृतिक रिचार्ज और मिट्टी की नमी - दोनों को कम किया। धीरे-धीरे भूजल को साझा संसाधन मानना बंद हो गया। यह जीने का निजी साधन बन गया।इसके सामाजिक असर अब साफ़ दिखते हैं। छोटे और सीमांत किसान बाहर हो रहे हैं। अनौपचारिक किरायेदारी बढ़ रही है। पलायन सामान्य होता जा रहा है। महिलाएं खेत संभाल रही हैं, लेकिन ड्रिलिंग, फसल चयन और क्रेडिट जैसे बड़े फैसलों से बाहर हैं। भूजल संकट ग्रामीण भारत में वर्गीय और लैंगिक असमानता - दोनों को गहरा कर रहा है।

मुफ़्त बिजली: सबसे महंगी सब्सिडी

बिजली नीति ने इस संकट को निर्णायक रूप से आकार दिया। जब खेती की बिजली मुफ़्त और बिना मीटर की होती है, तो पानी निकालने की कोई तात्कालिक कीमत दिखाई नहीं देती। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, अकेले पंजाब ने 1990 के दशक के अंत से खेती की मुफ्त बिजली पर ₹1.34 लाख करोड़ से अधिक खर्च किए हैं - यह राशि राज्य के कई सामाजिक कार्यक्रमों से अधिक है। यह भारी खर्च न तो टिकाऊ आय बना सका और न खेती को सुरक्षित। इसने गहरे बोरवेल, ज़्यादा हॉर्सपावर वाली मोटर और रात में पंपिंग को फाइनेंस किया - जहाँ न निगरानी होती है, न सामाजिक दबाव। सब्सिडी ने दक्षता नहीं, दोहन को पुरस्कृत किया।

जब सब्सिडी का तर्क उलटा गया

'पानी बचाओ, पैसे कमाओ'- नीति प्रयोग

इस योजना ने बिजली सब्सिडी की दिशा बदल दी। किसानों को पिछले उपयोग के आधार पर मुफ्त बिजली का कोटा मिला। यदि वे कम बिजली इस्तेमाल करते थे, तो बचत की रकम सीधे DBT के जरिए उनके खातों में चली जाती थी। न बिल, न जुर्माना। शुरुआती पायलट में पंपिंग घटी और भागीदारी बढ़ी। किसान इसलिए नहीं बदले कि वे पर्यावरणविद बन गए थे, बल्कि इसलिए कि दक्षता से आय बढ़ी।

विविधीकरण: समाधान या जोखिम?

फसल विविधीकरण को बार-बार समाधान बताया गया, लेकिन बिना भरोसेमंद खरीद के। MSP काग़ज़ पर मौजूद है, लेकिन पक्की खरीद अब भी चावल और गेहूं तक सीमित है। दालों, तिलहनों और मोटे अनाज के लिए बाज़ार अनिश्चित है। ऐसे हालात में विविधीकरण समाधान नहीं, बल्कि जोखिम बन जाता है -एक ऐसा जोखिम जिसे कुछ ही किसान उठा सकते हैं।

नीति की असल चुनौती

आय सुरक्षा पहले, संरक्षण बाद में

जब तक किसानों की आय सुरक्षित नहीं होगी, पानी बचाने की नीतियां सफल नहीं होंगी। बिना विकल्प दिए नियमन सज़ा लगता है। संरक्षण तभी संभव है, जब आर्थिक अस्तित्व सुरक्षित हो।

आगे का रास्ता : भूजल कभी गिरवी रखने के लिए नहीं था। इसे ऐसा मानना एक नीतिगत सुविधा थी, जिसने कठिन फैसलों को टाल दिया। वह सुविधा अब खत्म हो चुकी है। एक्विफर बातचीत नहीं करते। अगर उत्तर भारत की खेती को बचाना है, तो पानी को फेल संस्थानों की भरपाई करना बंद करना होगा। बिजली सब्सिडी को DBT-आधारित दक्षता से जोड़ना होगा। कीमत, बीमा और खरीद नीतियों को ब्लॉक-स्तरीय जल सीमाओं के साथ संरेखित करना होगा।

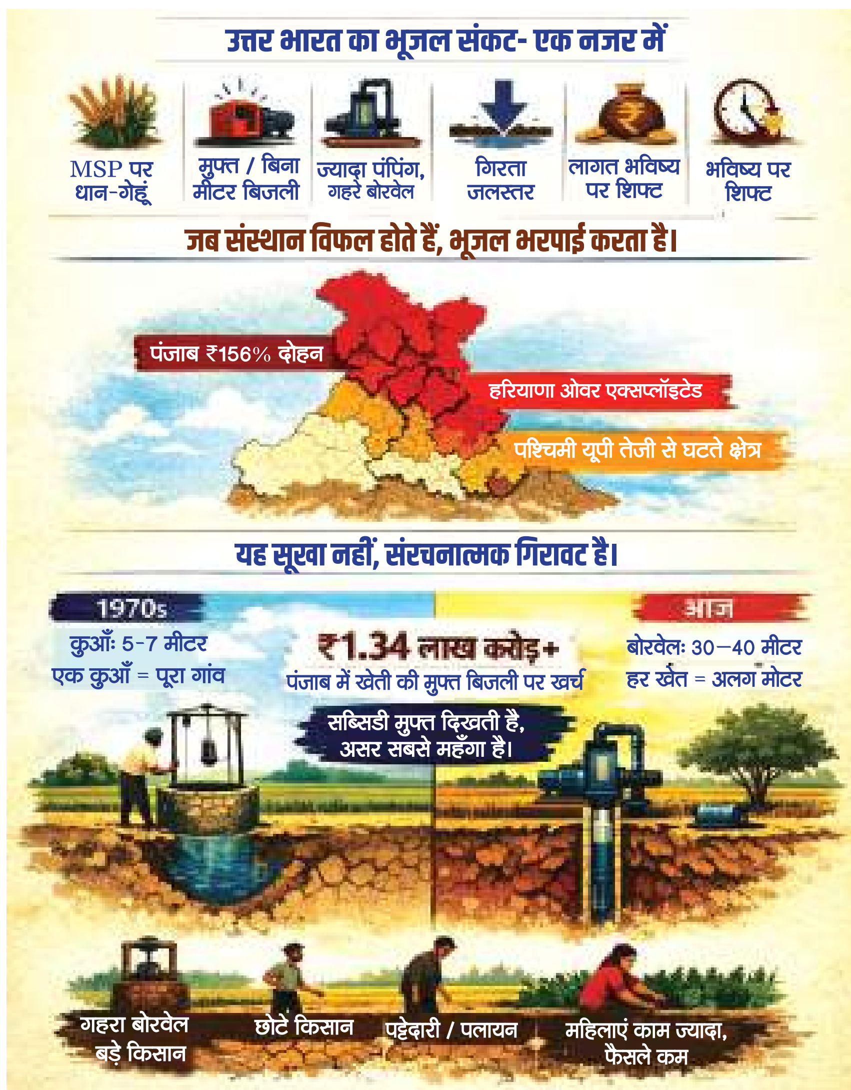

मक्का का नया जोखिम

COVID के बाद क्यों कीमतें मौसम से नहीं, सिस्टम से तय होती हैं

रफ्तार || संवाददता

भारत का मक्का बाज़ार अब मौसम से नहीं डरता - वह पॉलिसी, एनर्जी इकॉनॉमिक्स और ग्लोबल सिग्नल्स से हिलता है। COVID के बाद के पाँच सालों ने मक्का को एक साधारण सीज़नल फसल से निकालकर एक ऐसे बाज़ार में बदल दिया है, जहाँ कीमतें महीनों तक एक ही दिशा में चल सकती हैं। वह एक स्ट्रक्चरल वोलैटाइल मार्केट बन चुकी है - जहाँ कीमतें महीनों, कभी-कभी सालों तक एक ही दिशा में चल सकती हैं।

2020 के बाद पहले रिकॉर्ड तोड़ तेज़ी और फिर 2022–25 का लंबा करेक्शन कोई इत्तेफाक नहीं था। वे एक नए स्ट्रक्चरल वोलैटिलिटी सिस्टम की शुरुआत थे। यह उस गहरे बदलाव का संकेत था, जिसने मक्का वैल्यू चेन के हर हिस्से - किसान, ट्रेडर, फ़ीड मिल, पोल्ट्री इंटीग्रेटर और इंडस्ट्रियल यूज़र - की रणनीति को चुनौती दी। इसी उथल-पुथल के बीच, एक चीज़ साफ़ होकर उभरीः स्पॉट मार्केट पर निर्भरता अब रिस्क है, और फ्यूचर्स, खासतौर पर NCDEX, मक्का इकोसिस्टम के लिए कोर रिस्क-मैनेजमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर बन चुके हैं।

झटका: जब COVID ने पुराने नियम तोड़ दिए

COVID से पहले तक मक्का की कीमतों का व्यवहार अपेक्षाकृत जाना-पहचाना था - बुवाई, कटाई और आवक के आसपास हल्का-फुल्का उतार-चढ़ाव। लेकिन 2020 में लॉकडाउन के बाद जैसे ही अर्थव्यवस्था खुली, मक्का एक साथ कई नई ताक़तों के बीच फँस गई।

पोल्ट्री और फ़ीड डिमांड ने तेजी से वापसी की। भारत में मक्के की कुल खपत का 55-60% हिस्सा फ़ीड से जुड़ा है। 2021-22 तक फ़ीड डिमांड 28-30 मिलियन टन के स्तर पर पहुँच गई। इसी दौरान, इथेनॉल ब्लेंडिंग प्रोग्राम ने मक्के को फ्यूल इकॉनॉमी से जोड़ दिया, ब्लेंडिंग रेट 3–4% से बढ़कर करीब 10% तक पहुँच गया। डिमांड बढ़ रही थी, लेकिन सप्लाई उसी रफ्तार से नहीं बढ़ सकी। ऊपर से, ग्लोबल मक्का कीमतों में 60% से ज़्यादा की उछाल, कच्चे तेल का USD 40 से USD 100 प्रति बैरल तक पहुँचना और लॉजिस्टिक्स लागत में कई गुना इज़ाफ़ा - इन सबने मिलकर कीमतों को ऊपर धकेल दिया।

मक्के के लिए सरकारी बफर स्टॉक न होने का मतलब था कि हर छोटा झटका सीधे कीमतों में दिख रहा था।

'गोल्डन रैली': ₹1,667 से ₹3,168 तक

नतीजाः मई 2020 में NCDEX पर 1,667 प्रति क्विंटल पर कारोबार कर रहा मक्का अगस्त 2022 तक 3,168 के शिखर पर पहुँच गया। 27 महीनों में करीब 90% की बढ़ोतरी।

यह तेज़ी सिर्फ़ ट्रेडर्स की कहानी नहीं थी; इसने पूरी वैल्यू चेन की इकॉनॉमिक्स बदल दी। पोल्ट्री सेक्टर में फ़ीड लागत लगभग 90% तक बढ़ गई, जबकि फ़ीड कुल लागत का 65-70% होती है। फ़ीड मिल्स के लिए वर्किंग-कैपिटल का दबाव तेज़ी से बढ़ा - 1,000 टन मक्का खरीदने पर हर दिन 1.5-1.7 लाख अतिरिक्त पूंजी की ज़रूरत पड़ने लगी। MSME प्रोसेसर्स के लिए यह दबाव सबसे ज़्यादा था। कई जगहों पर टूटे चावल और फ़ीड गेहूं जैसे विकल्प अपनाने पड़े। स्टार्च और इथेनॉल जैसे इंडस्ट्रियल यूज़र्स को 40–50% इनपुट कॉस्ट इन्फ्लेशन झेलना पड़ा।

कहानी पलटी: कमी से सरप्लस की ओर

अगस्त 2022 के बाद वही ताक़तें, जिन्होंने कीमतों को ऊपर पहुँचाया था, धीरे-धीरे उलटने लगीं। मक्का उत्पादन लगातार बढ़ता गया - पाँच सालों में लगभग 50% की बढ़ोतरी के साथ 2024–25 में 434 लाख टन के आसपास। इसी दौरान एनर्जी मार्केट में करेक्शन आया। कच्चे तेल की कीमतें USD 65–75 के दायरे में लौट आईं, जिससे इथेनॉल ब्लेंडिंग की इकॉनॉमिक्स कमजोर पड़ी। भारत में इथेनॉल के लिए मक्के की जगह सरप्लस चावल और चीनी-आधारित फीडस्टॉक्स का इस्तेमाल बढ़ा। DDGS की बढ़ती उपलब्धता ने भी फ़ीड में मक्के की हिस्सेदारी कम करनी शुरू कर दी। नतीजाः अगस्त 2022 से नवंबर 2025 के बीच मक्के की कीमतें लगभग 44% गिरकर 1,756 तक आ गईं। यह गिरावट अचानक नहीं थी, बल्कि एक स्ट्रक्चरल रीबैलेंसिंग का हिस्सा थी।

नया नॉर्मल: जब वोलैटिलिटी स्थायी हो जाती है

आज मक्का बाज़ार किसी पुराने साइकिल की तरह नहीं चलता। कीमतें अब सिर्फ़ बुवाई-कटाई से तय नहीं होतीं। पॉलिसी फ़ैसले, बायोफ्यूल इकॉनॉमिक्स, एनर्जी प्राइस और ग्लोबल सिग्नल सब मिलकर एक ऐसा सिस्टम बना चुके हैं, जहाँ तेज़ उतार-चढ़ाव किसी भी दिशा में लंबे समय तक रह सकता है।ऐसे माहौल में, स्पॉट मार्केट पर निर्भरता कंपनियों को मार्जिन, कैश-फ़्लो और प्लानिंग के बड़े जोखिम में डाल देती है।

केस स्टडी: हेजिंग कैसे अनिश्चितता को नंबर में बदलती है

मान लीजिए एक कंपनी हर महीने 12,000 MT मक्का खपत करती है - सालाना 1.44 लाख टन। अगर वह अपनी ज़रूरत का 70% NCDEX फ्यूचर्स के ज़रिए हेज करती है, तो तस्वीर बदल जाती है। हर ₹100 प्रति क्विंटल का प्राइस मूवमेंट इस कंपनी की मासिक लागत पर करीब ₹12 करोड़ का असर डालता है। हेजिंग के साथ, कीमत बढ़ने पर फ्यूचर्स से होने वाला मुनाफ़ा फिजिकल कॉस्ट को ऑफ़सेट कर देता है। कीमत गिरने पर, फिजिकल मार्केट की बचत फ्यूचर्स के नुकसान को सम्हाल लेती है।

नतीजा - मार्जिन सुरक्षित, कैश-फ़्लो अनुमानित और प्लानिंग स्थिर।

NCDEX: ट्रेडिंग टूल से इंफ्रास्ट्रक्चर तक

NCDEX आज मक्का वैल्यू चेन के अलग-अलग खिलाड़ियों को उनके रिस्क के मुताबिक़ समाधान देता है:

किसान और FPOs फसल से पहले अनुमानित कीमत लॉक कर सकते हैं।

- ट्रेडर्स इन्वेंट्री मार्जिन को पॉलिसी या मौसम के झटकों से बचा सकते हैं।
- फ़ीड मैन्युफैक्चरर्स और पोल्ट्री इंटीग्रेटर्स भविष्य की इनपुट कॉस्ट फिक्स कर सकते हैं।
- इंडस्ट्रियल यूज़र्स को बजटिंग और मार्जिन विज़िबिलिटी मिलती है।
- MSME प्रोसेसर्स बेहतर प्रोक्योरमेंट और वर्किंग-कैपिटल प्लानिंग कर पाते हैं।

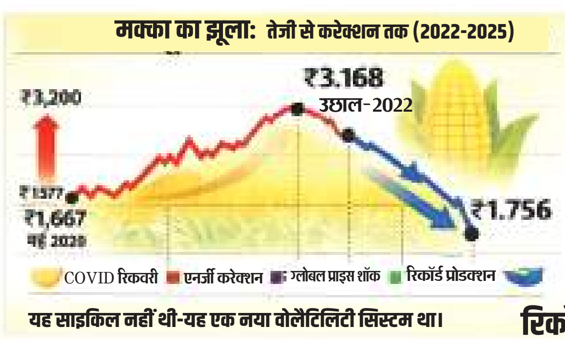

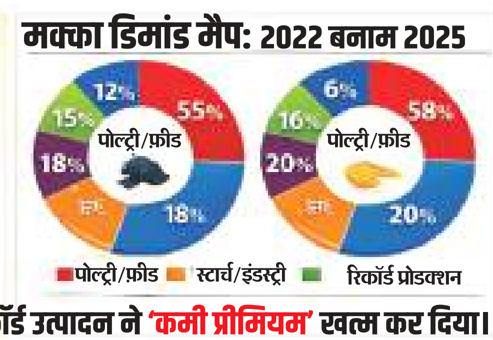

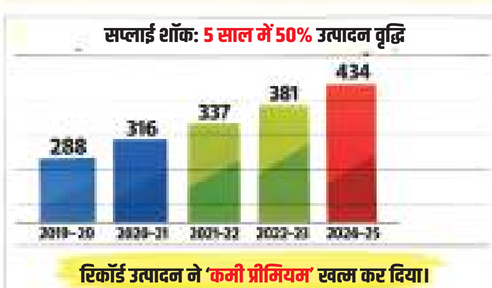

मक्का बाज़ार का सबक

COVID के बाद के दौर ने एक बात साफ़ कर दी है - भारत का मक्का बाज़ार अब स्ट्रक्चरल वोलैटिलिटी के युग में है। यह न तो अस्थायी है, न ही साइक्लिकल। ऐसे में, स्पॉट मार्केट पर निर्भरता अब स्वीकार्य जोखिम नहीं रही।

NCDEX फ्यूचर्स अब विकल्प नहीं, बल्कि ज़रूरी इंफ्रास्ट्रक्चर हैं। वे अनिश्चित प्राइस स्विंग्स को मैनेजेबल बिज़नेस वेरिएबल्स में बदलते हैं - और इसी के साथ, मक्का वैल्यू चेन को एक जटिल होते बाज़ार में भी भरोसे के साथ आगे बढ़ने की क्षमता देते हैं।

बसंत पंचमी के बाद गेहूं, सरसों, मटर और चने की फसलें पकने लगती हैं। खेतों में लहलहाती फसलों को देखकर जहां किसान आह्लादित होते हैं, वहीं व्यापारी वर्ग अपनी रणनीति बनाने में जुट जाता है।

फरवरी की गर्मी, खतरे की घंटी

रफ्तार || संवाददता

बसंत की सुहानी आहट के बीच फरवरी की असामान्य गर्मी रबी की फसलों के लिए चेतावनी बनकर उभरी है। जाड़े की बारिश में भारी कमी और तेजी से बढ़ते तापमान ने खासकर गेहूं और सरसों की पैदावार पर संकट के संकेत दे दिए हैं। खेत से मंडी तक, मौसम का यह बदला मिज़ाज किसानों, नीति-निर्माताओं और बाजार - तीनों की चिंता बढ़ा रहा है।

बसंत का मौसम, बदलता मिज़ाज

होली से पहले बसंत ऋतु का आगमन सुहावने मौसम, खिली हुई धूप और प्रकृति में नए बदलावों का संकेत देता है। फरवरी के अंत में उत्तर भारत में हल्की बारिश और ठंड के साथ बसंत का अहसास शुरू हो जाता है। यह समय पेड़ों पर नए पत्ते आने, सरसों के पीले खेतों और फूलों के खिलने का होता है - जो होली के रंगों के लिए एकदम मुफीद है। बसंत पंचमी के बाद गेहूं, सरसों, मटर और चने की फसलें पकने लगती हैं। खेतों में लहलहाती फसलों को देखकर जहां किसान आह्लादित होते हैं, वहीं व्यापारी वर्ग अपनी रणनीति बनाने में जुट जाता है। फरवरी की गर्मी क्यों चिंता बढ़ा रही है। आमतौर पर भारत में फरवरी का महीना सुहावना माना जाता है। इस दौरान औसतन तापमान 12 से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहना चाहिए। लेकिन हाल के वर्षों में इस ट्रेंड में बड़ा बदलाव देखने को मिला है। इस बार फरवरी के आखिरी हफ्ते में ही पारा करीब 35 डिग्री तक पहुंच गया, जो रबी की उपज के लिए खतरे की घंटी है। जाड़े की बारिश में भारी कमी ने हालात को और भी अलार्मिंग बना दिया है। ऐसे में खासकर रबी की मुख्य फसल गेहूं पर इसका सीधा असर पड़ सकता है।

जाड़े की बारिश में भारी गिरावट

मौसम विभाग के अनुसार जनवरी और फरवरी के दौरान जाड़े की बारिश बेहद कम हुई है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में इस अवधि में करीब 50 प्रतिशत तक की कमी दर्ज की गई है, जबकि बिहार में जनवरी और फरवरी के दौरान एक बूंद भी बारिश नहीं हुई। पंजाब और हरियाणा में भी जाड़े की बारिश में भारी गिरावट देखी गई है।

गौरतलब है कि देश में करीब 55 प्रतिशत गेहूं उत्पादन अकेले उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार से होता है। हालांकि जमीन में नमी और नहरों व नदियों में पानी अभी पर्याप्त बताया जा रहा है, लेकिन तेजी से बढ़ते तापमान के बीच यह अच्छी खेती के लिए पर्याप्त नहीं माना जा सकता।

गेहूं की फसल पर गर्मी का सीधा वार

बढ़ती गर्मी गेहूं की फसल के लिए बेहद नुकसानदेह है, खासकर फरवरी-मार्च के उस दौर में जब दाना भर रहा होता है। अधिक तापमान दानों को समय से पहले पकाकर कमजोर और छोटा कर देता है, जिससे पैदावार में 15 से 20 प्रतिशत तक की गिरावट आ सकती है। उच्च तापमान से फसल का जीवनचक्र छोटा हो जाता है और पौधों की विकास प्रक्रिया प्रभावित होती है।

मध्य प्रदेश से यूपी-बिहार तक असर

मध्य प्रदेश, जहां देश के कुल गेहूं उत्पादन का 25 प्रतिशत से अधिक हिस्सा होता है, वहां फरवरी में सामान्य से अधिक तापमान और तेज गर्मी के चलते गेहूं की फसल प्री-मैच्योर यानी समय से पहले पकने की कगार पर है। इससे पैदावार में करीब 20 प्रतिशत तक की गिरावट की आशंका जताई जा रही है। बालियां निकलने और दाना भरने के नाजुक समय में तेज धूप और 30 डिग्री से ऊपर के तापमान के कारण दानों का आकार छोटा और सिकुड़ा हुआ रह सकता है।

कैसे प्रभावित होता है गेहूं का दाना

दरअसल, बढ़ती गर्मी का सीधा असर गेहूं के दानों के विकास पर पड़ता है। दानों का भराव ठीक से नहीं हो पाता, जिससे वे पतले, कमजोर और सिकुड़े हुए रह जाते हैं। समय से पहले फसल पकने के कारण दानों को परिपक्व होने का पूरा अवसर नहीं मिल पाता। तापमान बढ़ने से फूल जल्दी आ जाते हैं, लेकिन दानों में दूध यानी पोषक तत्व सही तरीके से नहीं भर पाते। 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान पर पत्तियों में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया भी धीमी पड़ जाती है, जिससे पौधा कमजोर हो जाता है। उत्पादन में 20 से 30 लाख टन तक की कमी आ सकती है।

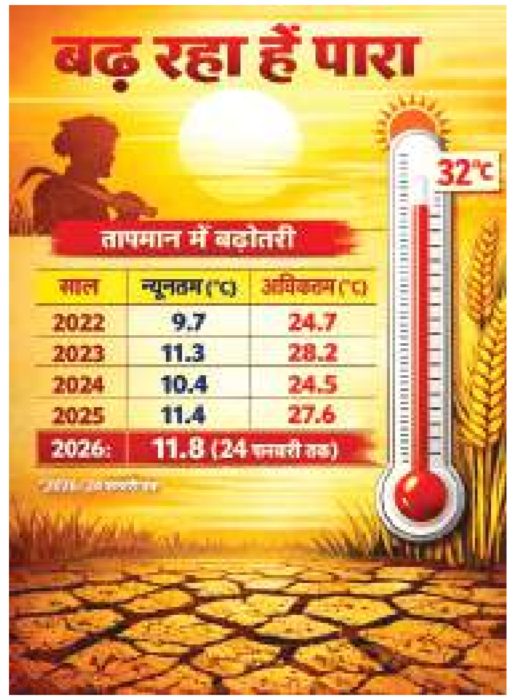

रिकॉर्ड लक्ष्य, लेकिन मौसम की शर्त

साल 2025-26 के लिए केंद्र सरकार ने गेहूं उत्पादन का 11.9 करोड़ टन का रिकॉर्ड लक्ष्य तय किया है। जानकारों का मानना है कि अधिक उपज देने वाली किस्मों और बेहतर नमी की स्थिति ने पिछले साल रिकॉर्ड उत्पादन में अहम भूमिका निभाई थी। हालांकि इस बार भी बुआई के समय मौसम अनुकूल रहा और सामान्य से अधिक मानसूनी बारिश के कारण जमीन में नमी पर्याप्त थी, लेकिन गेहूं की फसल के लिए केवल शुरुआती अनुकूलता काफी नहीं होती। पूरी फसल अवधि के दौरान मौसम का साथ मिलना उतना ही जरूरी होता है।

सरसों पर भी गर्मी की मार कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक, गर्मी के अचानक बढ़ने का असर केवल गेहूं तक सीमित नहीं है। सरसों की फसल भी इससे प्रभावित हो रही है। फरवरी में सरसों की फसल पकने की अवस्था में रहती है, लेकिन इस दौरान तापमान बढ़ने से इसमें तेल की मात्रा घट सकती है। दाने छोटे रहने से पैदावार में कमी की आशंका भी जताई जा रही है।

MSP बढ़ा, लेकिन बाजार की चिंता बरकरार

अप्रैल से शुरू होने वाले खरीद सीजन के लिए केंद्र सरकार ने गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2585 रुपए और सरसों का 6200 रुपए प्रति क्विंटल तय किया है। गेहूं के MSP में 6.5 प्रतिशत और सरसों में करीब 4 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है।
आमतौर पर फरवरी के मध्य से राजस्थान की मंडियों में नई सरसों की आवक शुरू हो जाती है, जिससे कीमतों पर दबाव बनता है। लेकिन इस बार राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में सरसों का भाव 6000 से 6400 रुपए प्रति क्विंटल के बीच बना हुआ है। वहीं गेहूं का भाव 2200 से 2600 रुपए प्रति क्विंटल की रेंज में कारोबार कर रहा है।

मार्च से ही गर्मी का सितम मई तक पड़ेगी भीषण गर्मी

इस साल गर्मी ने वक्त से पहले ही अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। मौसम विभाग की ताज़ा चेतावनी के मुताबिक मार्च से मई के बीच देश के बड़े हिस्से में सामान्य से कहीं ज़्यादा लू चलने की आशंका है। हालात ऐसे बन सकते हैं कि तापमान कई जगह पुराने रिकॉर्ड तोड़ दे। विशेषज्ञ इस असामान्य स्थिति को 'हीट एक्सप्लोजन' कह रहे हैं-यानी तापमान का अचानक और तेज़ी से उछल जाना, जो आम लोगों के साथ-साथ सिस्टम की तैयारियों को भी चुनौती में डाल देता है।

पिछले 125 वर्षों के तापमान आंकड़ों का विश्लेषण बताता है कि इस बार गर्मी का पैटर्न सामान्य नहीं है। फरवरी में ही पारा औसत से ऊपर चला गया और ठंड लगभग नदारद रही। यही शुरुआती संकेत हैं कि गर्मी न सिर्फ जल्दी आएगी, बल्कि उसकी तीव्रता भी अधिक होगी। मार्च से मई के दौरान उत्तर, पश्चिम और मध्य भारत में लू का असर सबसे ज्यादा महसूस किया जा सकता है। बुज़ुर्गों, बच्चों, बाहर काम करने वाले श्रमिकों और पहले से बीमार लोगों के लिए यह दौर खास तौर पर जोखिम भरा साबित हो सकता है। मौसम विभाग के अनुसार पश्चिम राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र के कई हिस्सों से लेकर पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, उत्तर कर्नाटक और उत्तर तमिलनाडु तक हीटवेव के दिन सामान्य से अधिक हो सकते हैं। इन इलाकों में लंबे समय तक ऊँचा तापमान बना रहना और गर्म हवाओं का चलना जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित कर सकता है।

फिलहाल कमजोर ला नीना जैसी परिस्थितियाँ बनी हुई हैं, जिनके आगे चलकर न्यूट्रल ENSO स्थिति में बदलने की संभावना है। यही बदलाव आने वाले महीनों में गर्मी के स्वरूप को और तीखा बना सकता है। फरवरी 2026 में देश में 2001 के बाद सबसे कम बारिश दर्ज की गई और किसी भी तरह की ठंडी लहर नहीं चली। नतीजतन ज़मीन पहले से ही ज्यादा गर्म हो चुकी है - और यही वजह है कि आने वाले महीनों में भीषण लू के खतरे को और बढ़ा रही है।

अभी अनुमान, अप्रैल में तस्वीर साफ

जाहिर है कि कम पैदावार और कमजोर गुणवत्ता का सीधा नुकसान किसानों को उठाना पड़ सकता है। हालांकि फिलहाल ये शुरुआती अनुमान हैं और मौसम के मौजूदा रुझानों के आधार पर किया गया आकलन है। अप्रैल तक पहुंचते-पहुंचते उत्पादन की तस्वीर ज्यादा साफ होगी और उसी के साथ बाजार की प्रतिक्रिया भी इन फसलों पर साफ तौर पर दिखने लगेगी।

डिजिटल खेत, अदृश्य नियंत्रण

खेती अब ज़मीन पर नहीं सर्वर पर पढ़ी जा रही है

भारत दुनिया का सबसे बड़ा किसान डेटा ग्रिड बना रहा है - लेकिन असली सवाल तकनीक से कहीं आगे के हैं सरकार बार-बार स्पष्ट करती है कि कोर किसान रजिस्ट्री राज्य के नियंत्रण में है और किसी निजी कंपनी के स्वामित्व में नहीं है। सरकारी भाषा में यह 'प्रशासनिक दक्षता' की कहानी है। असल में यह ग्रामीण भारत की सबसे व्यापक डेटा-मैपिंग है।

रफ्तार || संवाददता

भारत इस समय अपने इतिहास के सबसे बड़े कृषि डिजिटाइजेशन अभियान के बीच है। यह कोई पायलट प्रोजेक्ट नहीं है। यह कोई सीमित योजना नहीं है। यह एक स्ट्रक्चरल बदलाव है - ऐसा बदलाव जो तय करेगा कि आने वाले वर्षों में खेती को कैसे समझा जाएगा, कैसे आंका जाएगा और किसके नियंत्रण में रहेगा। डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन, जिसे पहले एग्रीस्टैक कहा जाता था, के तहत केंद्र सरकार करोड़ों किसानों की पहचान, ज़मीन के रिकॉर्ड, फसल का विवरण, मिट्टी की प्रोफाइल, बीमा इतिहास और सरकारी योजनाओं को एक ही इंटरऑपरेबल नेशनल फ्रेमवर्क में जोड़ रही है।सरकारी भाषा में यह 'प्रशासनिक दक्षता' की कहानी है। असल में यह ग्रामीण भारत की सबसे व्यापक डेटा-मैपिंग है।

डेटा से बनती खेती की नई रीढ़

2 सितंबर 2024 को केंद्रीय कैबिनेट ने ■2,817 करोड़ की लागत वाले डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन को औपचारिक मंज़ूरी दी, जिसमें ■1,940 करोड़ केंद्र सरकार का हिस्सा है। यह मिशन 2021 में शुरू किए गए इंडिया डिजिटल इकोसिस्टम ऑफ एग्रीकल्चर फ्रेमवर्क पर आधारित है।

इसके तीन मुख्य स्तंभ हैं - फार्मर्स रजिस्ट्री, जियो-रेफरेंस्ड विलेज मैप्स और क्रॉप सोवन रजिस्ट्री। सरकार इसे एक फेडरेटेड, किसान-केंद्रित डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर बताती है। इसका पैमाना अभूतपूर्व है। 2024–25 के रबी सीज़न तक 17 राज्यों में 6 करोड़ से अधिक फार्मर ID बन चुकी थीं। 2026 की शुरुआत तक यह संख्या 19 राज्यों में 8.48 करोड़ को पार कर गई। सिर्फ रबी के दौरान 25.3 करोड़ फार्म प्लॉट मैप किए गए। खरीफ 2025 में 28.5 करोड़ से अधिक प्लॉट डिजिटल क्रॉप सर्वे के दायरे में आए। **लक्ष्य साफ़ है -** तीन साल में 11 करोड़ किसानों की डिजिटल पहचान और 142 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि का मिट्टी प्रोफाइल के साथ मैपिंग।

सरकार का दावा: सुधार जो बहुत देर से आया

कृषि मंत्रालय इसे दशकों से लंबित सुधार बताता है। उसका कहना है कि एग्रीस्टैक डुप्लीकेट लाभार्थियों को हटाएगा, फसल बीमा भुगतान तेज़ करेगा, सटीक खेती को बढ़ावा देगा और कृषि निर्णय समर्थन प्रणाली के ज़रिए डेटा-आधारित नीति निर्माण संभव बनाएगा। महाराष्ट्र में उदाहरण दिया जाता है, जहां डिजिटल वेरिफिकेशन के ज़रिए खरीफ 2025 में ■14,000 करोड़ से अधिक का मुआवज़ा किसानों तक पहुंचा। डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर वाकई लीकेज और देरी कम कर सकता है - इस पर विवाद नहीं है।

असल सवाल: सुधार कैसे और किसके साथ?

कृषि सुधार की ज़रूरत पर कोई गंभीर विश्लेषक सवाल नहीं उठाता। सवाल यह है कि यह सुधार किस आर्किटेक्चर पर और किन भागीदारों के साथ किया जा रहा है।एग्रीस्टैक में कॉर्पोरेट भागीदारी 2021 से शुरू हुई। मंत्रालय ने कई बड़ी टेक और एग्री कंपनियों के साथ प्रूफ-ऑफ-कॉन्सेप्ट पायलट्स के लिए समझौते किए - क्लाउड, डेटा लेयर, जियोस्पेशियल मैपिंग और डिजिटल मार्केट इंटीग्रेशन के क्षेत्रों में। सरकार बार-बार स्पष्ट करती है कि कोर किसान रजिस्ट्री राज्य के नियंत्रण में है और किसी निजी कंपनी के स्वामित्व में नहीं है।

सहमति: कानून में मज़बूत, ज़मीन पर कमजोर

डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट, 2023 के तहत डेटा प्रोसेसिंग से पहले फ्री, स्पेसिफिक और इन्फॉर्म्ड कंसेंट अनिवार्य है। एग्रीस्टैक में कंसेंट मैनेजर का प्रावधान है, लेकिन चुनौती इम्प्लीमेंटेशन की है। ग्रामीण इलाकों में डिजिटल साक्षरता बेहद असमान है। कई किसान सरकारी लाभ पाने के लिए सहमति दे देते हैं - बिना यह समझे कि उनका डेटा आगे किन संस्थाओं तक और किस उद्देश्य से पहुंचेगा। सुप्रीम कोर्ट के पुट्टास्वामी फैसले ने सूचना-गोपनीयता को मौलिक अधिकार माना था। ऐसे में सवाल उठता है—क्या मौजूदा सिस्टम कम साक्षरता वाले इलाकों में वास्तव में 'इन्फॉर्म्ड कंसेंट' के मानक पूरे करता है?

एक क्लिक में किसान की पूरी अर्थव्यवस्था

आज यह सिस्टम ज़मीन के मालिकाना रिकॉर्ड, फसल बोने का डेटा, मौसम फीड, सैटेलाइट इमेजरी, मिट्टी के मेट्रिक्स और सरकारी योजनाओं को एक ही डैशबोर्ड पर जोड़ता है। जब इसे क्रेडिट और इंश्योरेंस प्लेटफॉर्म से जोड़ा जाता है, तो यह ग्रामीण भारत की लाइव आर्थिक प्रोफाइल बन जाता है।

मुद्दा मालिकाना हक का नहीं, डिज़ाइन का है

यह बहस नाम की ओनरशिप की नहीं है। यह फंक्शनल आर्किटेक्चर की है। जो कंपनी डेटा फ्लो का इंटरफ़ेस डिज़ाइन करती है, जो एनालिटिक्स का क्लाउड बनाती है, और जो रजिस्ट्री पर एप्लिकेशन लेयर खड़ी करती है - वही यह तय करती है कि डेटा कैसे स्ट्रक्चर होगा, कैसे प्रोसेस होगा और भविष्य में कैसे इस्तेमाल किया जा सकेगा। डेटा गवर्नेंस में यह फर्क निर्णायक होता है।

एल्गोरिदम, कर्ज़ और असमानता

कृषि डेटा केवल रिकॉर्ड नहीं है - यह भविष्यवाणी है। जब फसल के स्टेज, बारिश और मिट्टी के डेटा को लोन और बीमा इतिहास से जोड़ा जाता है, तो यह क्रेडिट रिस्क मॉडलिंग का आधार बन जाता है। FY24 में भारत का कृषि ऋण ₹24.84 ट्रिलियन को पार कर चुका है। ऐसे में अगर सूखा-संभावित इलाकों में एल्गोरिदमिक स्कोरिंग के आधार पर ब्याज दरें या प्रीमियम बढ़ते हैं, तो यह दक्षता के साथ-साथ सूचना असमानता भी पैदा कर सकता है।

विदर्भ और मराठवाड़ा की चेतावनी

महाराष्ट्र ने 2024 में 2,706 किसान आत्महत्याओं की पुष्टि की - जिनमें कर्ज़ एक बड़ा कारण रहा। यही इलाके डिजिटल फसल सर्वे के शुरुआती रोलआउट में शामिल हैं। पहले से संकटग्रस्त ज़िलों में एल्गोरिदमिक क्रेडिट फैसलों के लिए कड़ी निगरानी अनिवार्य है।

किराएदार किसानः डिजिटल सिस्टम से बाहर? फार्मर ID मुख्यतः डिजिटाइज्ड भूमि रिकॉर्ड पर आधारित है। जबकि भारत में लाखों किसान किराए या बटाई पर खेती करते हैं। अगर योजनाओं का एक्सेस पूरी तरह डिजिटल पहचान से जुड़ा, तो ये किसान डिजिटल रूप से अदृश्य हो सकते हैं।

नॉन-पर्सनल डेटाः सबसे बड़ा ग्रे एरिया ब्लॉक-लेवल उत्पादकता, मिट्टी की उर्वरता और क्लाइमेट एनालिटिक्स भले ही पर्सनल डेटा न हों, लेकिन इनकी कमर्शियल वैल्यू बहुत अधिक है। भारत में अभी तक ऐसा कोई सेक्टर-स्पेसिफिक कानून नहीं है जो इस डेटा के स्वामित्व और लाभ-वितरण को स्पष्ट करे।

तकनीक आगे है, बहस पीछे

डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन किसानों के लिए वास्तविक फ़ायदे ला सकता है। लेकिन पारदर्शिता, स्वतंत्र ऑडिट और कानूनी स्पष्टता के बिना यही सिस्टम ग्रामीण भारत के डेटा का केंद्रीकरण भी बन सकता है।

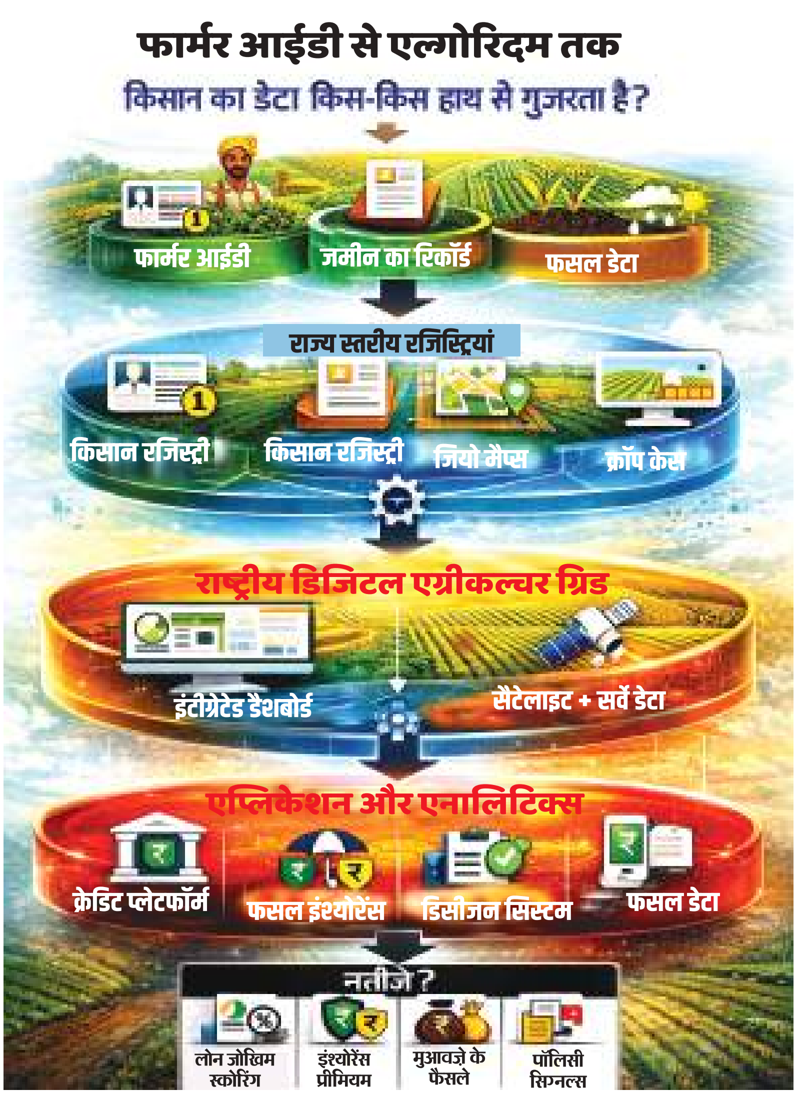

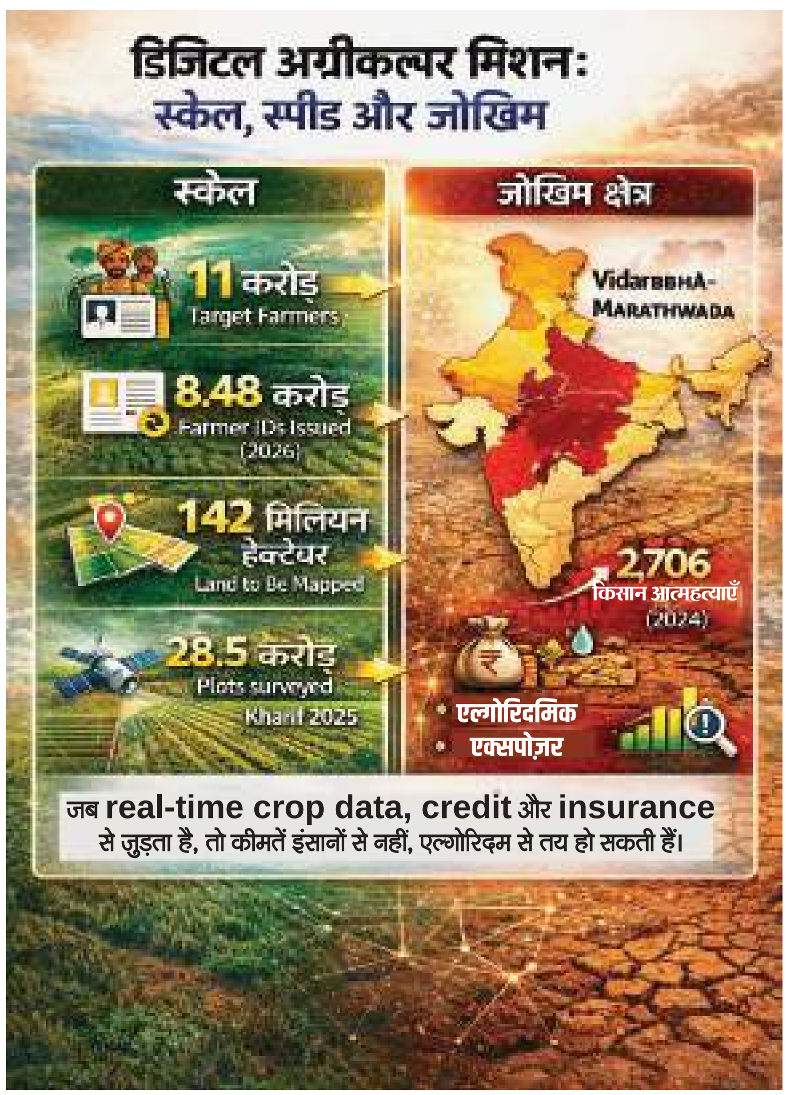

जब स्वास्थ्य की लड़ाई थाली से लड़ी जा रही है

रफ्तार || संवाददता

तेज रफ्तार जीवन, लगातार तनाव, नींद की कमी और असंतुलित खानपान—आज भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में स्वास्थ्य संकट की नई परिभाषा बन चुके हैं। मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ रही हैं, जीवनशैली रोग कम उम्र में दस्तक दे रहे हैं, और लोग दवाओं के साथ-साथ भोजन में भी समाधान खोज रहे हैं। यही वजह है कि वैश्विक स्तर पर "फंक्शनल फूड" और "सुपरफूड" की अवधारणा तेजी से लोकप्रिय हो रही है - ऐसे खाद्य पदार्थ, जो केवल कैलोरी नहीं, बल्कि शरीर और मन दोनों पर सकारात्मक असर डालें।भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में यह सवाल और अहम हो जाता है: क्या समाधान हमेशा विदेशी, महंगे और प्रोसेस्ड उत्पादों में ही छिपा है? या फिर हमारे पारंपरिक फलों में ही वह क्षमता मौजूद है, जिसे हमने अब तक गंभीरता से नहीं देखा?

इसी सवाल के केंद्र में है - लाल केला (Red Banana), जिसकी पहचान अब केवल रंग या स्वाद तक सीमित नहीं रही।

सेरोटोनिन का संतुलित स्तर

- तनाव और चिंता को नियंत्रित करता है,
- मूड को स्थिर रखता है,
- और नींद की गुणवत्ता सुधारता है।

यही कारण है कि पोषण विशेषज्ञ लाल केले को अब सिर्फ ऊर्जा देने वाला फल नहीं, बल्कि प्राकृतिक 'मूड बूस्टर' के रूप में देखने लगे हैं। ऐसे समय में, जब मानसिक स्वास्थ्य को लेकर सामाजिक और चिकित्सकीय दोनों स्तरों पर चिंता बढ़ रही है, यह गुण लाल केले को विशेष बनाता है।

डोपामाइन, एंटीऑक्सिडेंट और कोशिकीय सुरक्षा

लाल केले की एक और महत्वपूर्ण विशेषता इसमें मौजूद डोपामाइन की अपेक्षाकृत अधिक मात्रा है। डोपामाइन आनंद, प्रेरणा और मानसिक संतोष से जुड़ा न्यूरोट्रांसमीटर है। लेकिन इसकी भूमिका यहीं खत्म नहीं होती। भोजन के रूप में मिलने वाला डोपामाइन शरीर में एंटीऑक्सिडेंट की तरह काम करता है, जो कोशिकाओं को ऑक्सीडेटिव तनाव से बचाने में मदद करता है।

आज की जीवनशैली - प्रदूषण, प्रोसेस्ड फूड और लगातार तनाव - शरीर में फ्री रेडिकल्स की मात्रा बढ़ाती है। ऐसे में प्राकृतिक एंटीऑक्सिडेंट-समृद्ध खाद्य पदार्थों की भूमिका और भी अहम हो जाती है।

फल से 'मूड फूड' तक का सफ़र

पोषण विज्ञान अब इस बात पर एकमत है कि भोजन और मानसिक स्वास्थ्य के बीच गहरा संबंध है। लाल केले में पाया जाने वाला ट्रिप्टोफैन अमीनो एसिड शरीर में सेरोटोनिन के निर्माण में मदद करता है - इसी सेरोटोनिन को आम तौर पर "हैप्पी हार्मोन" कहा जाता है।

माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की कमी के खिलाफ देसी हथियार : भारत आज भी एनीमिया, कुपोषण और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, खासकर महिलाओं और बच्चों में। लाल केला इस संदर्भ में एक पोषण-समृद्ध पैकेज के रूप में सामने आता है।

इसमें मौजूद हैं

- **विटामिन B6**: मस्तिष्क के विकास, हार्मोन संतुलन और इम्यून फंक्शन के लिए आवश्यक
- **आयरन**: हीमोग्लोबिन निर्माण और एनीमिया नियंत्रण में सहायक
- **पोटैशियम**: हृदय स्वास्थ्य और रक्तचाप संतुलन के लिए महत्वपूर्ण
- **डायटरी फाइबर**: पाचन सुधार, आंतों के स्वास्थ्य और ब्लड शुगर नियंत्रण में मददगार

मेटाबॉलिज़्म, डायबिटीज़ और गट हेल्थ

लाल केले का ग्लाइसेमिक प्रभाव सामान्य केले की तुलना में अपेक्षाकृत संतुलित माना जाता है, खासकर जब इसे सही मात्रा और सही समय पर लिया जाए।इसका फाइबर कंटेंट गट माइक्रोबायोम को सपोर्ट करता है, जो अब मेटाबॉलिक हेल्थ और इम्यूनिटी का अहम आधार माना जा रहा है। डायबिटीज़ और मोटापे से जूझ रहे शहरी भारत में यह पहलू खास महत्व रखता है—हालांकि विशेषज्ञ इस बात पर ज़ोर देते हैं कि इसे संतुलित आहार के हिस्से के रूप में ही देखा जाना चाहिए, किसी चमत्कारी इलाज की तरह नहीं।

स्वास्थ्य से अर्थव्यवस्था तक: किसानों के लिए नई राह

लाल केले की कहानी सिर्फ स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह कृषि अर्थव्यवस्था के लिए भी नए अवसर खोल रही है।स्वास्थ्य-जागरूक उपभोक्ताओं के बीच प्रीमियम और पोषणसमृद्ध फलों की मांग बढ़ने से लाल केला उच्च मूल्य वाली फसल के रूप में उभर रहा है। दक्षिण भारत में इसकी व्यावसायिक खेती ने यह दिखाया है कि सही किस्म चयन, वैज्ञानिक पौध प्रबंधन, और संगठित मार्केटिंग के ज़रिए किसान बेहतर और स्थिर आय अर्जित कर सकते हैं। बिहार और पूर्वी भारत जैसे क्षेत्रों में इसका विस्तार आय विविधीकरण और जोखिम कम करने का प्रभावी साधन बन सकता है।

बदलती थाली, बदलती सोच

आज का उपभोक्ता सिर्फ पेट भरने वाला भोजन नहीं चाहता। वह ऐसा भोजन चाहता है जो बीमारी से पहले सुरक्षा दे। यही वजह है कि जैविक, स्थानीय और पोषणसमृद्ध खाद्य पदार्थों की मांग बढ़ रही है।

निष्कर्ष | जब भोजन ही पहली दवा बने लाल केला कोई फैशन-फूड नहीं, बल्कि पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के संगम का उदाहरण है। यह स्वास्थ्य, पोषण और किसान आय - तीनों को एक साथ जोड़ता है। जब दुनिया भोजन को फिर से दवा के रूप में देखने लगी है, तब लाल केला जैसे देसी सुपरफूड स्वस्थ समाज और समृद्ध कृषि की दिशा में एक ठोस कदम बन सकते हैं। अब समय है 'साधारण फल' की धारणा से बाहर निकलकर 'स्मार्ट पोषण' को अपनाने का - और लाल केला इस बदलाव की कहानी खुद लिख रहा है।

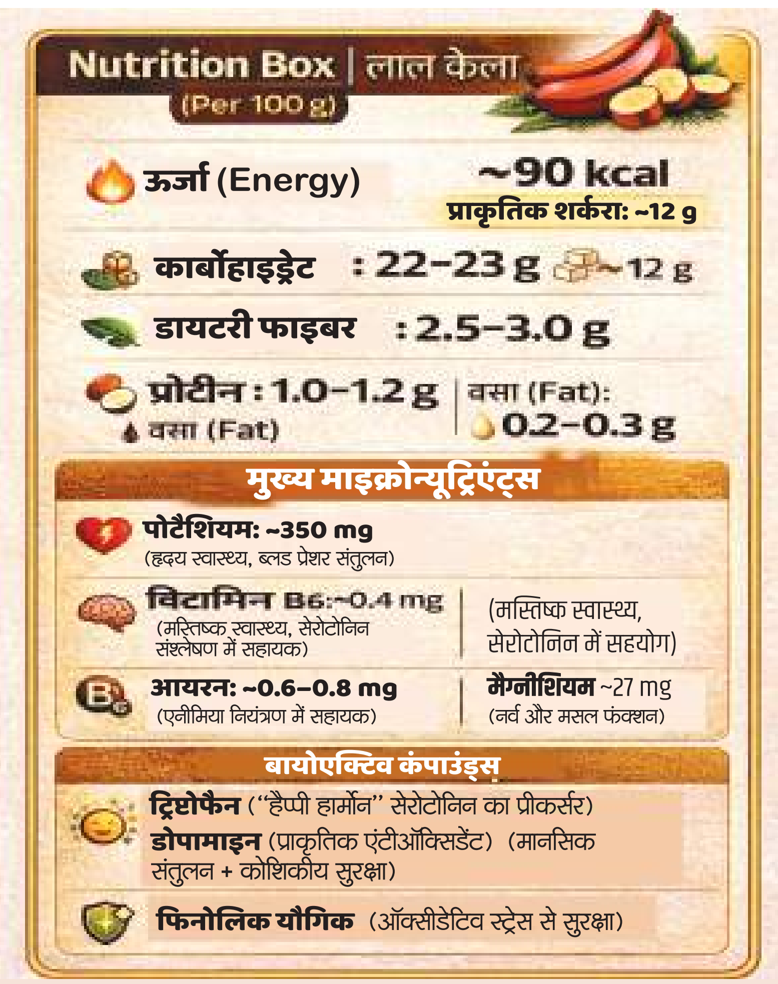

हेल्थ नोट: लाल केला संतुलित आहार का हिस्सा है - यह दवा का विकल्प नहीं, बल्कि पोषण समर्थन है। डायबिटीज़ या विशेष स्वास्थ्य स्थितियों में मात्रा विशेषज्ञ की सलाह से तय करें।

वानस्पतिक मालफॉर्मेशन

(प्रो. (डॉ.) एस. के. सिंह, विभागाध्यक्ष - प्लांट पैथोलॉजी एवं नेमेटोलॉजी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा। पौध रोग विज्ञान और मृदा सूक्ष्मजीविकी में दीर्घ अनुभव के साथ वे जैव नियंत्रण एवं सतत कृषि के प्रमुख विशेषज्ञों में से एक हैं।)

लक्षण, कारण और वैज्ञानिक समाधान

रफ्तार || संवाददता

बाग में अगर आम के पौधे की नई बढ़वार अचानक रुक जाए और पत्तियाँ गुच्छों में सिमटकर पौधा "झाड़ी" जैसा दिखने लगे, तो यह सामान्य अवस्था नहीं है। यह वानस्पतिक मालफॉर्मेशन का संकेत हो सकता है - एक ऐसी वैज्ञानिक समस्या, जो समय रहते न रोकी जाए तो आगे चलकर आम के फूल और उत्पादन दोनों को प्रभावित कर सकती है।

आम का मालफॉर्मेशनः समस्या की जड़

आम (Mangifera indica) विश्व स्तर पर भारत की पहचान है। बावजूद इसके, कई रोग और विकृतियाँ औसत उत्पादकता को प्रभावित करती हैं। इन्हीं में से एक अत्यंत गंभीर समस्या मालफॉर्मेशन है, जो पौधों की वृद्धि और फलन दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

यह विकार मुख्यतः Fusarium mangiferae नामक फफूंद से जुड़ा माना जाता है, पर आधुनिक शोध स्पष्ट करते हैं कि इसमें हार्मोन असंतुलन, पर्यावरणीय कारक और कली-माइट (Aceria mangiferae) की भी सहायक भूमिका है। भारत में इसकी पहली वैज्ञानिक पहचान बिहार के दरभंगा क्षेत्र से दर्ज हुई थी; आज यह कई आम उत्पादक क्षेत्रों में चुनौती बन चुका है।

वानस्पतिक मालफॉर्मेशन क्या है?

इस विकार में पौधे की सामान्य शाखा-वृद्धि रुक जाती है और पत्तियाँ असामान्य रूप से छोटे-छोटे, सघन गुच्छों में निकलने लगती हैं। किसान इसे प्रचलित भाषा में "झाड़ी बनना" या "झुंडदार पत्तियाँ" कहते हैं। समस्या विशेष रूप से नर्सरी पौधों और युवा वृक्षों में अधिक देखी जाती है।

मालफॉर्मेशन के प्रकार

आम में पाया जाने वाला मालफॉर्मेशन मूलतः दो अलग-अलग रूपों में सामने आता है। एक रूप पौधे की शाकीय या वानस्पतिक बढ़वार को प्रभावित करता है, जबकि दूसरा सीधे फूल बनने की प्रक्रिया को बाधित करता है।

- वानस्पतिक मालफॉर्मेशन (Vegetative Malformation)
- पुष्पीय मालफॉर्मेशन (Floral Malformation)

यह लेख विशेष रूप से वानस्पतिक मालफॉर्मेशन पर केंद्रित है यानी वह स्थिति, जिसमें पौधे की नई बढ़वार अपनी प्राकृतिक दिशा से भटककर असामान्य और विकृत रूप ले लेती है।

प्रमुख लक्षण: पहचान कैसे करें?

- **पत्तियों के छोटे-छोटे गुच्छेः** सामान्य लंबी पत्तियों के स्थान पर छोटी, मोटी और सघन पत्तियाँ गुच्छों में विकसित होती हैं।
- **झाड़ी जैसा रूप (Bunchy top appearance):** टहनियाँ अत्यधिक सघन होकर झाड़ी का आकार ले लेती हैं, जिससे पौधे की संरचना असंतुलित दिखती है।
- **वृद्धि का रुकना (Stunted growth):** पौधे की लंबाई और शाखाओं की बढ़वार स्पष्ट रूप से धीमी पड़ जाती है।
- **फलन पर अप्रत्यक्ष प्रभावः** लंबे समय तक संक्रमण बने रहने पर फूल बनने की क्षमता घटती है, और अंततः उत्पादन प्रभावित होता है।

रोग के अनुकूल परिस्थितियाँ

- तापमान: 24–28°C (26 ± 2°C सर्वोत्तम)
- सापेक्षिक आर्द्रता: 65% या अधिक
- घनी छाया, खराब वायु संचार
- अत्यधिक नाइट्रोजन उर्वरक का उपयोग
- युवा पौधों की तीव्र वृद्धि अवस्था

नोट: अत्यधिक ठंड (<10°C) या अधिक गर्मी (>40°C) में रोग की सक्रियता कम देखी जाती है।

रोग के कारण: वैज्ञानिक समझ

हालिया अनुसंधान बताते हैं कि यह विकार किसी एक कारण से नहीं, बल्कि कई कारकों के संयुक्त प्रभाव से विकसित होता है

1. रोगजनक फफूंदः Fusarium mangiferae संक्रमित कलियों और टहनियों में रहकर विकृति उत्पन्न करता है।
2. हार्मोन असंतुलनः ऑक्सिन और साइटोकिनिन जैसे पौध हार्मोनों का असंतुलन असामान्य वृद्धि को बढ़ावा देता है।
3. कली-माइट (Bud mite): Aceria mangiferae रोग के प्रसार में सहायक भूमिका निभाती है।
4. संक्रमित रोपण सामग्रीः संक्रमित कलमों या ग्राफ्टेड पौधों से रोग तेजी से फैलता है।

नवीन वैज्ञानिक दृष्टि

आज एकीकृत रोग प्रबंधन (IDM) को सबसे प्रभावी रणनीति माना जा रहा है। रोगमुक्त रोपण सामग्री और नियमित मॉनिटरिंग से संक्रमण 60–70% तक कम किया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण नई बढ़वार अवधि में जोखिम बढ़ रहा है - इसलिए समय पर निरीक्षण अत्यंत आवश्यक है।

कुलमिलाकर, वानस्पतिक मालफॉर्मेशन आम के पौधों की वृद्धि को गंभीर रूप से प्रभावित करने वाला विकार है। प्रारंभिक अवस्था में पहचान न होने पर भविष्य का फलन और उत्पादन दोनों खतरे में पड़ सकते हैं।

समय पर छंटाई, रोगमुक्त पौध सामग्री, संतुलित पोषण तथा जैविक व रासायनिक उपायों का समन्वित प्रयोग - यही प्रभावी नियंत्रण की कुंजी है। वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाकर आम के बागानों को स्वस्थ, उत्पादक और लाभकारी बनाया जा सकता है।

वानस्पतिक मालफॉर्मेशन का एकीकृत प्रबंधन

1. **संक्रमित टहनियों की छंटाई:** लक्षण दिखते ही प्रभावित टहनियों को 15-20 सेमी नीचे स्वस्थ भाग सहित काटें। कटी सामग्री खेत में न छोड़ें - उसे जला दें।
2. **रोगमुक्त पौध सामग्री:** केवल प्रमाणित नर्सरी से स्वस्थ पौधे लें। संक्रमित शाखाओं से ग्राफ्टिंग न करें।
3. **रासायनिक नियंत्रण:** कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 2 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव। छंटाई के बाद स्प्रे अधिक प्रभावी रहता है।
4. **प्लैनोफिक्स® (NAA) का उपयोग:** अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में 1 मिली/3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। यह हार्मोन संतुलन सुधारने में सहायक पाया गया है।
5. **कोबाल्ट सल्फेट स्प्रे:** गंभीर क्षेत्रों में पुष्पन से पहले 1 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव लाभकारी।
6. **जैविक नियंत्रण:** Trichoderma viride @ 10 ग्राम/पौधा गोबर खाद में मिलाकर प्रयोग करें - यह फफूंद की वृद्धि को रोकता है।
7. **पोषण प्रबंधन:** संतुलित N:P:K उर्वरक दें। अत्यधिक नाइट्रोजन से बचें; सूक्ष्म पोषक तत्वों का संतुलित उपयोग करें।
8. **बाग स्वच्छता:** संक्रमित कलियों और शाखाओं को नियमित हटाएँ; बाग में उचित वायु संचार बनाए रखें।

भारत की वेटलैंड अर्थव्यवस्था से उभरता ग्लोबल सुपरफूड

आज दुनिया के कुल मखाना उत्पादन का 80 प्रतिशत से अधिक भारत में होता है, और इसमें भी बिहार अकेले 85–90 प्रतिशत उत्पादन करता है। यह आँकड़ा मखाना को केवल एक कृषि उत्पाद नहीं, बल्कि रणनीतिक एग्रीबिज़नेस कमोडिटी के रूप में स्थापित करता है। औसतन प्रति हेक्टेयर 2–3 टन कच्चे बीज प्राप्त होते हैं, जो प्रोसेसिंग के बाद लगभग 1 टन पॉप्ड मखाना में बदलते हैं।

रफ्तार || संवाददता

भारत के तालाबों में उगने वाली एक पारंपरिक जलीय फसल आज ग्लोबल हेल्थ-फूड इंडस्ट्री का ध्यान खींच रही है। मखाना- जो लंबे समय से व्रत, आयुर्वेद और घरेलू भोजन का हिस्सा रहा है - अब सुपरफूड, एग्रीबिज़नेस और एक्सपोर्ट रणनीति के केंद्र में आ चुका है। दुनिया के 80 प्रतिशत से अधिक मखाना उत्पादन पर भारत का नियंत्रण है, और इसमें भी बिहार की निर्णायक भूमिका है। लेकिन इस उभार के पीछे श्रम-प्रधान खेती, पारंपरिक प्रोसेसिंग और असंतुलित वैल्यू चेन जैसी चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। यह स्टोरी मखाना की पूरी यात्रा को खोलती है - तालाबों से लेकर सुपरमार्केट शेल्फ़ तक, मल्लाह समुदाय से लेकर नए ब्रांड्स तक, और पारंपरिक वेटलैंड फसल से ग्लोबल सुपरफूड बनने की प्रक्रिया तक। यह सिर्फ़ एक फसल की कहानी नहीं, बल्कि भारत की वेटलैंड अर्थव्यवस्था, ग्रामीण आजीविका और भविष्य के एग्रीबिज़नेस मॉडल की झलक है। बिहार के मिथिला क्षेत्र में फैले सैकड़ों तालाब - जहाँ पानी स्थिर है, सतह पर चौड़े पत्ते तैरते हैं और नीचे की तलहटी में जीवन छिपा होता है - वहीं से शुरू होती है मखाना की कहानी। यह कहानी सिर्फ़ एक फसल की नहीं, बल्कि परंपरा, श्रम, पोषण, बाज़ार और नीति के संगम की है। कभी व्रत-उपवास और आयुर्वेद तक सीमित रहा मखाना आज हेल्थ स्नैक इंडस्ट्री, ऑर्गनाइज़्ड रिटेल, ई-कॉमर्स और ग्लोबल सुपरफूड मार्केट का उभरता सितारा बन चुका है।

वनस्पति विज्ञान और पारंपरिक ज्ञान का संगम

वनस्पति विज्ञान में यूरियाल फेरॉक्स के नाम से जानी जाने वाली यह फसल निम्फेसी (Nymphaeaceae) कुल से संबंधित है। यह एक वर्षीय जलीय फसल है, जो तालाबों, वेटलैंड्स और रुके हुए पानी वाले खेतों में पनपती है। भारत और चीन इसकी मूल भूमि माने जाते हैं।

भारत में मखाना केवल खेत की उपज नहीं रहा - यह संस्कृति और आजीविका का हिस्सा रहा है। आयुर्वेदिक ग्रंथों में इसे बलवर्धक, पाचन-सहायक और रोग-प्रतिरोधक माना गया है। धार्मिक परंपराओं में व्रत-उपवास के दौरान इसका विशेष स्थान रहा है, क्योंकि यह शुद्ध, हल्का और सात्विक भोजन माना जाता है। समय के साथ, जब शहरी उपभोक्ता स्वास्थ्य, कैलोरी काउंट और न्यूट्रिशन लेबल पढ़ने लगे, तब मखाना ने पारंपरिक पहचान से आगे बढ़कर आधुनिक सुपरफूड की भूमिका ग्रहण की।

उत्पादन परिदृश्य: आँकड़ों के पीछे की हकीकत

पिछले एक दशक में मखाना उत्पादन में लगातार वृद्धि देखी गई है। 2014 में जहाँ कुल उत्पादन लगभग 85 हज़ार टन था, वहीं 2023 तक यह बढ़कर 1.30 लाख टन तक पहुँच चुका है। औसतन प्रति हेक्टेयर 2–3 टन कच्चे बीज प्राप्त होते हैं, जो प्रोसेसिंग के बाद लगभग 1 टन पॉप्ड मखाना में बदलते हैं। यह वृद्धि बढ़ती मांग और बेहतर कीमतों का परिणाम है।हालाँकि, तकनीकी हस्तक्षेप अभी भी सीमित है। खेती, कटाई और प्रोसेसिंग - तीनों स्तरों पर उत्पादकता बढ़ाने की पर्याप्त गुंजाइश बनी हुई है।

मखाना उत्पादन में भारत की भूमिका

ग्लोबल प्रोडक्शन में भारत:	80%+
भारत में बिहार की हिस्सेदारी:	85–90%
औसत उपज:	2–3 टन/हेक्टेयर (कच्चा बीज)
पॉप्ड मखाना:	₹1 टन/हेक्टेयर
एक्सपोर्ट हिस्सा:	<5%

एग्रोनॉमिक विशेषताएँ: पानी पर निर्भर खेती

मखाना की खेती का चक्र विशिष्ट है। जनवरी–फरवरी में बीजों का अंकुरण और रोपाई होती है। अप्रैल–मई में फूल आते हैं, और जून से सितंबर के बीच बीजों की कटाई होती है। खेती आज भी मुख्यतः तालाब-आधारित पारंपरिक प्रणाली पर निर्भर है। कुछ क्षेत्रों में खेत-आधारित खेती के प्रयोग हुए हैं, लेकिन वेटलैंड इकोसिस्टम अभी भी इसका प्राकृतिक आधार बना हुआ है। यही कारण है कि मखाना खेती जल-संसाधन प्रबंधन और ग्रामीण पारिस्थितिकी से गहराई से जुड़ी हुई है।

न्यूट्रिशनल प्रोफाइल: सुपरफूड का ठोस आधार

मखाना को सुपरफूड कहने के पीछे भावनात्मक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक आधार है। इसमें उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीन, जटिल कार्बोहाइड्रेट, अत्यंत कम फैट और पर्याप्त डायटरी फाइबर पाया जाता है। मैग्नीशियम और पोटैशियम जैसे मिनरल्स इसे हृदय-स्वास्थ्य के लिए उपयोगी बनाते हैं। कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स के कारण यह डायबिटीज़ रोगियों के लिए उपयुक्त है। फ्लेवोनॉयड्स और एंटीऑक्सीडेंट्स इसके एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-एजिंग गुणों को मजबूत करते हैं। यही कारण है कि आज मखाना को वज़न प्रबंधन, एक्टिव लाइफस्टाइल और क्लीन-ईटिंग ट्रेंड्स से जोड़ा जा रहा है।

मखाना की वैल्यू चेन पाँच चरणों में विभाजित है -

खेती ▸ कटाई ▸ प्रोसेसिंग ▸ ग्रेडिंग ▸ मार्केटिंग

वैल्यू चेन: मेहनत से मुनाफ़े तक का लंबा सफ़र

कटाई सबसे श्रमसाध्य चरण है। बीज तालाब की तलहटी में डूब जाते हैं, जिन्हें मल्लाह समुदाय के प्रशिक्षित मज़दूर हाथ से निकालते हैं। यह प्रक्रिया जोखिमपूर्ण है और पूरी तरह कौशल पर निर्भर करती है। प्रोसेसिंग में सफाई, धूप में सुखाना, सुता ग्रेडिंग सिस्टम, पहली भुनाई, टेम्परिंग और हाई-टेम्परेचर पॉपिंग शामिल है। पारंपरिक पॉपिंग तकनीक में एक मज़दूर दिन में केवल 8-10 किलो ही प्रोसेस कर पाता है - यही कारण है कि प्रोसेसिंग ऑटोमेशन की माँग तेज़ी से बढ़ रही है।

एक्सपोर्ट: बड़ी संभावनाएँ, सीमित उपस्थिति

आज भी कुल उत्पादन का 5 प्रतिशत से कम ही निर्यात हो पाता है। अमेरिका, यूके, यूएई, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे बाज़ारों में इसकी अच्छी मांग है। **एक्सपोर्ट में सीमित हिस्सेदारी का मुख्य कारण है** - क्वालिटी स्टैंडर्ड, ब्रांडिंग और प्रोसेसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी।APEDA के अनुसार, यह सेक्टर अभी भी अनटैप्ड एक्सपोर्ट पोटेंशियल से भरा हुआ है। 2022 में मिथिला मखाना को GI टैग मिलना इस फसल के लिए ऐतिहासिक क्षण रहा। इसके बाद केंद्रीय बजट 2025–26 में मखाना बोर्ड की घोषणा ने इस सेक्टर को संस्थागत समर्थन दिया। प्रोसेसिंग मॉडर्नाइज़ेशन, किसान प्रशिक्षण, इंफ्रास्ट्रक्चर विकास और एक्सपोर्ट प्रमोशन इसके मुख्य उद्देश्य हैं। NABARD, PM-FME, MSME रजिस्ट्रेशन और FSSAI जैसी योजनाएँ भी इस वैल्यू चेन को मज़बूत आधार प्रदान कर रही हैं।

GI टैग: क्यों खास है मिथिला मखाना

2022 में मिथिला मखाना को GI टैग मिलना केवल एक कानूनी मान्यता नहीं थी, बल्कि -

- क्षेत्रीय पहचान की सुरक्षा
- नक़ली उत्पादों पर रोक
- प्रीमियम प्राइसिंग का आधार
- एक्सपोर्ट ब्रांडिंग की शुरुआत

GI टैग ने मखाना को "जनरल कमोडिटी" से निकालकर ओरिजिन-ड्रिवन प्रोडक्ट बनाया -जो ग्लोबल मार्केट में सबसे ज़्यादा मायने रखता है।

ग्रेडिंग और गुणवत्ता: कीमत का असली निर्धारक

मखाना बाज़ार में कीमत का सबसे बड़ा निर्धारक ग्रेडिंग है। 7-सुता (»21 मिमी) मखाना प्रीमियम और एक्सपोर्ट क्वालिटी माना जाता है। 6-सुता हाई-एंड रिटेल में जाता है, जबकि 4–5 सुता घरेलू कुकिंग ग्रेड के रूप में बिकता है। गुणवत्ता मानकीकरण और प्रोसेसिंग टेक्नोलॉजी के अभाव में किसान और छोटे प्रोसेसर इस मूल्य श्रृंखला का पूरा लाभ नहीं उठा पाते।

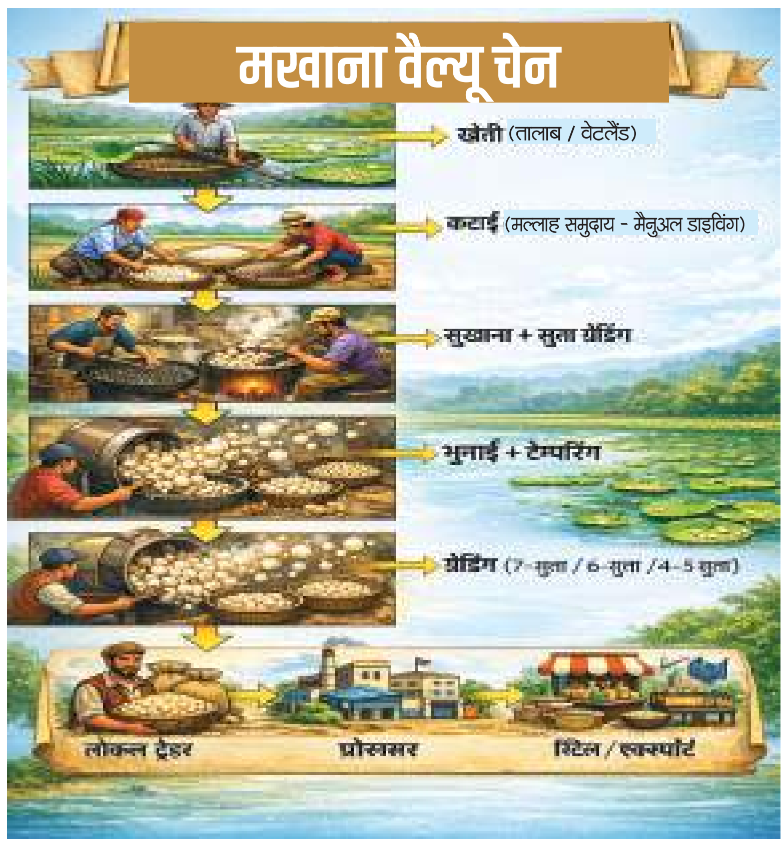

(यह लेख डॉ. सिमरनजीत कौर, स्कूल ऑफ बिज़नेस स्टडीज़, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय तथा डॉ. हरिंदर सिंह, डायरेक्टर, एक्सीलेंट इंटरप्राइजेज, खन्ना, पंजाब द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किया गया है।)

घरेलू बाज़ार: हेल्थ ट्रेंड का असर

2024 में भारतीय मखाना बाज़ार का आकार लगभग ■3.5 अरब आँका गया। संगठित रिटेल, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, हेल्थ-फूड स्टोर्स और व्रत-उपवास की खपत इसकी वृद्धि को आगे बढ़ा रही है।फ्लेवर्ड मखाना, रोस्टेड स्नैक्स और रेडी-टू-ईट पैक अब शहरी उपभोक्ताओं के बीच तेज़ी से लोकप्रिय हो रहे हैं।

भविष्य की दिशा: अवसर स्पष्ट हैं

भविष्य का रास्ता साफ़ है - फ्लेवर्ड मखाना स्नैक्स, रेडी-टू-ईट उत्पाद, मखाना आटा, प्रोटीन पाउडर, ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन, D2C ब्रांड और पॉपिंग टेक्नोलॉजी में ऑटोमेशन।सही नीति समर्थन और निवेश के साथ मखाना किसान आय, ग्रामीण रोज़गार और निर्यात आय का मज़बूत आधार बन सकता है।मखाना की यात्रा एक पारंपरिक वेटलैंड फसल से वैश्विक सुपरफूड बनने की कहानी है।

सरसों–चना के बाद खेत को कैसे न थकाएँ

क्योंकि खरीफ से पहले ज़मीन को भी एक "रिकवरी पीरियड" चाहिए

> यहीं एक भ्रम जन्म लेता है। खाली खेत आराम नहीं करता। वह बस जैविक रूप से सुस्त हो जाता है। "पैदावार बहुत ज़्यादा नहीं थी, लेकिन अगली खरीफ में खाद आधी लगी। तभी समझ आया - खेत को भी रिहैब चाहिए।"

रफ्तार || संवाददता

मार्च की दोपहर में खेत अक्सर खाली दिखते हैं। सरसों की बालियाँ खलिहान तक पहुँच चुकी हैं, चना तौल में है। बाहर से देखने पर लगता है - काम निपट गया। लेकिन खेत के भीतर एक अदृश्य थकान जमा हो चुकी होती है। इसे खेती-किसानी की भाषा में कम समझा जाता है, या कई बार नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है. लेकिन वैज्ञानिक शब्दों में यही 'सॉइल फटीग' (soil fatigue) यानी मिट्टी की थकान है - मिट्टी का वह बिंदु जहाँ वह उपज देना बंद नहीं करती, पर संघर्ष करने लगती है।

खेत थकता है, क्योंकि हम उसे कभी रुकने नहीं देते

सरसों और चना रबी की सबसे भरोसेमंद फसलें हैं। कम जोखिम, तय बाज़ार, और साफ़ नक़दी। लेकिन यही भरोसा अक्सर खेत पर भारी पड़ता है। सरसों मिट्टी से सल्फर और नमी खींच लेती है, जबकि चना अपनी गहरी जड़ों के ज़रिये सूक्ष्म पोषक तत्वों पर दबाव डालता है। दोनों के बाद किसान अक्सर सोचता है—अब खेत को खाली छोड़ देंगे, आराम मिलेगा।

रीन मैन्योरिंग: खेती नहीं, मरम्मत

मार्च-अप्रैल का समय खेत सुधार का सबसे सस्ता और असरदार मौका होता है। इसी समय की गई ग्रीन मैन्योरिंग, अगले पूरे सीज़न की दिशा तय कर देती है।ढैंचा या सन जैसी फसलें 40-50 दिन में खड़ी होकर मिट्टी को ढक लेती हैं। जब इन्हें हरी अवस्था में पलट दिया जाता है, तो मिट्टी के भीतर सूक्ष्मजीवों की गतिविधि अचानक बढ़ जाती है। यह वही प्रक्रिया है, जिसे किसान आम भाषा में कहता है - "खेत फिर से चल पड़ा।" इसका असर खरीफ में दिखता है - खाद कम लगती है, नमी ज़्यादा रुकती है, और जड़ें ज़मीन से लड़ती नहीं, जुड़ती हैं।

खेत को खाली मत छोड़िए, लेकिन बोझ भी मत डालिए

ग्रीन मैन्योरिंग हर किसान नहीं कर पाता। पानी, समय और संसाधन सब आड़े आते हैं। ऐसे में एक दूसरा रास्ता खुलता है - शार्ट रिकवरी क्रॉप्स। मूंग, उड़द या हरी लोबिया जैसी फसलें दो काम करती हैं। पहला, खेत को जीवित रखती हैं। दूसरा, किसान को थोड़ी-सी लेकिन समय पर आमदनी देती हैं। ये फसलें मिट्टी से लेती कम हैं और लौटाती ज़्यादा। यही वजह है कि जिन खेतों में चना के बाद मूंग बोई जाती है, वहाँ खरीफ में धान या बाजरा कम संघर्ष करता है।

4 साल बेमिसाल

उत्तराखण्ड में समान नागरिक संहिता (UCC)

- राज्य में 27 जनवरी 2025 से लागू हुई UCC
- UCC लागू करने वाला स्वतंत्र भारत का पहला राज्य बना उत्तराखण्ड
- सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और समान अधिकारों की दिशा में उठाया गया साहसिक कदम

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड | @DIPR_UK | UttarakhandDIPR | www.uttarainformation.gov.in

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जापान यात्रा के पहले दिन साइन हुए लगभग 11,000 करोड़ रुपये के MoU अब भी चर्चा में हैं - इसलिए नहीं कि वे नए हैं, बल्कि इसलिए कि वे एक बड़े सवाल की ओर इशारा करते हैं

11,000 करोड़ के MoU, बड़े दावे और ज़मीनी हकीकत का सवाल

टोक्यो के बाद: निवेश की परीक्षा में उत्तर प्रदेश

रफ्तार || संवाददता

टोक्यो में हुई बैठकों की गूँज अब भी बनी हुई है। मंच समेटे जा चुके हैं, प्रेज़ेंटेशन फाइलें बंद हो चुकी हैं और निवेश प्रतिनिधिमंडल अगले गंतव्यों की ओर बढ़ गया है। लेकिन उत्तर प्रदेश के लिए असली कहानी यात्रा के बाद शुरू होती है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जापान यात्रा के पहले दिन साइन हुए लगभग 11,000 करोड़ रुपये के MoU अब भी चर्चा में हैं - इसलिए नहीं कि वे नए हैं, बल्कि **इसलिए कि वे एक बड़े सवाल की ओर इशारा करते हैं:** क्या उत्तर प्रदेश निवेश के वादों को अब नतीजों में बदल पाएगा?

MoU क्यों मायने रखते हैं : ये MoU न तो अंतिम निवेश हैं, न ही तत्काल रोज़गार का वादा। लेकिन वे यह ज़रूर बताते हैं कि जापानी कंपनियाँ उत्तर प्रदेश को संभावना के राज्य के रूप में देख रही हैं - कम से कम बातचीत के स्तर पर। राष्ट्रीय और सरकारी रिपोर्टों के अनुसार, ये समझौते कृषि उपकरण, औद्योगिक मशीनरी, ऑटोमोटिव इलेक्ट्रॉनिक्स, एडवांस्ड मटीरियल और इंडस्ट्रियल प्रिंटिंग जैसे क्षेत्रों से जुड़े हैं।

कौन-कौन सी कंपनियाँ बातचीत की मेज़ पर थीं

आधिकारिक और मीडिया रिपोर्ट्स में जिन कंपनियों के नाम सामने आए, उनमें शामिल हैं: कुबोटा कॉर्पोरेशन, मिंडा कॉर्पोरेशन, जापान एविएशन इलेक्ट्रॉनिक्स इंडस्ट्री, नागासे एंड कंपनी, सेइको एडवांस।इन नामों का महत्व सिर्फ़ उनके आकार में नहीं, बल्कि इस तथ्य में है कि ये कंपनियाँ आमतौर पर लंबे मूल्यांकन और केयरफुल एंट्री के लिए जानी जाती हैं। यही कारण है कि MoU को प्रतिबद्धता से ज़्यादा रुचि की औपचारिक स्वीकृति के रूप में पढ़ा जा रहा है।

टोक्यो रोड शो: भाषा बदली, लहजा बदला

टोक्यो रोड शो में मुख्यमंत्री का स्वर पारंपरिक राजनीतिक भाषण से अलग था। कम भावनात्मक अपील, ज़्यादा प्रशासनिक आत्मविश्वास। उन्होंने उत्तर प्रदेश को एक ऐसे राज्य के रूप में पेश किया जहाँ बड़ा उपभोक्ता बाज़ार है, इंफ्रास्ट्रक्चर विस्तार की प्रक्रिया चल रही है और नीति-स्तर पर निरंतरता का दावा किया जा रहा है। अपने संबोधन में उन्होंने राज्य की जनसंख्या, उभरते इंफ्रास्ट्रक्चर और युवा कार्यबल का ज़िक्र किया और कहा कि पिछले वर्षों में आर्थिक संकेतकों में सुधार हुआ है। यह दावा सरकारी आंकड़ों और नीति वक्तव्यों पर आधारित था।

FACT vs PROJECTION

क्या पक्का है, क्या आगे की बात है : FACT (पुष्ट)

- जापान यात्रा के दौरान लगभग ₹11,000 करोड़ के MoU साइन हुए
- शामिल कंपनियों और सेक्टरों की सूची सार्वजनिक रिपोर्ट्स में दर्ज है
- टोक्यो में उत्तर प्रदेश का आधिकारिक निवेश रोड शो आयोजित हुआ

PROJECTION (आगे की प्रक्रिया):

- इन MoU में से कितना निवेश वास्तव में ज़मीन पर आएगा
- किस समय-सीमा में उत्पादन या रोजगार शुरू होगा
- जापान इंडस्ट्रियल सिटी का अंतिम स्वरूप और क्रियान्वयन

जापान इंडस्ट्रियल सिटी: विचार, योजना और इंतजार

यात्रा के दौरान नोएडा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा के पास यमुना एक्सप्रेसवे इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथॉरिटी (YEIDA) क्षेत्र में प्रस्तावित जापान इंडस्ट्रियल सिटी का उल्लेख किया गया। सरकारी बयानों में कहा गया है कि लगभग 500 एकड़ भूमि जापानी निवेशकों के लिए चिन्हित करने की योजना है। लेकिन इस स्तर पर यह एक रणनीतिक प्रस्ताव है - जिसका असर तब ही मापा जा सकेगा, जब डिज़ाइन, टाइमलाइन और निवेश संरचना सार्वजनिक होंगी।

जापान से आगे: बड़ा संदर्भ

मुख्यमंत्री की यह यात्रा जापान तक सीमित नहीं रही। सिंगापुर में भी निवेश और सहयोग को लेकर बैठकें हुईं। हालांकि, मीडिया में आए बड़े कुल आंकड़े (लाखों करोड़ रुपये के प्रस्ताव) जापान और सिंगापुर दोनों यात्राओं को मिलाकर बताए गए हैं और इनमें प्रस्ताव तथा MoU दोनों शामिल हैं। फिलहाल, केवल जापान में साइन हुए लगभग 11,000 करोड़ रुपये के MoU को ही पूरी तरह पुष्ट माना जा सकता है।

टोक्यो यात्रा अब खबर नहीं, कसौटी है

यह दौरा उत्तर प्रदेश के लिए किसी एक निवेश सौदे से अधिक, एक संदेश के रूप में देखा जा रहा है कि राज्य अब वैश्विक निवेशकों के सामने खुद को सुनियोजित और तैयार दिखाना चाहता है।

उत्तर प्रदेश के सामने सवाल यह नहीं है कि निवेशक आए या नहीं, बल्कि यह है कि क्या राज्य उन्हें रोके रख पाएगा?

MoU भरोसे की पहली परत होते हैं। उसके बाद आता है - भूमि, बिजली, लॉजिस्टिक्स, और सबसे कठिन - प्रशासनिक निरंतरता। इन समझौतों का असली मूल्य तब तय होगा, जब वे फ़ैक्ट्रियों, सप्लाई चेन और स्थानीय रोज़गार में बदलेंगे।

मार्च 2026 में, कहानी अभी अधूरी है। लेकिन यह भी साफ़ है कि उत्तर प्रदेश अब वैश्विक निवेश मंच पर सिर्फ़ दर्शक नहीं रहना चाहता।

फिलहाल, टोक्यो से जो संकेत आया है, वह उम्मीद से अधिक संयमित और व्यावहारिक है और शायद यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। ऐसे में इस कहानी का अगला अध्याय टोक्यो में नहीं - यूपी की ज़मीन पर लिखा जाएगा।

सांस्कृतिक संवाद, कारोबारी संकेत

निवेश प्रस्तुति के बीच मुख्यमंत्री ने भारत-जापान संबंधों के सांस्कृतिक पहलुओं का भी उल्लेख किया। भगवान श्रीराम और भगवान बुद्ध से जुड़े स्थलों - कपिलवस्तु, सारनाथ, श्रावस्ती और कुशीनगर - का संदर्भ देते हुए उन्होंने दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक और सभ्यतागत संवाद की बात कही। मुख्यमंत्री के भाषण का यह हिस्सा किसी आर्थिक अनुबंध से ज़्यादा डिप्लोमैटिक सिग्नलिंग था। निवेश प्रस्तुति से अधिक सॉफ्ट डिप्लोमेसी का संकेत था - जिसका उद्देश्य कारोबारी माहौल को सांस्कृतिक सहजता से जोड़ना माना जा रहा है। मुख्यमंत्री को यह ज्ञात था कि कारोबार केवल बैलेंस शीट नहीं, भरोसे का रिश्ता भी होता है।

शहरों में गमलों के पौधों की देखभाल

रफ्तार || संवाददता

शहरों में अब गार्डनिंग सिर्फ बगीचों तक सीमित नहीं रही। बालकनी, छत और खिड़की के पास रखे कुछ गमले भी एक छोटे-से शहरी बगीचे का रूप ले लेते हैं। लेकिन अप्रैल और मई की तेज गर्मी इन पौधों के लिए सबसे कठिन समय होता है। सीमित मिट्टी, कंक्रीट की गर्म सतह और सीधी धूप मिलकर गमलों के तापमान को तेजी से बढ़ा देती है। ऐसे में थोड़ी समझदारी और सही देखभाल से इन छोटे शहरी बगीचों को गर्मियों में भी हरा-भरा रखा जा सकता है। शहरी इलाकों में पौधों के सामने सबसे बड़ी चुनौती कंक्रीट की गर्मी होती है। छतें और बालकनियां दिन भर सूरज की किरणों को सोखती हैं और शाम तक गर्म बनी रहती हैं। खुले खेतों में पौधों की जड़ें मिट्टी में गहराई तक फैल सकती हैं, जहां नमी और तापमान अपेक्षाकृत स्थिर रहते हैं। लेकिन गमलों में लगे पौधों की जड़ें सीमित जगह में ही रहती हैं। तेज धूप पड़ते ही मिट्टी जल्दी सूख जाती है और जड़ों को तनाव महसूस होने लगता है। यही कारण है कि शहरों में गार्डनिंग करते समय मौसम के अनुसार देखभाल की रणनीति बदलनी पड़ती है।

धूप से बचाव: जरूरी संतुलन

पौधों के लिए धूप जरूरी है, लेकिन गर्मियों की दोपहर की धूप कई बार नुकसानदेह हो सकती है। बालकनी गार्डन में पौधों को इस तरह रखना चाहिए कि उन्हें सुबह की धूप मिले, लेकिन दोपहर की तीखी किरणों से बचाव हो सके। कई लोग इसके लिए ग्रीन नेट या शेड नेट का उपयोग करते हैं, जिससे धूप छनकर आती है और पौधे सुरक्षित रहते हैं। यदि छत पर गार्डन है, तो गमलों को एक साथ समूह में रखने से भी मिट्टी जल्दी सूखने से बचती है।

मिट्टी को ठंडा रखने की तकनीक

गर्मी में पौधों की जड़ों को सुरक्षित रखने के लिए मिट्टी का तापमान कम रखना जरूरी होता है। इसके लिए मल्चिंग एक प्रभावी उपाय है। गमले की मिट्टी के ऊपर सूखी पत्तियां, घास या नारियल की भूसी बिछा देने से नमी लंबे समय तक बनी रहती है और मिट्टी जल्दी गर्म नहीं होती। इसके अलावा मिट्टी के गमले प्लास्टिक के गमलों की तुलना में गर्मी को कम सोखते हैं, जिससे पौधों की जड़ों को अतिरिक्त सुरक्षा मिलती है।

पानी: गर्मियों की सबसे बड़ी जरूरत

गर्मियों में पौधों को पर्याप्त पानी देना जरूरी है, लेकिन पानी देने का तरीका भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अक्सर लोग तेज गर्मी देखकर दिन में कई बार पानी डाल देते हैं। इससे मिट्टी बहुत गीली हो सकती है और जड़ों को ऑक्सीजन नहीं मिलती। दूसरी ओर यदि पानी देर से दिया जाए तो पौधा जल्दी मुरझाने लगता है। सुबह जल्दी पानी देना सबसे अच्छा माना जाता है, क्योंकि उस समय तापमान कम होता है और मिट्टी दिन भर नमी को बनाए रखती है। बहुत गर्म दिनों में शाम को हल्का पानी देना भी पौधों को राहत दे सकता है। गमलों की मिट्टी को समय-समय पर छूकर देखना एक सरल तरीका है जिससे पता चल जाता है कि पौधे को पानी की जरूरत है या नहीं।

हवा और दूरी का महत्व

गमलों के पौधों को बहुत पास-पास रखने से हवा का प्रवाह कम हो जाता है। गर्मियों में यह स्थिति पौधों के लिए मुश्किल पैदा कर सकती है। यदि पौधों के बीच थोड़ी दूरी रखी जाए तो हवा आसानी से बहती रहती है, जिससे तापमान संतुलित रहता है और फफूंद जैसी समस्याओं का खतरा भी कम हो जाता है।

शहरों में तापमान और पौधों पर असर

शहरी क्षेत्रों में तापमान अक्सर आसपास के ग्रामीण इलाकों से 3–5°C अधिक दर्ज किया जाता है। इसे वैज्ञानिक भाषा में Urban Heat Island Effect कहा जाता है। इस अतिरिक्त गर्मी का असर सबसे ज्यादा छोटे गमलों में लगे पौधों पर पड़ता है, क्योंकि मिट्टी जल्दी गर्म और सूखी हो जाती है।

गर्मियों के लिए बालकनी गार्डन के 10 मजबूत पौधे

कुछ पौधे गर्म मौसम को आसानी से सहन कर लेते हैं और शहरों में गमले में उगाने के लिए अच्छे विकल्प बनते हैं। तुलसी, एलोवेरा, मनी प्लांट, गुड़हल, पोर्टुलाका (मॉस रोज), सदाबहार, मिर्च, करी पत्ता, लेमन ग्रास, पुदीना ये पौधे अपेक्षाकृत कम देखभाल में भी गर्मियों में अच्छे से बढ़ते हैं।

गमले में पौधों की 6 सबसे आम गलतियाँ

गर्मी में पौधों को नुकसान अक्सर मौसम से ज्यादा देखभाल की गलतियों से होता है। दोपहर की धूप में पानी देना, गमले में पानी जमा रहने देना, बहुत छोटे गमले में पौधा लगाना, लंबे समय तक मिट्टी न बदलना, पौधों को बहुत पास रखना, छाया की व्यवस्था न करना, इन गलतियों से बचकर गमलों के पौधों को लंबे समय तक स्वस्थ रखा जा सकता है।

शहर में छोटा बगीचा, बड़ी राहत

तेज गर्मी के बीच घर की बालकनी या छत पर हरे पौधे एक अलग ही सुकून देते हैं। वे न केवल घर की सुंदरता बढ़ाते हैं, बल्कि वातावरण को भी ताजा बनाते हैं। थोड़ी समझदारी और नियमित देखभाल के साथ शहरों में भी एक छोटा-सा हरा संसार बनाया जा सकता है। गर्मियों में गार्डनिंग का रहस्य यही है कि पौधों की जरूरतों को समझा जाए—पानी, छाया और मिट्टी का संतुलन बनाए रखा जाए। तब कंक्रीट के बीच भी हरियाली लंबे समय तक बनी रह सकती है।

जब 'चमत्कारी किस्म' ही कमजोर पड़ गई

पैदावार में गिरावट, मिलों पर दबाव और नई किस्म की तलाश में उद्योग

रफ्तार || संवाददता

चीनी सीजन 2025-26 के आख़िरी चरण में उद्योग और किसानों के सामने कई सवाल एक साथ खड़े हैं। कभी उत्तर भारत की खेती को बदल देने वाली गन्ने की किस्म Co-0238 अब रोगों की मार झेल रही है, पैदावार पर दबाव बढ़ रहा है और मिलों के सामने गन्ना उपलब्धता की चुनौती खड़ी हो रही है। ऐसे में नई किस्मों और बेहतर खेती प्रणाली की तलाश पूरे चीनी उद्योग के लिए एक जरूरी सवाल बन गई है। उत्तर भारत के गन्ना खेतों में इस साल एक अलग तरह की बेचैनी दिखाई देती है। कई जिलों में किसान कह रहे हैं कि फसल तो खड़ी है, लेकिन वजन पहले जैसा नहीं रहा। उधर चीनी मिलों के सामने भी अलग चुनौती है - गन्ना उपलब्धता का दबाव। गन्ना भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण फसल है और चीनी उद्योग के साथ-साथ एथेनॉल कार्यक्रम का भी आधार है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में रोगों के बढ़ते प्रकोप, मौसम की अनिश्चितता और किस्मों के तेजी से पुराने पड़ने के कारण उत्पादन पर दबाव बढ़ा है। इसका असर अब पूरे उद्योग की आपूर्ति श्रृंखला पर दिखाई देने लगा है।

नई उम्मीद : Co-20016

इसी पृष्ठभूमि में वैज्ञानिकों की नजर अब नई गन्ना किस्मों पर है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के तहत काम करने वाले शुगरकेन ब्रीडिंग इंस्टीट्यूट, कोयंबटूर ने गन्ने की नई किस्म Co-20016 विकसित की है। इस किस्म का परीक्षण विभिन्न शोध केंद्रों में चल रहा है और प्रारंभिक परीक्षणों में इसके परिणाम उत्साहजनक बताए जा रहे हैं। इसे कई विशेषज्ञ Co-0238 के संभावित विकल्प के रूप में देख रहे हैं, हालांकि इसकी व्यापक खेती के लिए औपचारिक स्वीकृति की प्रक्रिया पूरी होना आवश्यक है। निजी चीनी मिलों के संगठन इंडियन शुगर एंड बायो-एनर्जी मैन्युफैक्चर्स एसोसिएशन (ISMA) ने भी इस किस्म को जल्द मंजूरी दिलाने के लिए प्रयास तेज किए हैं। उद्योग का मानना है कि अगर नई किस्म समय पर किसानों तक पहुँचती है तो उत्पादकता में सुधार संभव है।

जब सफलता ही जोखिम बन गई

पिछले दशक में उत्तर भारत में गन्ने की खेती का चेहरा बदलने वाली किस्म Co-0238 को एक समय "चमत्कारी किस्म" कहा गया था। इस किस्म ने पारंपरिक किस्मों की तुलना में गन्ने की उपज और चीनी रिकवरी दोनों बढ़ाई थीं और तेजी से बड़े क्षेत्र में फैल गई थी। लेकिन समय के साथ इसकी सीमाएँ भी सामने आने लगीं। कई इलाकों में रेड रॉट जैसे रोगों के प्रकोप ने इस किस्म की उत्पादकता को प्रभावित किया है। जब खेती का बड़ा हिस्सा एक ही किस्म पर निर्भर हो जाता है, तो रोग का असर भी व्यापक रूप से दिखाई देता है। यही स्थिति कई गन्ना बेल्टों में देखी जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि किसी एक किस्म पर अत्यधिक निर्भरता लंबे समय में जोखिम पैदा करती है और यही कारण है कि अब नई किस्मों की तलाश तेज़ हो गई है।

गन्ना संकट और चीनी उद्योग

गन्ना उत्पादन में दबाव का असर इस साल चीनी मिलों के संचालन पर भी दिखाई दिया है। नेशनल फेडरेशन ऑफ कोऑपरेटिव शुगर फैक्ट्रियों के आंकड़ों के अनुसार 2025-26 के सीजन में देशभर में 536 चीनी मिलों ने पेराई शुरू की थी। फरवरी के अंत तक इनमें से 248 मिलें पेराई बंद कर चुकी थीं, जबकि पिछले साल इसी समय तक यह संख्या 186 थी। यह संकेत देता है कि कई मिलों के पास गन्ना आपूर्ति अपेक्षा से पहले समाप्त हो गई।

गर्मी से पहले पशुओं को कैसे बचाएँ

मार्च के साथ ही खेतों में फसल पकने लगती है और मौसम का मिज़ाज भी बदलने लगता है। तापमान धीरे-धीरे बढ़ता है और आने वाली तेज गर्मी के संकेत मिलने लगते हैं। यही वह समय है जब किसान अगर अपने पशुओं की देखभाल की तैयारी कर लें, तो अप्रैल-मई की कठोर गर्मी से होने वाले नुकसान को काफी हद तक रोका जा सकता है। दुधारू पशुओं के लिए यह मौसम विशेष रूप से संवेदनशील होता है, क्योंकि तापमान बढ़ते ही उनके शरीर पर दबाव बढ़ने लगता है और इसका असर सीधे दूध उत्पादन तथा स्वास्थ्य पर दिखाई देता है।

THI स्तर	स्थिति	पशुओं पर प्रभाव
72 से कम	सामान्य	पशु आरामदायक स्थिति में
72-79	हल्का तनाव	दूध उत्पादन थोड़ा घट सकता है
80-89	मध्यम तनाव	पशु तेज सांस लेते हैं, चारा कम खाते हैं
90 से अधिक	गंभीर तनाव	स्वास्थ्य और उत्पादन पर गंभीर असर

पानी: गर्मी से राहत का सबसे सरल उपाय

गर्मी के मौसम में पशुओं की सबसे बड़ी जरूरत पानी होती है। पशु के शरीर का बड़ा हिस्सा पानी से बना होता है और तापमान बढ़ने पर शरीर को ठंडा रखने के लिए पानी की आवश्यकता भी बढ़ जाती है। यदि पशु को पर्याप्त पानी न मिले तो वह जल्दी थक जाता है, चारा कम खाने लगता है और दूध उत्पादन भी घटने लगता है। यही कारण है कि गर्मी के महीनों में पशुओं को बार-बार साफ और ताजा पानी उपलब्ध कराना बेहद जरूरी हो जाता है। गांवों में अक्सर पानी की टंकी या बड़े बर्तनों का उपयोग किया जाता है, जिससे पशु अपनी आवश्यकता के अनुसार पानी पी सकें। पानी के बर्तनों की नियमित सफाई भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि गर्म मौसम में गंदे पानी में बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं और इससे पशुओं के बीमार पड़ने का खतरा बढ़ जाता है।

हीट स्ट्रेस: गर्मी का अदृश्य दबाव

गर्मी के मौसम में पशुओं पर पड़ने वाला सबसे बड़ा असर हीट स्ट्रेस के रूप में सामने आता है। जब वातावरण का तापमान और नमी मिलकर पशु के शरीर की प्राकृतिक ताप-नियंत्रण प्रणाली को प्रभावित करते हैं, तो पशु अपने शरीर का तापमान सामान्य बनाए रखने के लिए अतिरिक्त ऊर्जा खर्च करने लगता है। इस स्थिति में पशु अक्सर सुस्त दिखाई देता है, तेज सांस लेने लगता है और चारा कम खाने लगता है। कई बार किसान इसे सामान्य थकान समझ लेते हैं, जबकि वास्तव में यह शरीर पर पड़ रहे तापीय दबाव का संकेत होता है। दुधारु गायों और भैंसों में इसका असर जल्दी दिखाई देता है - दूध की मात्रा कम होने लगती है और पशु बेचैन रहता है। इसलिए गर्मी से पहले ही ऐसे प्रबंध करना जरूरी है जिससे पशु को अत्यधिक तापमान का सामना कम करना पड़े।

छाया की व्यवस्था: गर्मी से प्राकृतिक सुरक्षा

तेज धूप पशुओं के शरीर के तापमान को तेजी से बढ़ा देती है। इसलिए पशुशाला में छाया की सही व्यवस्था गर्मी से बचाव का महत्वपूर्ण उपाय है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में पशुओं को खुले स्थान में बांधा जाता है, जहां दिन भर धूप पड़ती रहती है। ऐसी स्थिति में पशु लगातार गर्मी के संपर्क में रहते हैं और धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य प्रभावित होने लगता है। पशुशाला की छत, दीवारों की दिशा और हवा के आवागमन का ध्यान रखकर तापमान को कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। यदि पशुशाला की छत टिन की हो, तो उस पर घास या बोरी डाल देने से अंदर की गर्मी कम की जा सकती है। खुले स्थानों पर पेड़ों की छाया भी पशुओं के लिए प्राकृतिक राहत का काम करती है। दोपहर के समय, जब सूरज सबसे तेज होता है, तब पशुओं को सीधे धूप में रखने से बचाना विशेष रूप से आवश्यक होता है।

आहार और देखभाल का संतुलन

गर्मी बढ़ने पर पशु अक्सर कम चारा खाते हैं, जिससे उनकी ऊर्जा और दूध उत्पादन प्रभावित हो सकता है। इसलिए इस मौसम में संतुलित आहार और खनिज तत्वों की उपलब्धता पर ध्यान देना जरूरी होता है। हरा चारा, खनिज मिश्रण और पर्याप्त नमक पशुओं को गर्मी के मौसम में ऊर्जा बनाए रखने में मदद करते हैं। साथ ही चारा खिलाने का समय भी महत्वपूर्ण होता है—सुबह जल्दी और शाम को ठंडे समय में चारा देने से पशु उसे बेहतर तरीके से खा पाते हैं।

शरीर को ठंडा रखने के छोटे उपाय

गर्मी के दिनों में पशुओं को समय-समय पर ठंडक पहुंचाना भी जरूरी होता है। कई किसान अपने पशुओं को दिन में एक या दो बार पानी से नहलाते हैं, जिससे शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है और पशु को आराम मिलता है। भैंसों के लिए पानी या कीचड़ का कुंड विशेष रूप से उपयोगी होता है, क्योंकि भैंसें स्वभाव से पानी में बैठकर शरीर को ठंडा रखना पसंद करती हैं। इसके अलावा पशुशाला में हल्का पानी छिड़कने या हवा के लिए पर्याप्त जगह रखने से भी वातावरण अपेक्षाकृत ठंडा बना रहता है।

समय रहते तैयारी ही सबसे बड़ा बचाव

गर्मी का मौसम हर साल आता है, लेकिन उसके प्रभाव को कम करना काफी हद तक किसान की तैयारी पर निर्भर करता है। यदि पानी, छाया और पोषण की व्यवस्था पहले से कर ली जाए तो पशुओं को गर्मी से होने वाले तनाव से बचाया जा सकता है। स्वस्थ पशु ही किसान की आय और आजीविका का आधार होते हैं। इसलिए मौसम बदलने के साथ-साथ उनकी देखभाल की रणनीति भी बदलना जरूरी है। थोड़ी-सी सावधानी और समय पर की गई तैयारी गर्मी के कठिन महीनों को पशुओं के लिए सुरक्षित बना सकती है।

गर्मी के संकेत: पशु बता देता है

कई बार किसान को यह समझ नहीं आता कि पशु पर गर्मी का असर शुरू हो गया है। वास्तव में पशु अपने व्यवहार से इसके संकेत देने लगता है। यदि पशु तेज सांस लेने लगे, बार-बार पानी पीने लगे या चारा कम खाने लगे, तो यह संकेत हो सकता है कि उस पर गर्मी का दबाव बढ़ रहा है। कई पशु मुंह खोलकर सांस लेते दिखाई देते हैं या बार-बार खड़े रहते हैं। दूध देने वाले पशुओं में इसका पहला असर अक्सर दूध की मात्रा में कमी के रूप में दिखाई देता है। यदि ऐसे संकेत दिखें तो तुरंत पानी, छाया और ठंडक की व्यवस्था बढ़ा देना चाहिए।

हीट स्ट्रेस इंडेक्स (Heat Stress Index) कब बढ़ जाता है खतरा

गर्मी के मौसम में पशुओं पर पड़ने वाले तापीय दबाव को समझने के लिए वैज्ञानिक एक मापदंड का उपयोग करते हैं जिसे हीट स्ट्रेस इंडेक्स या Temperature-Humidity Index (THI) कहा जाता है। इसमें केवल तापमान ही नहीं, बल्कि हवा में मौजूद नमी को भी ध्यान में रखा जाता है। जब तापमान और नमी दोनों बढ़ जाते हैं, तो पशुओं के शरीर के लिए गर्मी सहन करना और कठिन हो जाता है। दुधारू पशुओं के लिए THI का स्तर यह बताता है कि गर्मी का असर सामान्य है या खतरनाक स्थिति बन रही है। विशेषज्ञों के अनुसार, जब THI 72 से ऊपर जाने लगता है, तब से ही दुधारू पशुओं में गर्मी का असर दिखने लगता है। इसलिए मार्च के अंत से ही पानी, छाया और ठंडक की व्यवस्था बढ़ा देना पशुपालकों के लिए लाभकारी होता है।

कम खर्च में पशुशाला को ठंडा कैसे रखें

गांवों में सीमित संसाधनों के बावजूद कुछ सरल उपाय अपनाकर पशुशाला का तापमान कम किया जा सकता है। टिन की छत पर घास या बोरी बिछाने से धूप की गर्मी कम अंदर आती है। बांस और तिरपाल से अस्थायी छाया बनाई जा सकती है। पशुशाला के आसपास पेड़ लगाना भी लंबे समय में बहुत प्रभावी उपाय साबित होता है। कई किसान गर्मी के दिनों में पशुशाला के फर्श पर हल्का पानी छिड़कते हैं, जिससे वातावरण कुछ ठंडा बना रहता है।

ध्यान देने वाली बात

भैंसों में हीट स्ट्रेस का असर अक्सर गायों की तुलना में जल्दी दिखाई देता है, क्योंकि उनकी त्वचा पर पसीने की ग्रंथियाँ कम होती हैं। इसलिए गर्मी के मौसम में उन्हें पानी या कीचड़ में बैठने की सुविधा मिलना विशेष रूप से आवश्यक होता है।

कटाई के बाद असली परीक्षा: फसल बीमा पर किसानों का भरोसा क्यों डगमगाता है

रफ्तार || संवाददता

किसान जब फसल बोता है तो उसके साथ उम्मीद भी बोता है – मौसम साथ देगा, बाजार ठीक रहेगा और मेहनत रंग लाएगी। लेकिन खेती हमेशा अनुमान के मुताबिक नहीं चलती। ओलावृष्टि, सूखा, बेमौसम बारिश या कीट - कई बार पूरी मेहनत कुछ ही घंटों में मिट्टी में मिल जाती है। ऐसे समय फसल बीमा को किसान की सुरक्षा कवच माना जाता है। पर असली सवाल यह है कि जब नुकसान हो जाता है, तब यह कवच कितना मजबूत साबित होता है?

खेत से कागज तक की यात्रा : फसल बीमा का विचार सीधा है - यदि प्राकृतिक आपदा से फसल को नुकसान होता है, तो किसान को आर्थिक सहायता मिले। भारत में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) जैसे कार्यक्रम इसी उद्देश्य से शुरू किए गए थे। लेकिन व्यवहार में यह प्रक्रिया खेत से ज्यादा कागज और प्रक्रिया की दुनिया में अटक जाती है। मान लीजिए किसी किसान की गेहूं की फसल मार्च के अंत में ओलावृष्टि से खराब हो गई। खेत में नुकसान साफ दिखाई देता है। लेकिन बीमा के लिए यह पर्याप्त नहीं होता। किसान को पहले नुकसान की सूचना देनी होती है, फिर सर्वे होता है, फिर आकलन होता है, और अंत में दावा तय होता है।

सर्वे और आकलन की चुनौती

बीमा दावों का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है नुकसान का आकलन। अक्सर यह आकलन पूरे क्षेत्र के आधार पर किया जाता है, न कि हर किसान के खेत के आधार पर। इसे क्षेत्रीय उपज पद्धति कहा जाता है। इसका मतलब यह है कि अगर किसी क्षेत्र में औसत उत्पादन तय सीमा से नीचे जाता है तभी किसानों को बीमा भुगतान मिलता है। लेकिन कई बार ऐसा होता है कि किसी किसान के खेत में भारी नुकसान होता है, जबकि आसपास के खेतों में फसल अपेक्षाकृत ठीक रहती है। ऐसे मामलों में किसान को मुआवजा नहीं मिल पाता। यही कारण है कि कई किसान इस व्यवस्था को व्यक्तिगत नुकसान के बजाय सामूहिक औसत पर आधारित मानते हैं।

दावा प्रक्रिया: सिद्धांत और वास्तविकता

सैद्धांतिक रूप से फसल बीमा का दावा करने की प्रक्रिया स्पष्ट है। किसान को नुकसान की सूचना निर्धारित समय सीमा के भीतर देनी होती है। इसके बाद स्थानीय प्रशासन और बीमा कंपनी के प्रतिनिधि खेत का सर्वे करते हैं। नुकसान का आकलन होने के बाद मुआवजा तय किया जाता है और राशि किसान के खाते में भेज दी जाती है। लेकिन व्यवहार में यह प्रक्रिया अक्सर लंबी और जटिल साबित होती है। कई बार किसानों को यह तक पता नहीं होता कि नुकसान की सूचना कैसे और कहाँ दर्ज करनी है। कई जगह मोबाइल ऐप या ऑनलाइन पोर्टल का उपयोग जरूरी होता है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता और नेटवर्क की सीमाएँ इस प्रक्रिया को और कठिन बना देती हैं।

यहीं से शुरू होती है असली परीक्षा

देरी: सबसे बड़ी समस्या

फसल बीमा को लेकर किसानों की सबसे बड़ी शिकायत अक्सर भुगतान में देरी को लेकर होती है। बीमा योजना का उद्देश्य यह था कि नुकसान के बाद किसान को जल्द आर्थिक सहायता मिले ताकि वह अगली फसल के लिए तैयारी कर सके। लेकिन कई मामलों में दावा निपटाने में महीनों लग जाते हैं। कभी सर्वे में देरी होती है, कभी डेटा संग्रह में, तो कभी बीमा कंपनी और राज्य सरकार के बीच वित्तीय समन्वय में। इस देरी का असर केवल कागजों तक सीमित नहीं रहता-यह किसान की पूरी कृषि योजना को प्रभावित करता है। जब तक मुआवजा मिलता है, तब तक किसान अगली फसल के लिए कर्ज ले चुका होता है।

भारत में फसल बीमा की तस्वीर

- भारत में करोड़ों किसान फसल बीमा योजनाओं से जुड़े हैं
- प्रमुख योजना: प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)
- किसान प्रीमियम: सामान्यत: 1.5% से 5% तक
- बाकी प्रीमियम केंद्र और राज्य सरकार मिलकर देते हैं
- उद्देश्य: प्राकृतिक आपदाओं से किसानों की आय की सुरक्षा

फसल बीमा दावा कैसे किया जाता है

1. नुकसान की सूचना निर्धारित समय में देना
2. स्थानीय प्रशासन या बीमा कंपनी द्वारा सर्वे
3. क्षेत्रीय उपज या व्यक्तिगत नुकसान का आकलन
4. दावा स्वीकृति
5. मुआवजा सीधे बैंक खाते में

बीमा का असली उद्देश्य

फसल बीमा का उद्देश्य केवल नुकसान की भरपाई करना नहीं है। इसका बड़ा उद्देश्य कृषि को जोखिम से सुरक्षित बनाना है। कृषि पहले से ही मौसम, बाजार और प्राकृतिक आपदाओं के जोखिम से घिरी हुई है। यदि किसानों को यह भरोसा हो कि नुकसान की स्थिति में उन्हें सुरक्षा मिलेगी, तो वे नई तकनीकों और बेहतर निवेश के लिए भी तैयार होंगे। लेकिन यदि बीमा प्रणाली पर भरोसा कमजोर हो जाए तो यह सुरक्षा कवच अपना महत्व खो देता है।

आगे का रास्ता

कृषि विशेषज्ञ मानते हैं कि फसल बीमा को प्रभावी बनाने के लिए तीन चीजें सबसे जरूरी हैं - पहली, दावा प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाना। दूसरी, नुकसान का आकलन अधिक सटीक और खेत-स्तर पर करना। तीसरी, भुगतान को समयबद्ध बनाना ताकि किसान को वास्तविक राहत मिल सके। इसके साथ ही किसानों को योजना की शर्तों और प्रक्रियाओं के बारे में बेहतर जानकारी देना भी जरूरी है।

भरोसे की कमी क्यों?

फसल बीमा योजनाओं के बावजूद कई किसान इस प्रणाली पर पूरा भरोसा नहीं कर पाते। इसके पीछे कई कारण हैं। पहला कारण है जानकारी की कमी। बहुत से किसानों को यह स्पष्ट नहीं होता कि बीमा किन स्थितियों में लागू होता है और किन परिस्थितियों में नहीं। दूसरा कारण है दावा प्रक्रिया की जटिलता। आवेदन से लेकर भुगतान तक की पूरी प्रक्रिया कई स्तरों से गुजरती है। तीसरा कारण है भुगतान में देरी। जब किसान को नुकसान के महीनों बाद पैसा मिलता है, तो बीमा की उपयोगिता पर सवाल उठने लगते हैं।

एक ही जमीन, तीन रणनीतियाँ और तीन बिल्कुल अलग नतीजे

एक ही खेत, एक ही मिट्टी और एक ही मौसम - लेकिन तीन अलग फैसले। खेती में कई बार फर्क मेहनत का नहीं, बल्कि रणनीति का होता है। अगर किसान एक ही जमीन पर अलग-अलग तरीके अपनाएँ तो क्या परिणाम भी अलग होंगे? इस सवाल को समझने के लिए हमने एक काल्पनिक लेकिन वास्तविक परिस्थितियों पर आधारित प्रयोग की कल्पना की - एक खेत, तीन किसान और तीन अलग फैसले। मान लीजिए उत्तर भारत के किसी गाँव का पाँच एकड़ का खेत है। मार्च का महीना है। रबी की फसल लगभग कट चुकी है और किसान अब अगले मौसम की तैयारी में जुटे हैं। मिट्टी मध्यम उपजाऊ है, सिंचाई सीमित है और बाजार तक पहुंच ठीक-ठाक है। अब सोचिए-अगर यही खेत तीन अलग किसानों को दे दिया जाए और वे तीन अलग रणनीतियाँ अपनाएँ, तो क्या होगा? यही प्रयोग हमें खेती की सबसे महत्वपूर्ण सच्चाई समझाता है-खेती केवल उत्पादन का खेल नहीं है, बल्कि निर्णयों का भी खेल है।

तीन रणनीतियाँ – संभावित तुलना

रणनीति	लागत	उत्पादन	जोखिम
पारंपरिक उच्च-इनपुट खेती	अधिक	अधिक	बाजार पर निर्भर
मिश्रित खेती	मध्यम	संतुलित	जोखिम कम
प्राकृतिक / कम लागत खेती	कम	शुरुआत में कम	बाजार पर निर्भर

पहला रास्ता: पारंपरिक उच्च-इनपुट खेती

पहले किसान ने वही रास्ता चुना जो पिछले कई दशकों से खेती का मुख्य मॉडल रहा है। रबी की कटाई के तुरंत बाद खेत की जुताई की गई, मिट्टी को तैयार किया गया और खरीफ के लिए धान की तैयारी शुरू कर दी गई। इस रणनीति का उद्देश्य साफ था—अधिकतम उत्पादन। बेहतर किस्म के बीज, पर्याप्त रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक और सिंचाई के साथ खेत में अच्छी फसल तैयार हुई। कटाई के समय उत्पादन संतोषजनक रहा। लेकिन जब किसान ने अपनी लागत का हिसाब लगाया तो तस्वीर थोड़ी बदल गई। डीज़ल, उर्वरक, मजदूरी और सिंचाई का खर्च मिलाकर कुल लागत काफी बढ़ चुकी थी। अगर बाजार में कीमत अच्छी मिलती तो यह मॉडल बहुत लाभकारी साबित हो सकता था। लेकिन कीमत थोड़ी भी गिर जाए तो लाभ तुरंत कम हो जाता है। यह मॉडल अभी भी भारत के अधिकांश किसानों द्वारा अपनाया जाता है-उच्च उत्पादन, लेकिन उच्च लागत के साथ।

तीन रास्ते, तीन नतीजे

तीनों किसानों के अनुभव यह दिखाते हैं कि खेती में केवल उत्पादन ही सबसे महत्वपूर्ण कारक नहीं होता। लागत, जोखिम और बाजार की स्थिति भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पहले किसान ने अधिक उत्पादन हासिल किया, लेकिन लागत भी अधिक रही। दूसरे किसान ने जोखिम को संतुलित किया और आय के कई स्रोत बनाए। तीसरे किसान ने लागत कम की और बाजार आधारित लाभ की संभावना पर भरोसा किया।

दूसरा रास्ता
मिश्रित और संतुलित खेती

रफ्तार || संवाददता

दूसरे किसान ने थोड़ा अलग रास्ता चुना। उसने रबी की कटाई के बाद खेत को तुरंत मुख्य फसल के लिए तैयार करने की बजाय बीच में एक दलहनी फसल लगाई। इसका उद्देश्य दोहरा था - मिट्टी की उर्वरता बढ़ाना और खेत को कुछ समय का जैविक आराम देना। दलहनी फसल के कारण मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ी और खेत की संरचना बेहतर हुई। इसके बाद खरीफ के मौसम में किसान ने केवल एक फसल पर निर्भर रहने की बजाय मिश्रित खेती अपनाई। खेत के बड़े हिस्से में धान लगाया गया, लेकिन कुछ हिस्से में स जियाँ और चारा फसल भी उगाई गई। इस रणनीति का फायदा यह हुआ कि किसान को केवल एक फसल के बाजार पर निर्भर नहीं रहना पड़ा। अगर धान की कीमत कम भी रही तो स जियों और चारे से अतिरिक्त आय मिल गई। हालांकि कुल उत्पादन पहले किसान जितना नहीं था, लेकिन लागत कम होने और आय के कई स्रोत होने के कारण कुल लाभ संतुलित रहा। यह मॉडल उन किसानों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है जो जोखिम को कम करना चाहते हैं।

तीसरा रास्ता: कम लागत और प्राकृतिक प्रयोग

तीसरे किसान ने सबसे अलग निर्णय लिया। उसने खेती में रासायनिक इनपुट पर निर्भरता कम करने का फैसला किया और प्राकृतिक तरीकों का प्रयोग शुरू किया। रबी के बाद खेत में हरी खाद उगाई गई और बाद में उसे मिट्टी में मिला दिया गया। इससे मिट्टी में जैविक पदार्थ बढ़ा और मिट्टी की संरचना सुधरी। खरीफ में कम लागत वाली फसल लगाई गई और जैविक घोलों का उपयोग किया गया। शुरुआती चरण में उत्पादन थोड़ा कम रहा, क्योंकि मिट्टी को नई प्रणाली के साथ संतुलन बनाने में समय लगा। लेकिन लागत काफी कम थी। कुछ महीनों बाद स्थानीय बाजार में जैविक उत्पादों के लिए बेहतर कीमत मिलने लगी। इससे किसान को उम्मीद से बेहतर लाभ मिला। हालांकि यह मॉडल अभी भी प्रयोग और बाजार पर निर्भरता की स्थिति में था।

खेती: केवल मेहनत नहीं, रणनीति भी

भारत में खेती अक्सर मेहनत और मौसम के संदर्भ में चर्चा का विषय बनती है। लेकिन बदलती कृषि अर्थव्यवस्था में रणनीति और प्रबंधन की भूमिका तेजी से बढ़ रही है। मिट्टी की स्थिति, पानी की उपलब्धता, बाजार तक पहुंच और जोखिम उठाने की क्षमता - ये सभी कारक तय करते हैं कि किसान के लिए कौन-सा मॉडल बेहतर रहेगा। एक ही जमीन पर अलग-अलग रणनीतियाँ अपनाने से पूरी तरह अलग परिणाम सामने आ सकते हैं। यही कारण है कि आज कृषि विशेषज्ञ खेती को केवल उत्पादन की गतिविधि नहीं, बल्कि प्रबंधन आधारित निर्णय प्रणाली के रूप में देखने लगे हैं।

RIMS
RAFTAAR INSTITUTE OF MEDIA STUDIES
RAFTAAR INSTITUTE OF MEDIA STUDIES
Admission Started for Crash/Vocational Course in Mass Communication
We Are Ready to Welcome You at Raftaar Institute of Media Studies
Be Ready to Join
Course
100% PLACEMENT ASSISTANCE
Anchor
Reporter
Scriptwriter
Video Editor
Cameraman
Helpline Number
6203592707, 9334722857
UTTAM NIWAS, HARMU HOUSING COLONY
RANCHI- 02, JHARKHAND

क्या हार्दिक पंड्या ने वानखेड़े के हर एक ग्राउंड स्टाफ को दिए 10-10 लाख रुपये?

भारत को टी20 वर्ल्ड कप 2026 जिताने में हार्दिक पंड्या का अहम रोल रहा. उन्होंने इस खिताबी जीत के बाद वानखेड़े स्टेडियम के ग्राउंड स्टाफ को इनाम दिया है, जिसे लेकर सोशल मीडिया पर उनकी जमकर तारीफ हो रही है. कुछ पोस्ट में यह कहा जा रहा है कि हार्दिक ने प्रत्येक को 10-10 लाख रुपये दिए हैं, जबकि कुछ में 10-10 हजार की बात कही गई है. आइए जानते हैं आखिर सच्चाई है क्या. हार्दिक पांड्या की दरियादिली ने एक बार फिर साबित कर दिया कि यह भारतीय ऑलराउंडर न सिर्फ एक बेहतरीन खिलाड़ी हैं, बल्कि एक शानदार इंसान भी हैं. दरअसल, हार्दिक ने वानखेड़े स्टेडियम के ग्राउंड्समैन के लिए एक दिल छू लेने वाला काम किया. T20 वर्ल्ड कप जीतने वाले इस ऑलराउंडर ने महीनों पहले किए गए अपने एक वादे को पूरा करते हुए तोहफे के रूप में उनकी आर्थिक मदद की. हालांकि, इसको लेकर सोशल मीडिया पर अलग-अलग दावे किए जा रहे हैं. कुछ पोस्ट में यह कहा जा रहा है कि हार्दिक ने हर एक ग्राउंड स्टाफ को 10-10 लाख के चेक दिए, जबकि कुछ में यह दावा किया गया कि 10-10 हजार रुपये उन्होंने प्रत्येक को दिए हैं. चलिए जानते हैं कि सच्चाई है क्या. बता दें कि मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक ने T20 वर्ल्ड कप 2026 के लिए वानखेड़े स्टेडियम में कई दिन ट्रेनिंग की थी. वह देर रात तक भी इस मैदान पर ट्रेनिंग करते थे, जिसमे ग्राउंड स्टाफ ने अहम रोल अदा किया. ग्राउंड्समैन ने यह सुनिश्चित किया कि हार्दिक को किसी तरह की दिक्कत न हो और बिना किसी रुकावट के उन्हें स्टेडियम में आने-जाने की सुविधा और जरूरी मदद मिलती रहे. हार्दिक ने उस समय वादा किया था कि वह उनकी इस मदद के लिए इनाम जरूर देंगे.

वैभव सूर्यवंशी मीडिया से दूर रहें, बल्लेबाजी पर ध्यान दें...

कप्तान ने आईपीएल के पहले दी हिदायत

युवा विस्फोटक ओपनर वैभव सूर्यवंशी पर रहने वाली है. उन्होंने पिछले सीजन में डेब्यू किया था और गुजरात टाइटंस के खिलाफ तूफानी सेंचुरी जमाकर खास रिकॉर्ड बनाया था. टीम के कप्तान रियान पराग ने कहा है कि वह चाहते हैं वैभव बल्लेबाजी पर ध्यान दें और मीडिया से दूर रहे.

राजस्थान रॉयल्स के कप्तान रियान पराग ने इस आईपीएल सीजन में युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी की मीडिया से बातचीत को सीमित रखने का फैसला किया है. उन्होंने 14 साल के खिलाड़ी से कहा है कि वह सिर्फ अपनी बल्लेबाजी पर ध्यान दें. फ्रेंचाइजी 30 मार्च को गुवाहाटी में चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ अपना अभियान शुरू करने जा रही है. आईपीएल में शानदार डेब्यू सीजन के बाद सभी की नजरें सूर्यवंशी पर हैं. पराग चाहते हैं कि युवा खिलाड़ी को टूर्नामेंट में सबसे चर्चित खिलाड़ियों में से एक होने का दबाव महसूस न हो. पराग ने पत्रकारों से कहा, "इस साल स्वाभाविक रूप से हाइप और दबाव रहेगा. कप्तान के तौर पर मैं उसे कहूंगा कि यशस्वी जायसवाल पर दबाव छोड़ दे. वैभव का रोल सिर्फ मैदान पर जाकर हिट करना है, चिंता करने की जरूरत नहीं है. कप्तान के तौर पर मैं उसे कहूंगा कि ज्यादा प्रेस कॉन्फ्रेंस न करें, मीडिया से ज्यादा बातचीत न करें, बस खेल का मजा लें." वैभव सूर्यवंशी अगले हफ्ते 15 साल के हो जाएंगे. उन्होंने पिछले सीजन आईपीएल में धमाकेदार शुरुआत की थी. उन्होंने पहली ही गेंद पर छक्का लगाते हुए टूर्नामेंट की शुरुआत की थी. इसके बाद गुजरात टाइटंस के खिलाफ 35 गेंद में शतक जड़ दिया. अपनी फॉर्म को अंडर-19 वर्ल्ड कप में भी बरकरार रखा और फाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ 80 गेंद में 175 रन बनाए और टूर्नामेंट में रिकॉर्ड 30 छक्के लगाकर भारत को ट्रॉफी दिलाई. सभी को भरोसा नहीं है कि यह प्रदर्शन आगे भी जारी रहेगा. लक्ष्मीपति बालाजी ने स्टार स्पोर्ट्स पर कहा कि इस बार विरोधी टीमें बेहतर तैयारी के साथ आएंगी. बालाजी ने कहा, "दूसरा सीजन हमेशा मुश्किल होता है. विरोधी टीमें उनका अध्ययन कर चुकी हैं और प्रदर्शन बनाए रखना चुनौती होगा. उन्होंने यह भी कहा कि मेंटर कुमार संगकारा की गाइडेंस सूर्यवंशी को लगातार अच्छा प्रदर्शन करने में मदद करेगी. सूर्यवंशी ने अपनी नजरें आईपीएल इतिहास के सबसे बड़े व्यक्तिगत स्कोर पर हैं. उन्होंने बीसीसीआई के अवार्ड कार्यक्रम में कहा था कि वो क्रिस गेल के 175 रन का रिकॉर्ड तोड़ना चाहते हैं. राजस्थान की तरफ से खेलते हुए वैभव इस सीजन इस लक्ष्य को लेकर उतरेंगे.

एक्टर ने बताई फिल्म की सफलता की वजह, कंटेंट ड्रिवन मूवी पर दिया जोर...

फिल्म में कोई शॉर्टकट नहीं चलता 'धुरंधर 2'

आज के डिजिटल दौर में फिल्मों की सफलता सिर्फ बॉक्स ऑफिस कलेक्शन से नहीं आंकी जाती, बल्कि सोशल मीडिया पर उनकी मौजूदगी भी उतनी ही मायने रखती है. मीम्स, ट्रेंड्स और दर्शकों की प्रतिक्रियाएं अब यह तय करती हैं कि कोई फिल्म लोगों के दिलों तक पहुंची है या नहीं. इसी बदलाव के बीच 'धुरंधर: द रिवेंज' ने जबरदस्त प्रभाव छोड़ा है. एक ओर जहां फिल्म कमाई के नए आंकड़े छु रही है, वहीं दूसरी ओर इंटरनेट पर भी छाई हुई है. फिल्म के डायलॉग्स, किरदार और कई दमदार सीन सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे हैं. मीम्स के जरिए लोग इसे अपने-अपने अंदाज में पेश कर रहे हैं, जिससे फिल्म की लोकप्रियता और बढ़ गई है. इसी बीच फिल्म में 'आईबी' के 'डिप्टी डायरेक्टर' सुशांत बंसल का किरदार निभाने वाले मानव गोहिल ने इस ट्रेंड पर अपना रिएक्शन दिया है. धुरंधर पर बोले मानव गोहिल मानव गोहिल का मानना है कि 'धुरंधर' आज के सिनेमा के बदलते स्वरूप का उदाहरण है. उनके अनुसार, अब दर्शक पहले से कहीं ज्यादा समझदार हो गए हैं और वे सिर्फ बड़े बजट या स्टार पावर से प्रभावित नहीं होते. वे ऐसी फिल्मों को पसंद करते हैं, जिनमें दमदार कहानी और सच्चाई हो.

दूसरी ओर इंटरनेट पर भी छाई हुई है. फिल्म के डायलॉग्स, किरदार और कई दमदार सीन सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे हैं. मीम्स के जरिए लोग इसे अपने-अपने अंदाज में पेश कर रहे हैं, जिससे फिल्म की लोकप्रियता और बढ़ गई है.

'धुरंधर: द रिवेंज' सोशल मीडिया पर भी छाई

'धुरंधर: द रिवेंज' आज के दौर में बॉक्स ऑफिस के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी छाई हुई है, जहां इसके डायलॉग्स और सीन मीम्स के जरिए वायरल हो रहे हैं. मानव गोहिल के मुताबिक, यह फिल्म बदलते सिनेमा का उदाहरण है, जहां दर्शक अब मजबूत कहानी और सच्चे कंटेंट को प्राथमिकता देते हैं. उन्होंने कहा कि आज फिल्म की सफलता स्टार पावर नहीं, बल्कि उसकी गुणवत्ता तय करती है. सोशल मीडिया ट्रेंड्स को उन्होंने सकारात्मक संकेत बताते हुए कहा कि सिनेमा अब वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है और दर्शक ईमानदार कहानियां पसंद कर रहे हैं.

4 साल बेमिसाल

उत्तराखण्ड में समान नागरिक संहिता (UCC)

- राज्य में 27 जनवरी 2025 से लागू हुई UCC
- UCC लागू करने वाला स्वतंत्र भारत का पहला राज्य बना उत्तराखण्ड
- सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और समान अधिकारों की दिशा में उठाया गया साहसिक कदम

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड | @DIPR_UK | UttarakhandDIPR | www.uttarainformation.gov.in

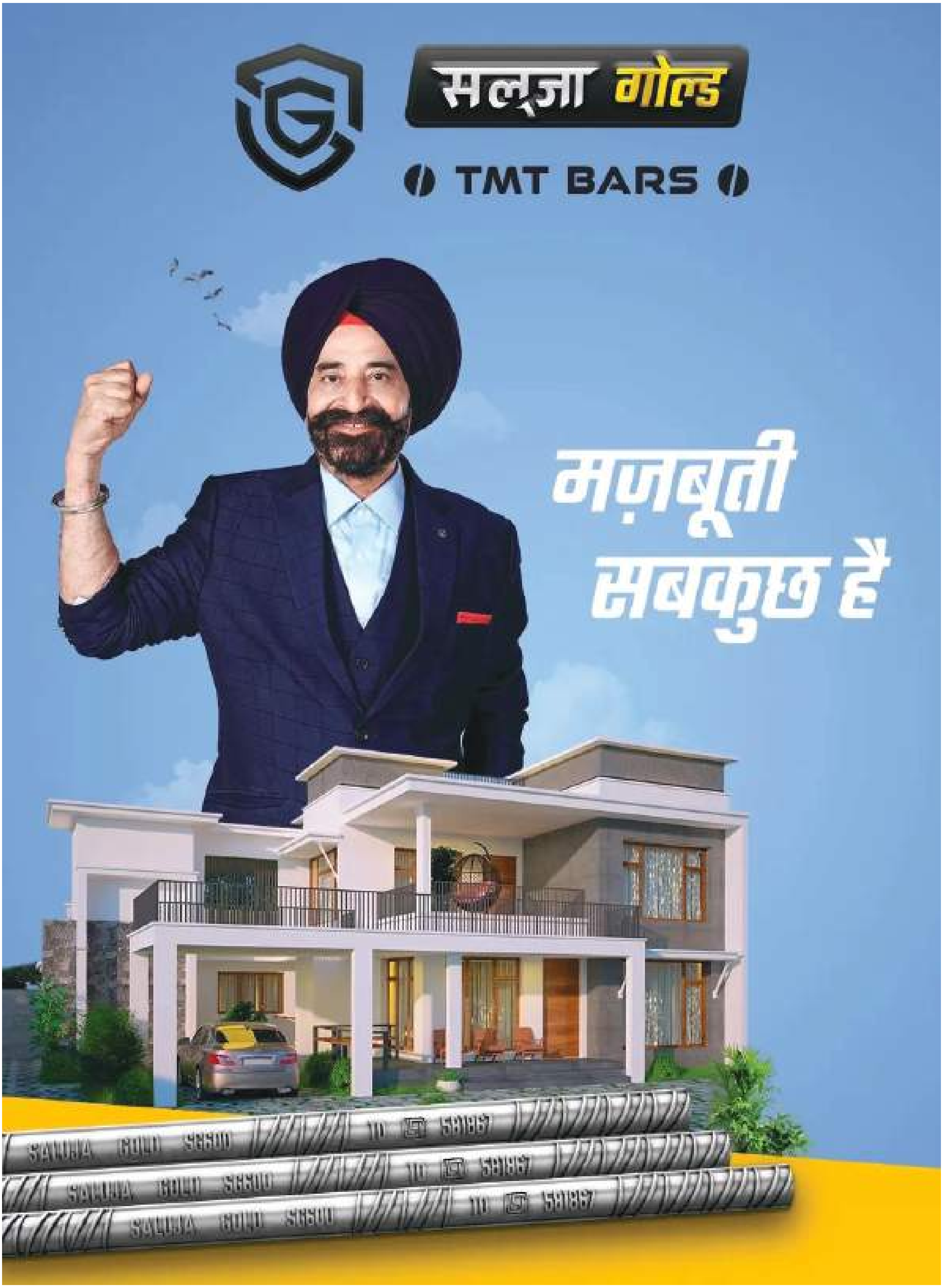
सलूजा गोल्ड
TMT BARS
मज़बूती
सबकुछ है